

प्रकाशक :

प्रकाशन-विभाग

कल्याणमल एण्ड सन्स

त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२

मूल्य : रु० ६.००

मुद्रक :

श्रजन्ता प्रिण्टर्स,

जयपुर

## प्रास्ताविक

अपभ्रंश अब न तो एक अनजानी भाषा है, और न उसका साहित्य अप्राप्य । गत चार दशकों की खोज से जो साहित्य प्रकाश में आया है, वह यह उजागर करने करने के लिए काफी है कि अपभ्रंश—एक जीवित लोक भाषा थी और यह कि उसका क्षेत्र, किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा से बड़ा था ।

अपभ्रंश का युग (ईसवी ७ से १२वीं तक) ऐतिहासिक संदर्भ में सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास और राजनीतिक विखराव का युग था । विखराव की यह प्रक्रिया भाषा के क्षेत्र में और भी तेज थी । अपभ्रंश कवि के सम्मुख दुहरा दायित्व था, एक तो उसे नये पुराने के बीच सेतु बनना था और दूसरे युगीन यथार्थ के संदर्भ में आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी थी । और यह अभी भी शोध की अपेक्षा रखता है कि वह अपने दायित्व के प्रति कितना सजग और सक्रिय रह सका ?

प्रस्तुत संकलन का अपना विशिष्ट संदर्भ और उद्देश्य है ? भारतीय विश्व-विद्यालयों में एम० ए० स्तर पर वैकल्पिक प्रश्न-पत्र के रूप में 'अपभ्रंश' का अध्ययन लोकप्रिय होता जा रहा है; यह इसलिए भी क्योंकि उसमें शोध के नए क्षितिज और दिशाएँ हैं; परन्तु प्रामाणिक और अधुनातन संकलन न होने से नए अव्येता को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है ? यह प्रयास इसी कठिनाई को हल करने की दिशा में एक प्रयास है ।

विषय को सरल बनाने के लिए समकालीन परिवेश टिप्पणियाँ और अवतरित अंशों के संदर्भ दे दिए गए हैं; चयन में यह सावधानी बरती गई है कि 'संदर्भित काव्य' की बहुरंगी भलक सामान्य पाठक को भी मिल जाये । पाठ्यक्रम की दृष्टि से पुस्तक कुछ बड़ी है; परन्तु संग्रह को बड़ा बनाने में दृष्टिकोण यह रहा है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी अपेक्षा और आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा सके; और कुछ समय बाद, दूसरे कवियों को भी पाठ्यक्रम में रखने के विकल्प की सुविधा रहे । अतिरिक्त इसके; सामान्य पाठक के, जो परीक्षार्थी नहीं हैं, उपयोग में आ सके ?

'पांडुलिपि' तैयार करने में जिस मनोयोग से सुश्री महेशी कपूर ने काम किया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ । साथ ही कल्याणमल एण्ड संस भी कम

धन्यवाद के अधिकारी नहीं कि जिन्होंने—सत्रीय प्रकाशनों की व्यस्तताओं के बावजूद अपेक्षित साज सज्जा के साथ 'पुस्तक' उपलब्ध कर दी ।

पिछले पीने दो दशकों से मैं आलोच्यकाव्य से सम्बद्ध हूँ; और यह सम्बद्धता यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त है कि पुस्तक निश्चय ही उनका अपनापन पायेगी जिनके लिए यह समर्पित है ।

देवेन्द्रकुमार

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग  
इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर

(१) ऐतिहासिक संदर्भ में 'अपभ्रंश' प्राचीन भारतीय आर्यभाषा की अंतिम कड़ी है; ऐसी कड़ी जो न केवल प्राचीन भारतीय आर्यभाषा को आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं और उनके साहित्य से जोड़ती है वरन् दक्षिणभारत की भाषाओं और उनके साहित्य को भी किसी हद तक जोड़ती है। अपभ्रंश और दक्षिणी भाषाओं का साहित्य-सर्जन समकालीन साहित्य-सर्जन है और अपभ्रंश में आर्यभाषा के शब्दों की तुलना में अपूर्व भाषाओं के शब्द कम नहीं हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य धारा के नैरन्तर्य और नानाप्रवाहों को समझने का सूत्र, सचमुच अपभ्रंश के हाथ में है।

(२) जहाँ तक अपभ्रंश के, एक भाषा रूप में विकसित होने का प्रश्न है; इसका उत्तर स्पष्ट है? अपभ्रंश के विकास में वही तत्व और प्रभाव काम करते हैं जो किसी दूसरी भाषा में कर सकते हैं। अपभ्रंश का सबसे बड़ा महत्व यह है कि आर्यभाषा एक से अनेक कैसे बनी—इसकी व्याख्या अपभ्रंश के माध्यम से सही अर्थ में की जा सकती है? व्याकरण की दृष्टि से भी अपभ्रंश का अपना एक व्यक्तित्व और आकृति है। उसका एक रूपात्मक अस्तित्व है। अभी तक के प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अपभ्रंश अपने मूल रूप में उत्तर-पश्चिम भारत की एक बोली थी; जिसे भरत मुनि ने 'आभीरोक्ति' कहा है और जिसकी प्रकृति थी 'उकारान्त' जैसे 'मोरउ नच्चन्तउ'—'नाचता हुआ मोर'। आभीरी अपभ्रंश कैसे बनी—इसकी कहानी लम्बी और उलझनभरी है। वैसे अपभ्रंश शब्द का प्रयोग पतञ्जलि ने अपने भाष्य में किया है, परन्तु वह संस्कृत से भिन्न शब्द के लिए है जैसे गौ के लिए—गावी, गौणी, गोपोतलिका इत्यादि। सबसे पहले संस्कृत साहित्यालोचक दंडी ने यह बताया कि बोलचाल की आभीरी साहित्यभाषा के रूप में न केवल अपभ्रंश कहलाती है, प्रत्युत उसकी अपनी साहित्यिक शैलियाँ हैं, जिनका उसने संस्कृत और प्राकृत साहित्य के साथ, उन्हींके समानान्तर उल्लेख किया है।

भरतमुनि और दंडी के बीच दो तीन सौ वर्षों का अन्तर तो सहज ही था। आभीरी को अपभ्रंश कहलाने में इतना समय लग जाना कोई बड़ी बात नहीं। प्रसिद्ध संस्कृत गद्यकार कवि वाराणभट्ट के समय 'अपभ्रंश' भाषा के नाम से जानी जाती थी। इसके 'हर्षचरित' में प्राकृत कवि वायुकुमार के साथ भाषा कवि ईशान का भी उल्लेख है। यहाँ भाषा का आशय अपभ्रंश से है; ईशान अपभ्रंश कवि थे इसमें सन्देह

इसलिए भी नहीं रह जाता क्योंकि पुष्पदंत ने महापुराण में उसका अपभ्रंश कवि के रूप में उल्लेख किया है “चौधुह सयम्भु सिरिहरिसु दोणु” एगलोइउ कइ ईसाणु वारण ।” ईसान वारणु का परम मित्र था। इससे स्पष्ट है कि सातवीं सदी के पूर्वार्ध में अपभ्रंश में कविता लिखी ही नहीं जाने लगी थी, परन्तु उसमें ईसान जैसे प्रसिद्ध कवि भी हो चुके थे। इस प्रकार मोटे तौर पर इसवी सातवीं सदी से १२वीं सदी तक अपभ्रंश काव्य का युग स्वीकारा जा सकता है। स्वयम्भूच्छंद के अवतरणों से भी यह तथ्य प्रमाणित है कि स्वयम्भू के बहुत पहले कई अपभ्रंश कवि हो चुके थे। इनमें प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के कवि सम्मिलित हैं।

(४) अपभ्रंश के युग की समाप्ति १२वीं इसवीं सदी तक मानना उचित और तर्कसंगत है, यद्यपि अपभ्रंश में, इसके बाद (१६वीं-१७वीं तक) काव्य रचना होती रही। १२वीं के बाद वस्तुतः अवहट्ट और आधुनिक बोलियों के साहित्य का युग है; राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इस युग का प्रतिनिधित्व नई बोलियों का साहित्य करता है न कि अपभ्रंश का! राजनीतिक संदर्भ में यह भारतीय इतिहास का राजपूत युग है: जिस प्रकार आर्य और आर्येतर प्रजाओं के संगम में संस्कृत परिष्कृत होकर अभिव्यक्ति का माध्यम बनी; बुद्ध और महावीर की क्रांति से पालि और प्राकृतों को मान्यता मिली उसी प्रकार; हर्षोत्तरकालीन राजनीतिक उदयपुथल में अपभ्रंश महत्व पा गई। सुदीर्घ शासन (६०६ से ६४८) करने के बाद सम्राट हर्ष का जब निधन हुआ तो देश टुकड़ों में बँट गया। अगले सौ वर्ष का समय अराजकता और राजनीतिक अस्थिरता का युग था। ६४६ से ८३६ इसवी तक, उत्तरी गंगा घाटी बाह्य आक्रमण और आन्तरिक संघर्ष की भूमि बनी रही। हर्ष के निधन के कोई सौ साल बाद भारत में तीन महाशक्तियाँ अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने में सफल हो सकी—(i) दक्षिणापथ के राष्ट्रकूट (ii) राजपूताने के मिहमाल या श्रीमाल के गुर्जर प्रतिहार (iii) पूर्वी भारत का प्रसिद्ध चाल वंश। महोदयश्री (कन्नौज) को हथियाने के लिए इनमें कठोर संघर्ष हुआ। अंत में प्रतिहारों ने उस पर कब्जा कर लिया। इस समय कन्नौज का वही महत्व था, जो मुगलकाल में दिल्ली का। उसके अतिरिक्त छोटी मोटी दूसरी राजनीतिक इकाइयाँ भी थी जैसे गुजरात के चालुक्य, अजमेर के चौहान, चेदि के शासक, महोदयान के चंदेल और परमार, इस काल की दूसरी अप्रत्याशित किन्तु महत्वपूर्ण घटना है अरब आक्रमण! ७११ ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम की चढ़ाई ने यह प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और ११७४ में जयचन्द के पतन के साथ समाप्त।

(५) आन्वीक्ष्य युग के राजा प्रायः लज्जक होते थे। मल्लगुप्त के मित्रा जगन्नाथपुत्रों में अहं करना उन्हें विशेष प्रिय था। कन्या घोर विद्या के प्रति अनुराग रखते थे। संसर्ग भावना उष्य थी, राजनीतिक शक्ति बढ़ाने के लिये वैवाहिक

सम्बन्धों पर विशेष जोर दिया जाता था। सामाजिक स्थिति में परिवर्तन तेजी से हो रहा था। ब्राह्मण और किसान सेना में भरती होते थे। उच्च कुल की स्त्रियाँ शासन में भाग लेती थीं। राजन्यवर्ग और साधारणवर्ग के रहन-सहन में काफी अन्तर था। ऊँची शिक्षा के प्रबन्ध के उदाहरण मिलते हैं, परन्तु ग्राम्य स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं है। व्यक्तिगत रूप से गांवों में पढ़ाई होती थी। दस्तकारी या अर्थकरी दूसरी विद्याएँ, बेटा बाप से ही सीखता था। पुरानी धर्म साधनाओं और देवी देवताओं की उपासना के साथ नये धार्मिक विचार भी विकसित हो रहे थे। इस नयी आस्तिक भक्ति चेतना का केन्द्र तमिल देश था। यह विचार चेतना शीघ्र सारे देश में फैल गयी। ऐसा लगता है कि साधनात्मक और वैराग्य प्रधावे आध्यात्मिक साधनाओं के विरुद्ध प्रवृत्तात्मक शिव या विष्णु भक्ति का प्रचार करना इनका उद्देश्य था। १०वीं सदी से आसपास ग्रंदार ने उनके गीतों का संकलन 'तैवारम' के नाम से किया जो तामिल शैव धर्म के लिए 'वेद' है।

(६) नयी भक्ति फैलने के अधोलिखित कारण थे—

(i) राज्याश्रय के कारण जनता में प्रचार

(ii) जनभाषा में गीतों की रचना

(iii) शिव विष्णु के लोकोत्तर व्यक्तित्व द्वारा जनता में विश्वास की भावना पैदा करना

(iv) सुन्दर रागों में गीतों को गाकर प्रचार करना।

संदर्भित युग में उत्तर भारत की तुलना में दक्षिणभारत में धार्मिक विचार-धाराओं का संघर्ष अधिक सक्रिय था। ये सारी विचारधाराएँ भारतीय थीं। विष्णुमत की अपेक्षा शैवमत अधिक सुगठित था। जैन धर्म और शैवमत में संघर्ष था। बौद्ध धर्म अवनति पर था। कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि ईसवी सदी ६३६ में अरब जहाज भारतीय समुद्र के किनारे पहुँचे। तब से अरब व्यापारियों का सम्बन्ध इस देश से रहा है; एक संदिग्ध धारणा यह भी है कि ईसाइयों का दक्षिण भारत में बसना इस समय तक प्रारम्भ हो गया था और इसलिए नई उठती हुई अद्वैतात्मक भक्ति, आत्मसमर्पण, सामाजिक समानता और गुरु की आवश्यकता पर जोर दिये जाने आदि बातों को उक्तधारणा मुस्लिम या ईसाई प्रभाव मानती है; परन्तु यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टि से गलत है।

साम्प्रदायिक मतभेद के बावजूद सहजिगुता का भाव था। मत-परिवर्तन वैवाहिक सम्बन्धों में बाधक नहीं था। धर्म की शक्ति बढ़ना न बढ़ना राज्य के आश्रय पर निर्भर करता था। यह युग मन्दिरों के ठाठ-वाट का युग था। आलोच्य युग के उत्तरार्ध में उग्र अध्यात्म, सिद्ध साधना हठयोग भक्ति आदि साधनाओं की

जड़ें जम चुकी थीं। दार्शनिक चिंतन और साहित्य-साधना की दृष्टि से यह युग स्वर्णयुग माना जा सकता है। संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के साथ द्रविड़ भाषाओं में भी साहित्य की रचना हुई। ८५० से १२०० तक तमिल भाषा का स्वर्णकाल था। उसके बाद कन्नड़ में साहित्य की रचना हुई। उसके बाद तेलुगु का तम्बर आता है। कुल मिलाकर देखें तो 'गीत और प्रबन्ध' काव्य इस युग की विशेषता है।

(७) अपभ्रंश साहित्य के प्रेरणा स्रोतों को देखना चाहिए उन कारणों में जो राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा में गिनाए हैं। इसमें संदेह नहीं कि अपनी प्रेरणा और उद्देश्य में अपभ्रंश साहित्य धार्मिक और पौराणिक है। फिर भी युग के शासकों के स्वभाव रूचि रीति नीति और धार्मिकवृत्ति आदि की भूलक उसमें देखी जा सकती है। इतिहास और साहित्य—इस तथ्य से सहमत हैं कि इस युग में धर्म आडम्बरपूर्ण था। धर्म राज्य से विस्तार चाहता था और राज्य धर्म से शक्ति। साधारणतया—अपभ्रंश साहित्य के दो युग हैं। पूर्व अपभ्रंश युग (स्वयम्भूत्तर); उत्तर अपभ्रंशयुग पुष्पदंत और उसके बाद। यह उल्लेख किया जा चुका है कि संस्कृत कवि बाण ने भाषा कवि ईसान का उल्लेख किया है जो अपभ्रंश कवि था। श्री राहुल सरहपाद को अपभ्रंश का आदि कवि मानते हैं। स्वयम्भू आठवीं और नवीं सदियों के मध्यविन्दु पर हुए। उनके स्वयम्भूच्छंद में इस बात के प्रमाण हैं कि उनके बहुत पहले अपभ्रंश में कविता होने लगी थी; स्वयम्भूच्छंद में चतुर्मुख भाउरदेव शुद्धशील जिनदास अज्जदेव धुत्त छइल्ल विअद्ध और गोइन्द। इतना ही नहीं विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें विभिन्नता है। इन अवतरणों में रामायण महाभारत रोमांस प्रकृतिचित्रण आदि से सम्बन्धित विषय है। अतः स्वयम्भू और सरहपाद क्रमशः प्रबन्ध और मुक्तक काव्यधारा के इसी अर्थ में आदि कवि हैं क्योंकि उनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं। गोइन्द ने राधाकृष्ण की प्रणयलीला पर अवश्य कोई काव्य लिखा होगा; स्वयम्भूच्छंद में उद्धृत 'सव गोविउ जइवि जोएइ' पद हेमचंद्राचार्य ने अपने व्याकरण में दिया है।

(६) विविधता के मान से अपभ्रंश साहित्य सीमित है। विधागत विशेषता

और खण्ड काव्य । जहाँ तक प्रबन्ध काव्य का सम्बन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक काव्यों से प्रारम्भ हुई । बहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी, पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की अपनी विशेषताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में अप्राकृत तत्व का संकोच, वस्तु विकास में यथा संभव धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता और संक्षिप्तता । चरित काव्य और कथा काव्य एक ही बात है—और इनकी सबसे बड़ी विशेषता है लौकिक और शास्त्रीय परम्परा का समन्वय । चरित काव्य की अपनी टेकनीक है; गीततत्व युक्त द्विपदी के आधार पर छंद की लयात्मक तुकान्त रचना; कड़वक की योजना, इसी टेकनीक के परिणाम हैं । वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शरवस्तियों कृष्णलीला स्वयम्बर और जल क्रीड़ा का वर्णन विशेष महत्व रखता है । रूप चित्रण में वे कवि वेगोड़ हैं, वह भी भाव के अनुरूप रूप चित्रण करने में । स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूब चित्रित करते हैं । प्रकृति चित्रण और अलंकार योजना भी इनमें मौलिकता को लिए हुए है । चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्रों का संग्रह ग्रन्थ है । इनमें काव्य और कथानक दोनों से संबंधित रुढ़ियाँ देखी जाती हैं । चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) और रोमांटिक काव्य । चरित काव्यों की एक विशेषता यह है इनके अन्तर्गत गीति तत्व भी है । राम और कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य की धाराएँ आलोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है ।

(६) खंड काव्य भी दो चार उपलब्ध हैं उदाहरण के लिए 'संदेश रासक' सुखान्त खण्डकाव्य है, कुछ आलोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे और अब कहते हैं कि वह क्षीणधर्मा प्रबन्धकाव्य है ? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम और प्रतिक्रिया अधिक है । मुक्तक काव्य की परिभाषा के बारे में अभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए ! परन्तु यह ठीक नहीं । मुक्तक का अर्थ है जो पूर्वापर संदर्भविहीन हो, वह अपने आप में मुक्त हो । अतः भावना के अतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय बन सकता है । संस्कृत आलोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है । अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं । गेयमुक्तकों से रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से अधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं । अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा अधिक लोकप्रिय रही हैं, इसके अतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक अपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं । यह कहा जा चुका है कि अपभ्रंश प्रबन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है । मुक्तक के रूप में दोहा काव्य बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है : जैसा कि पाठक देखेंगे कि यह आध्यात्मिक और लोक दोनों रूप में उपलब्ध है । गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा



और खण्ड काव्य । जहाँ तक प्रबन्ध काव्य का सम्बन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक काव्यों से प्रारम्भ हुई । बहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी, पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की अपनी विशेषताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में अप्राकृत तत्व का संकोच, वस्तु विकास में यथा संभव धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता और संक्षिप्तता । चरित काव्य और कथा काव्य एक ही बात है—और इनकी सबसे बड़ी विशेषता है लौकिक और शास्त्रीय परम्परा का समन्वय । चरित काव्य की अपनी टेकनीक है; गीततत्व युक्त द्विपदी के आधार पर छंद की लयात्मक तुकान्त रचना; कड़वक की योजना, इसी टेकनीक के परिणाम हैं । वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शवरवस्तियों कृष्णलीला स्वयम्बर और जल क्रीड़ा का वर्णन विशेष महत्व रखता है । रूप चित्रण में वे कवि वेजोड़ हैं, वह भी भाव के अनुरूप रूप चित्रण करने में । स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूब चित्रित करते हैं । प्रकृति चित्रण और अलंकार योजना भी इनमें मौलिकता को लिए हुए है । चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्रों का संग्रह ग्रन्थ है । इनमें काव्य और कथानक दोनों से संबंधित रुढ़ियाँ देखी जाती हैं । चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) और रोमांटिक काव्य । चरित काव्यों की एक विशेषता यह है इनके अन्तर्गत गीति तत्व भी है । राम और कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य की धाराएँ आलोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है ।

(६) खंड काव्य भी दो चार उपलब्ध हैं उदाहरण के लिए 'संदेश रासक' सुखान्त खण्डकाव्य है, कुछ आलोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे और अब कहते हैं कि वह क्षीणधर्मा प्रबन्धकाव्य है ? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम और प्रतिक्रिया अधिक है । मुक्तक काव्य की परिभाषा के बारे में अभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए ! परन्तु यह ठीक नहीं । मुक्तक का अर्थ है जो पूर्वापर संदर्भविहीन हो, वह अपने आप में मुक्त हो । अतः भावना के अतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय बन सकता है । संस्कृत आलोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है । अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं । गेयमुक्तकों से रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से अधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं । अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा अधिक लोकप्रिय रही हैं, इसके अतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक अपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं । यह कहा जा चुका है कि अपभ्रंश प्रबन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है । मुक्तक के रूप में दोहा काव्य बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है : जैसा कि पाठक देखेंगे कि यह आध्यात्मिक और लोक दोनों रूप में उपलब्ध है । गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा

(१६) आलोच्य साहित्य में समाज और मनुष्यता का जो चित्र आंकित है वह यथार्थ से अधिक दूर नहीं है। भारतीय जीवन का यह यथार्थ क्या है? यह यथार्थ है कि भारत में आध्यात्मिक विचारधाराओं में जितने परिवर्तन हुए, उतने समाज व्यवस्था और आर्थिक जीवन में नहीं। इसलिए आलोच्य साहित्य में युगीन समाज का जो चित्र आंकित है वह इतना रुढ़ है कि किसी भी युग के बारे में 'फिट' किया जा सकता है? उदाहरण के लिए अष्टादश कवियों ने कलियुग का जो चित्र खींचा है वह तुलसीदास के कलियुगीन चित्र से बहुत गुच्छ मिलता-जुलता है इसका कारण है कि मध्ययुग में भारतीय समाज के मूल्यों में जो ठहराव आ गया था, उसने अपनी सीमाएँ और अभिव्यक्तियाँ एकदम स्थिर कर ली थी। यथार्थवादीकोण से देखा जाय तो आलोच्य साहित्य में राजन्य वर्ग और ध्रष्ट वर्ग का बोलबाला है; दूसरा कोई वर्ग है, तो दरिद्र गरीब निम्न निम्नवर्गीय जनता—जो अपने ही पाप, कर्मों से अभिशप्त जीवन बिताने के लिए विवश है। संयुक्त परिवार के शीतयुद्ध, बहुपत्नी प्रथा, राजनैतिक युद्ध, कन्यापहरण स्त्रियों की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण इस साहित्य में है। समाज जाति उपजातियों और कुरीतियों में बँट फँस

चुका था। राज समाज—विशेष रीव दीव रखता था। जुग्रा और मल्लयुद्ध विशेष पसन्द किये जाते थे। हिंसक पूजाविधान भी थे। भक्ति का उदय हो रहा था तन्त्र मन्त्र की भी धाक थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चीजों में मिलावट उस युग में भी होती थी। दार्शनिक वैरविरोध भी अपने उग्रतम बिन्दु पर था। धर्म आडम्बरपूर्ण था, साधना से अधिक वह प्रदर्शन की वस्तु था। इस प्रकार, इस साहित्य की सबसे बड़ी देन यह है कि उसमें काव्य की शास्त्रीय और लौकिक परम्पराओं का निभाव है, पुरानी और नयी काव्य विधाओं के बीच एक सेतु है और यह कि उसने युग की चिन्ता, भाषा काव्य रूप और अन्य साधनाओं का, धूमिल पर तथ्यपूर्ण चित्र हमें दिया है। चाहे हम यह न जाने कि भारतीय साहित्य का उद्गम, आदर्श की किस गङ्गात्री या यथार्थ की चट्टान से हुआ, पर यह हम जानते हैं कि वह जो अपनी नाना धाराओं में बहता है, वह इसी अपभ्रंश के बराबर से।

---

## महाकवि पुष्पदंत

अपभ्रंश काव्य का सत्रसे निराला और प्रतिभासम्पन्न हस्ताक्षर । कश्यप-गोत्रीय ब्राह्मण । पिता केशवभट्ट और माँ मुग्धा देवी । शैव धर्म छोड़कर जैन धर्म में दीक्षित । एकान्तप्रेमी, उग्र और भावुक । पंडितों में विवाद है कि वह दक्षिण के थे या उत्तर के । प्राचीन कवियों के बारे में, इस प्रकार के विवाद अर्थहीन हैं । क्योंकि ये कवि किसी प्रांत के कवि नहीं थे, अपभ्रंश एक व्यापक काव्यभाषा थी, उसमें किसी भी प्रांत का कवि लिख सकता था यह कहना भी गलत है कि 'पुष्पदंत' के काव्य में द्रविड़ भाषा के शब्द नहीं हैं । अन्तः और बाह्य साक्ष्यों से यह सिद्ध है कि पुष्पदंत ईसा की दसवीं सदी में हुए और प्रसिद्ध राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण ३ के सम-कालीन थे । कृष्ण ने चोलराज पर विजय प्राप्त की थी । पुष्पदंत ने भी इसका उल्लेख किया है "तोड़ेपणु चोडहो तरणउ सीसु" ।

महापुराण और दूसरी कृतियाँ रचने की कहानी स्वयं कवि के शब्दों में यह है, "एक साँझ वह थका मादा 'मलखेड' (मान्यखेट) राष्ट्रकूट राज्य की राजधानी पहुँचता है (शक् सं० ८६६); वहाँ मन्त्री भरत से उसकी भेंट होती है, उसी के अनुरोध पर कवि पुराण रचना में लगता है । बीच-बीच में—उसका मन उदास हो उठता, परन्तु मन्त्री भरत उसे मना लेते ।" एक जगह कवि लिखता है कि पहले मैंने भैरव नामक शैव राजा की प्रशंसा की थी, उससे उत्पन्न मिथ्यात्व को धोने के लिए मैं इस काम में लगा । वह कहता है—लो भरत, तुम्हारी अम्यर्थता पर मैं जिनगुणों से भरित कविता करता हूँ; धन के लिए नहीं; केवल तुम्हारे अकारण स्नेह के कारण, जिनपद भक्ति से मेरा कवित्व वैसे ही फूट पड़ता है, जैसे आम के बीरों पर, मधुमास में कोयल कूक उठती है; कानन में भ्रमर गुँजने लगते हैं और शुक सुख से भर उठता है कवि सरस्वती की वंदना के संदर्भ में जो कुछ कहता है उससे उसकी काव्य सम्बन्धी मान्यताएँ जानी जा सकती हैं; भाषा प्रसन्न और गम्भीर; छंद और अलंकार काव्य की गति और शोभा हैं । कवि ने बार-बार अलंकृता और रसभरी कथा की उपमा दी है; वह काव्य में सबसे बड़ी वस्तु गहन-अनुभूति को मानता है ।

कवि का वरेलू नाम 'खण्ड' 'खण्डू जी' था । उनके साहित्यिक नाम थे अभिमानचिन्ह, कविकुलतिलक, सरस्वतीनिलय, काव्यपिसल्ल आदि । उनके व्यक्तित्व में विरोधी बातों का विचित्र सम्मिलन था । एक ओर वह अपने को कुक्षि मूर्ख कहते हैं और दूसरी ओर ताव में आकर सरस्वती को यह चुनौती भी देते हैं कि वह जायगी कहाँ ? अपनी इस विरोधी प्रकृति के कारण, उन्होंने विरोधाभास और श्लिष्ट शैली का अधिक प्रयोग किया है । उनके काव्य में श्लिष्ट सरल, समस्त व्यस्त, सभी प्रकार की शैलियाँ प्रयुक्त हैं; दर्शन और अनुभूति का सुन्दर समन्वय है । मात्रिक और वर्णिक छंदों का कृत्रिम भेद उन्होंने अपने काव्य में दूर कर दिया है । महापुराण, जसहर चरित, और राय कुमार चरित उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

## कवि धाहिल

‘पउम सिरि चरिउ’ के रचयिता श्री धाहिल—अपने को संस्कृत महाकवि नाथ का वंशज मानते हैं। वह श्रीमाल वंशीय गुजंर वैश्य थे। पिता का नाम पार्श्व और माता का महासती सुराइ। कवि के व्यक्तिगत जीवन की कुछ भी जानकारी नहीं मिलती। अनुमानतः वह १०वीं के आसपास हुए। ‘पउम सिरि चरिउ’ छोटी रचना होते हुए भी—धाहिल के कवि होने का अहसास ही नहीं कराती—वल्कि पाठक के अन्तर्मन पर एक छाप छोड़ती है। धाहिल ने प्रस्तावना में स्वीकार किया है कि महासती दुर्लभा की प्रेरणा से इस काव्य की रचना की गई। कवि की वर्णन-क्षमता, भाषाशक्ति और प्रकृति के रंग में मानवी भावनाओं के उतार-चढ़ाव को रंग देने में जो सफलता मिली है वह बहुत कम कवियों को मिल सकी है। ‘पउम सिरि चरिउ’ की रचना का केन्द्रीय उद्देश्य जैन कर्म सिद्धांत का परिपाक दिखाना है। कथावस्तु, सम्मिलित जैन परिवार से सम्बन्धित है शैली रम्य और रोचक है, कवि के शब्दों में : “मैंने ललित शब्दों में अर्थसार दिया है, और मेरा काव्य तच्छणी-जन को तरह बहुविकार वाला है।” कवि का महत्व यह नहीं है कि वह पारिवारिक समस्या का धार्मिक हल खोजने का प्रयास करता है; वरन्, यह है कि समस्या को रखते समय, वह मनुष्य स्वभाव का यथार्थवादी दृष्टि से चित्रण करता है। एक धनी परिवार में विधवा लड़की की स्थिति का, गृह कलह, धरेलू कूटनीति, और नारी की स्थिति का चित्रण करता है, तो दूसरी ओर, वियोगिनी पद्मश्री को वियोग व्यंजना में प्रकृति का तादात्म्य भी दिखाता है। धाहिल का नाम दिव्य दृष्टि उचित था। उसे मनुष्य की अन्तर्भावनाओं की अच्छी पकड़ थी। वह अपनी कथा को ‘कर्ण-रसायन’ धर्मकथा कहता है।

‘पउम सिरि चरिउ’ में पद्मश्री के दो-दो जन्मों की कहानी है, एक जन्म में वह जो द्रोती है, दूसरे जन्म में, वही करती है। पहले जन्म में वह धनश्री है और असमय में विधवा हो जाने पर अपने भाइयों के पास रहती है, वह घर की मालकिन है और कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है। वह सोचती है कहीं भाभियां मेरे खिलाफ भाइयों के कान न भर दें जिससे मेरे दान पुण्य पर अंकुश लग जाय। वह अपना रंग गाठना चाहती है। वारी वारी से दोनों भाभियों को क्रमशः शील पालने और चोरी न करने का ऐसा कपट-उपदेश देती है कि भाई समझते हैं कि उनकी पत्नियां ऐसी हैं; वे उन्हें पीटते हैं, बाद में धनश्री भाइयों से कहती है कि—“मैं तो उपदेश दे रही थी तुम सच मान बैठे।” वह उनका मेल करा देती है। इस प्रकार उसका रोव बढ़ता है। भाभियां उसकी गुलाम हैं। दूसरे जन्म में—वह पद्मश्री बनती है और न केवल पति वियोग उसे सहना पड़ता है; वरन् कुलीन और चोरी का कलंक भी, अन्त में तप कर मुक्ति प्राप्त करती है।

## अब्दुलरहमान (अब्दुलहमान)

‘संदेश रासक’ की उत्थानिका के अनुसार, वह, पश्चिम देश में ग्लेच्छ देश के मीरसेन नामक जुलाहा के घर के कुलकमल थे। यह प्राकृतकाव्य और गीत विषयों में विशेष प्रसिद्ध था। ग्लेच्छ देश से कवि का अभिप्राय, पश्चिमी भारत की किसी मुसलमान वस्ती से है क्योंकि उस समय तक मुसलमान सिंध पर कब्जा कर चुके थे। ऐतिहासिक तथ्यों के सन्दर्भ में, शहाबुद्दीन गोरी के अग्रदुत की पूर्व संध्या में इनका जन्म हुआ था। डॉ० हजारीप्रसाद का विचार है कि अब्दुल रहमान के पिता मीरसेन मुसलमानी धर्म ग्रंथीकार कर, पश्चिम से पूर्व भारत में चले आये थे; वही अब्दुल रहमान का जन्म हुआ। ऐसा उन्होंने ‘आरब्द पच्चाएसि अब्दुलहमान और मिच्छ’ शब्दों के अर्थ की खींचतान पर से किया है। द्विवेदी जी का विचार इसीलिए मान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि समूची रचना में पूर्वीपन कहीं भी नहीं है।

इसमें संदेह नहीं कि ‘संदेश रासक’ की रचना मध्यम श्रेणी के पाठक के लिए है, जो मुक्तक शृंगार को अधिक पसन्द करते थे। कवि की वर्णन पद्धति कहीं-कहीं शास्त्रीय है अतः उसे विशुद्ध लोक कवि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कवि रहमान का सबसे बड़ा महत्व यह है कि वह संधिकाल में जन्में, मुसलमान होकर भी अपभ्रंश में लिखने वाले वह प्रथम मुसलमान कवि हैं। उनकी काव्य रचना के माध्यम भारतीय हैं। उसमें साहित्यिकता और लौकिकता का सुन्दर मेल है। प्रकृति का उद्दीपक चित्रण है कुछ सूक्तियाँ भी हैं। उनका प्रेम सांसारिक और सम है।

‘संदेश रासक’—वस्तुतः एक सुखांत विप्रलंभ काव्य है। यह एक प्रतिक्रियात्मक काव्य है जिसमें विक्रमपुर की एक वियोगिनी, एक पथिक से अपने विरह के उद्गार व्यक्त करती है। पथिक से कहने का अर्थ यह है क्योंकि वह एक लेख पत्र लेकर, मुलतान से खंभायत जा रहा था। तीन प्रकाश के खंड काव्य में भी कथा की काव्य की रूढ़ियों का परिपालन है। संदेश कथन से अधिक उसमें प्रतिक्रिया अधिक है, बीच-बीच में वह उद्धरण भी देती है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—रासक होने से गेय समझते हैं (हिन्दी साहित्य)। ‘रासक’ नाम को लेकर हिन्दी आलोचकों के मन में इस प्रकार की विधा वाले काव्यों की जो आंत धारणा घर कर चुकी है, यह उसी का परिणाम है। अब्दुररहमान यदि पूर्व के होते, तो उनकी भाषा में कुछ पूर्वीपन होता। संदेश रासक का वातावरण भारतीय है, उसमें विदेशी प्रभाव कुछ भी नहीं है, उनकी अपभ्रंश पश्चिमी अपभ्रंश है। जिस रूप में ‘संदेश रासक’ है—उसमें उसका महत्व कम नहीं होता। वह एक ऐसे मुसलमान कवि की रचना है, जिसने हाल ही में धर्म परिवर्तन किया होगा, इसमें शुद्ध रोमांस है; लोकोक्तियों के साथ, ऊहात्मक उक्तियाँ भी हैं; प्रकृति चित्रण में जीवन के नित्य व्यापारों का समावेश है। पर है यह ‘पाठ्य काव्य’ ही।

## सरहपाद

‘सरहपाद’ नई भाषाओं और छंदों के युग के आदि कवि हैं, संत सिद्ध परम्परा के आदि सिद्ध होकर भी आध्यात्मिक तौर पर वह नई दिशा देने वाले हैं; उन्हें द्वितीय बौद्ध कहकर लोग अतिशयोक्ति से काम नहीं लेते ।” यह कथन है स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन का । इससे स्पष्ट है कि सरहपाद का व्यक्तित्व असाधारण व्यक्तित्व था । कहा जाता है कि पूर्वीप्रदेश के किसी राजा कसवे में एक ब्राह्मण परिवार में उन्होंने जन्म लिया । यह कहना कठिन है कि वह परिवार बौद्ध था या ब्राह्मण ।

सरहपाद स्पष्टतः जातिवाद और साम्प्रदायिक कट्टरता के घोर विरोधी थे । वह आठवीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रबल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे । सरहपाद के गुरु थे—हरिभद्र, जो प्रसिद्ध पालवंशी राजा धर्मपाल (७७०-८१३) के समकालीन थे । राजा धर्मपाल के अन्तिम समय शवरपाद के शिष्य लुईपाद के प्रमुख शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था । वह धर्मपाल का सचिव था और उन्हीं की अनुमति से उसने घर-बार छोड़ा था । इनसे सिद्ध है कि सरहपाद उससे दो पीढ़ी पहले चल बसे होंगे । इस प्रकार उनकी असाधारणप्रवृत्तियों का काल आठवीं सदी का उत्तरार्ध ठहरता है ।

सरहपाद, का पहला नाम राहुलभद्र था और तब वह नालंदा विश्वविद्यालय में थे; वज्रयान के प्रथम सिद्ध होने के कारण वह सरहपाद कहलाए । इनके पहले इस परम्परा में कई सिद्ध हो चुके थे परन्तु सरह ने सिद्ध विचाराधारा को एक नया मोड़ दिया । उनके समय नालंदा में—दूसरी धाराओं के साथ अशोक के समय की विनय परम्परा भी थी—जिसमें भिक्षु को स्त्री छूना वर्जित था, वह मद्यपान नहीं कर सकता था, शरीर पर चीवर पहनना पड़ता था ।” राहुल ने इसका खुला विद्रोह किया, उन्होंने एक शरकार की कन्या को रख लिया । वह, महाशूद्रा (शरकार कन्या) के साथ खुलेग्राम घूमते थे ।

सरहपाद ने ध्यान के साथ करुणा पर जोर दिया । करुणा के बिना ध्यान (शून्यता-योग) व्यर्थ है । उनकी अपभ्रंश रचनाओं को दोहा कोश या दोहागीति कहते हैं । उनकी प्रसिद्ध रचना ‘दोहा चर्या गीति’ में दोहों की अपेक्षा चौपाइयाँ अधिक हैं । सांकृत्यायन के अनुसार ‘दोहा कोश’ का उस समय अर्थ था ‘दो पंक्ति वाले छंदों की कविता ।’ ‘सात दोहा कोश—सिद्धचर्या और वज्रयानी योग का वेद माने जाते हैं । सरह की कविता में उलटवासियाँ और व्यंग्योक्तियाँ हैं । असाधारण प्रतिभा वाले इस महाकवि की कविता का संग्रह इनके शिष्यों ने किया । सरह मूलतः रहस्यवादी कवि हैं और उनके श्लिष्ट पदों में—आध्यात्मिकता के साथ कामुकता भी प्रकट होती है, बाद में इस प्रकार की कविता वामाचार में सहायक हुई । एक उदाहरण है :

# योगीन्द्र ( जोइन्दु )

शांत, उदार और विशुद्ध अध्यात्मवादी कवि थे । इन्होंने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा, जोइन्दु के समय के बारे में भी मतभेद है । कुछ विद्वान इन्हें ई० पू० सदी का मानते हैं जब कि कुछ ईसवी छठी सदी का और यह मानने का मुख्य कारण है जोइन्दु के एक दोहे 'काल लहेप्पिणु' का चंड के 'प्राकृत लक्षण' में उद्धृत होना । चूंकि चंड सातवीं के उत्तरार्ध में हुए—अतः जोइन्दु को इसके पूर्व होना चाहिए । परन्तु भाषा के विचार से जोइन्दू का समय, प्रस्तावित समय से बाद में होना चाहिए, जो भी हो अपभ्रंश के विशुद्ध अध्यात्मवादियों में जोइन्दु सबसे पुराने हैं; उनकी रचनाएँ उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्तियाँ हैं; एक विशुद्ध अध्यात्मवाद के एक छोर पर जोइन्दु हैं और दूसरे पर सरहपाद । जोइन्दु बाह्य आडम्बर के घोर विरोधी हैं, वह पारिभाषिक शब्दों का अध्यात्मपरक अर्थ करते हैं । "परमात्म प्रकाश" और "योगसार" इनके प्रामाणिक उपलब्ध ग्रन्थ हैं ।

## मुनि रामसिंह

जोइन्दु की परम्परा के हैं । यह भावुक और उग्र अध्यात्मवादी थे । इनका अनुमानित समय १०वीं और ११वीं के मध्य है । शैव धर्म और तांत्रिक पारिभाषिक शब्दों का इन्होंने खुलकर प्रयोग किया है । रूढ़ियों, धार्मिक आडम्बर और पाखंड के यह कटु आलोचक थे । अपभ्रंश साहित्य के कुछ समीक्षक इस धारा को जैन रहस्यवादी धारा कहते हैं । असल में भारतीय चिन्ताधारा के विकास के बारे में जो 'थीसिस' प्रस्तुत की जाती रही हैं, वे ही गलत हैं । वह एक ही चिन्ता का स्वाभाविक विकास न होकर नाना चिन्ता प्रतिचिन्ता की क्रिया-प्रतिक्रिया का परिणाम है । ऐसा समझा जाता है कि रामसिंह राजस्थानी थे परन्तु विशुद्ध अध्यात्मवादी कहीं के नहीं होते । विशुद्ध आध्यात्मवाद का एक रूप उपनिषदों में देखा जा सकता है, परन्तु उसमें चिंतन प्रबल है जबकि मध्ययुगीन अध्यात्मवाद में अनुभूति । 'पाहुड़ दोहा' का अर्थ है—'दोहों का उपहार' या दोहों में प्रतिपादित आध्यात्मिक विचार । इसमें शैलियाँ हैं उपदेश, अन्योक्ति और प्रतीक । और समग्र प्रतिपाद्य है अनुभूति के माध्यम से आत्मा का साक्षात्कार करना । हिन्दी के कुछ विद्वान 'आलोच्य युग' को अंतर्विरोधों का युग मानते हैं और कुछ दो विरोधी काव्य प्रवृत्तियों का । कुछ इसमें दो संस्कृतियों



के मिलन का युग मानते हैं। मेरे विचार में यह, दो व्यवस्थाओं या संस्कृतियों के संघर्ष का युग न होकर—दो दृष्टिकोणों के संघर्ष का प्रतीक काव्य है। यह संघर्ष किमी भी संस्कृति और किमी भी युग में सम्भव है। गुरु परवर्ती संतकाव्य साधना के संदर्भ में—विशुद्ध अध्यात्मवादियों का प्रदेय यह है कि उन्होंने आत्मोन्नतात्मक दृष्टिकोण दिया, परलोक की वजाय जीवन में मुक्ति की कल्पना की; आसक्ति से ऊपर उठने का घरफूंक तमाशा दिखाया, आत्मा-परमात्मा के मिलन के लिए प्रेमी प्रेयसी की कल्पना की, सम्प्रदायवाद और धार्मिक आटम्बरों का गुना विरोध किया।

## देवसेन

असली सबयधम्म दोहाकार कौन है ? यह निर्णय नहीं किया सकता। कुछ विद्वान इसका लेखक देवसेन को मानते हैं जब कि कुछ लक्ष्मीचन्द्र को। देवसेन—जैसा कि कृति के नाम से ही जाना जा सकता है कि श्रावक धर्म का उल्लेख करते हैं। वह धर्म के आचरण पक्ष के कवि हैं और धर्म का उद्देश्य, उनके लिए लौकिक समृद्धि और प्रेयता प्राप्त करना है। यही कारण है कि पुण्य और दान का बड़ा आकर्षक महत्व उन्होंने प्रतिपादित किया है।

# दोहा कोश-गीति

सिद्ध सरहपाद

सरह भणइ जग वाहिअ आलें ।  
णिअ सहाव ए लक्खिअ आलें ॥१॥

करुणा सहित भावना

अहवा करुणा केवल साहअ ।  
सो जमन्तरे मोक्ख ए पावअ ॥  
जइ पुण वेण्णवि जो जण साक्कअ ।  
एउ भव एउ णिव्वाणें थाक्कअ ॥२॥  
जइ पच्चक्ख कि भाणे कीअइ ।  
अहवा भाण अन्धार साधिअअ ॥  
सरह भणइ मइ कडिदअ राव ।  
सहज सहाउ एउ भावाभाव ॥३॥

चित्त

चित्तेक चित्त सअल वीअ भव-णिव्वाण जम्म विफुरंति ।  
तं चिन्तामणिरुअं पणमह इच्छाफलन्देइ ॥४॥  
वल्मइ कम्मएण जणो कम्मविमुक्केण होइ मणमुक्को ।  
मणमोक्खेण अणुअरं पाविज्जइ परम (णि) व्वाणें ॥५॥

१. सरह कहते हैं कि दुनिया झूठ में वह रही । मूर्ख अपना स्वभाव नहीं जानता ।
२. जो केवल करुणा की साधना करता है वह जन्मांतर में भी सुख नहीं पाता । जो जन दोनों को साध सकता है, वह न निर्वाण में थकता है, और न संसार में ।
३. यदि वह प्रत्यक्ष है तो ध्यान से क्या करिए ! अथवा ध्यानांधकार को साधिए । सरह कहते हैं मैं पुकार कर कहता हूँ कि सहज स्वभाव न भावरूप है न अभाव रूप ।
४. चित्त एक है, वह सबका कारण है; जन्म और निर्वाण दोनों उसमें चमकते हैं । इच्छाफल स्वरूप उसे नमन करो, व इच्छाफल देता है ।
५. कर्म से जन बंधता है, कर्ममुक्त होने पर, मन मुक्त होता है; और मन की मुक्ति से ही पाता है जन मोक्ष !

अक्षर बढ़ा सथल जगु, नाहि गिरवखर कोइ ।  
 ताव तावसे अक्षर घोलिअइ, जाव गिरवखर छोइ ॥६॥  
 बढ़ो धावइ दस दिमहिं, भुक्को गिच्छल टाअ ।  
 एमइ करछा पेक्ख सधि, विवरिअ महु पडिछाअ ॥७॥

## परमपद

इन्दी जत्थ विलीअ गउ, पाट्टो अप्प सदाय ।  
 सो हलें सहजानन्द तगु, कुइ पुच्छइ गुरु पाव ॥८॥  
 जहि म्मण मरइ, पवणदो तहि खअ जाइ ।  
 एहु सो परममहासुइ, सरइ कहिइउ जाइ ॥९॥  
 गिअ मण साच्चें सोहिअ जव्वें ।  
 गुरु-गुण हिअहिं म्पइसइ तव्वें ॥  
 एव मुणेवि गु सरहें गाइव ।  
 मन्त ए तन्त ए एकवि गाहिव ॥१०॥

## सइज महासुख

गुरु-वअण-अमिअ-रस, धवहिं ए पिविअउ जेहिं ।  
 बहु-सात्थात्थ-मरुत्थलिहिं, तिसिअ मरिच्चो तेहिं ॥११॥  
 जिम लोण विलिज्जइ पाणिएहिं, तिम जइ चित्तवि टाइ ।  
 अप्पा दीसइ परहिं सम, तत्थ समाहिए काइ ॥१२॥

- 
६. जग में अक्षर बढ़ा हुआ, निरक्षर कोई नहीं है; अक्षरों को तब मिटाइए जबकि निरक्षर न हो जाय ।
  ७. जहाँ इन्द्रिय विलीन है । आत्म स्वभाव नष्ट है, वहाँ शरीर में सहजानन्द है, उसे गुरु से पूछ लो ।
  ८. जहाँ मन भर जाता है, पवन भी नष्ट होता है; वही परम महासुख है; सरह यह कहता है ।
  १०. सच्चाई से अपने मन को शुद्ध करो । गुरु के गुणों को हृदय में प्रवेश दो । मन को ऐसा बना लो, सरह गाता है कि दूसरा मंत्र तंत्र कुछ भी नहीं है ।
  ११. गुरुवचन के अमृत रस को जिसने दौड़कर नहीं पिया, वह बहुत से शास्त्रार्थों के मरुस्थल में प्यासा ही मरा ।
  १२. जिस प्रकार नमक पानी में मिल जाता है, उसी प्रकार यदि चित्त मिल जाय तब आत्मा पर के समान दिखाई देने लगती है, फिर समाधि से क्या ?

## परमपद

जहि मण पवण ण संचरइ, रवि-ससि णाहिं पवेस ।  
 तहिं वढ़ चित्त विसाम करु, सरहें कहिअ उएस ॥१३॥  
 एक्क करु मा वेणिण करु, मा करु विणिण विसेस ।  
 एक्के रंगें रज्जिअ, तिहुअण सअलासेस ॥१४॥  
 अगें पच्छें दसदिसें, जं जं जोअमि सोवि ।  
 ऐव्वें तु दीठन्तडी, णाह ण पुच्छमि कोवि ॥१५॥  
 अप्पा परहिं ण मेलविउ, गमणागमण ण भागू ।  
 तुस कुट्टंते काल गउ, चाउल हत्थ ण लागू ॥१६॥

## शून्यता

सुण्णावि अप्पा सुण्ण जगु, घरें-घरें एहु अक्खाण ।  
 तरुअर-मूल ण जाणिआ, सरहे हिं किअ वक्खाण ॥१७॥  
 जइ रसाअलु पइसरहु, अह दुग्गमहु आआस ।  
 भिएणा आर मुण तुह, कह मोक्ख-दब्बासु ॥१८॥

## भोग में योग

चित्ताचित्त त्रि परिहरहु, तिम अच्छहु जिमवाल ।  
 गुरु-अण्णेंदिद भत्ति करु, होइहइ सहज उल्लाल ॥१९॥

१३. जहाँ मन और पवन का संचार नहीं, रवि चन्द्र का प्रवेश नहीं । मूर्ख वहाँ विश्राम कर । सरह ने यही उपदेश दिया है ।
१४. एक से लौ लगा, दो से नहीं; दो विशेष मत कर ।  
 एक ही रंग में रंगा है अशेष त्रिभुवन ।
१५. आगे पीछे दस दिशाओं में, जहाँ जहाँ देखता हूँ वही है; तुम्हें इस प्रकार देख लेने पर; अब मुझे किसी से नहीं पूछना ।
१६. अपना परायापन छोड़ा नहीं; आवागमन भी रोका नहीं;  
 तुस कूटते समय गया, चावल हाथ नहीं लगा ।
१७. आत्मा शून्य, जग भी सुना, घर-घर यही आख्यान है; तरुवर के मूल को जाना नहीं : सरह खुले आम यह कहता है ।
१८. यदि रसातल जाओ या दुर्गम आकाश में । तुम्हारा मन भिन्नाकार है मोक्ष किस प्रकार हो !
१९. चित्त अचित्त को भी छोड़ो, बालक की तरह रहो; गुरु के वचन में भक्ति करो सहज प्रकाश हो जायगा ।

जाव एण अप्पउ पर परिआणसि ।  
 ताव कि देहाणुत्तर पावसि ॥  
 एमइ कहिउ भान्ति ए भावा ।  
 अप्पउ अप्पा बुज्झहि तावा ॥२०॥  
 विसअ रमन्ते ए विसअहि लिप्पइ ।  
 उअल हरन्ते ए पासुच्छप्पइ ॥  
 एमइ जोइ मूल सगत्तो ।  
 विसअ ए बाज्झइ विसअरमन्तो ॥२१॥  
 पंडिअ सअल सत्थ वक्ख्खाणअ ।  
 देहहि बुद्ध वसन्त ए जाअण ॥  
 अमणागमण ए एक वि खाण्डिअ ।  
 तउ णिलज्ज भणइ हउं पाण्डिअ ॥२२॥

### सपज-अवस्था

जत्तइ चित्तहु विफुरइ, तत्तइ णाहु सरुअ ।  
 अएण तरंग कि अएण जलु, भव-सम ख-सम सरुअ ॥२३॥  
 ए तम वाएं गुरु कहइ, एउ तं बुज्झइ सीस ।  
 सहज सहावा हलें अमिअरस, कासु कहिज्जइ कीस ॥२४॥

- 
२०. जब तक नहीं जानते अपने पर को, तब तक क्या अनुत्तर देहा को पा सकता है ! ऐसा कहा गया है, इसमें भ्रान्ति नहीं; तब आत्मा आत्मा को पहचान लेता है ।  
 २१. विषय का भोग करता है विषयों में लिप्त नहीं होता; कमल तोड़ता परन्तु पानी को नहीं छूता; इस प्रकार योगी मूल का सगोत्री है; विषय में रमता हुआ भी, उसमें आसक्त नहीं होता ।  
 २२. पंडित सब शास्त्रों का व्याख्यान करता है परन्तु देह में बसते बुद्ध को नहीं जानता, इसी में आना जाना नहीं मिटा, फिर भी निर्लज्ज अपने को पंडित कहता है ।  
 २३. सहज-अवस्था—जब तक चित्त चमकता है तब तक स्वरूप नहीं जाना जा सकता; क्या तरंग अलग है और पानी अलग है; स्वरूप संसार और शून्य दोनों के समान है ।  
 २४. न उसे गुरु वचन से कहता है और न ही शिष्य उसे समझ सकता है । हे सखी ! सहज स्वभाव अमृत रस है, वह किससे कहा जाय ।

जत्तइ पइसइ जलेंहि जलु, तत्तइ समरसु होइ ।  
 दोस गुणाअर चित्तता, बढ पडिवक्ख ण होइ ॥२५॥  
 रिद्धि-सिद्धि हलें वेण्णि न काज्ज ।  
 पाप-पुण्ण तहिं पाडहु बाज्ज ॥  
 सो अ (१)गुत्तर बुद्धहिं जव्वें ।  
 सरह भणइ जग सिज्झइ तव्वें ॥२६॥

## ऐहिकतावादी कोण

एत्थु से सरसइ सोवणाह, एत्थु से गङ्गासाअरु ।  
 वाराणसि पत्राग एत्थु, से चान्द-दिवाअरु ॥२७॥  
 खेत्त पिट्ठ उअपिट्ठ, एत्थु मइ भमिअ समिट्ठउ ।  
 देहासरिस तित्थ, मइ सुणउ ण दिट्ठउ ॥२८॥  
 जग उपपाअणे दुक्ख बहु, उप्पण्णउ तहिं सुहसार ।  
 उप्पण उप्पाअ णहिं, लोअ ण जाणइ सार ॥२९॥  
 बुद्ध वि वअणें एत्तवि धम्म ।  
 लोआचारें एत्तवि कम्म ॥  
 सअल तत्त सहावें देक्खह ।  
 लोआचार जे तहिं उएक्खह ॥३०॥

- 
२५. जितना जल जल में समा जाता है, उतना ही समरस होना चाहिए; दोष और गुणों का आकर चित्त तब विपरीत नहीं होता ।
२६. हे सखी, ऋद्धि और सिद्धि दोनों से काम नहीं । पाप पुण्य पर वज्र पड़े । वही अनुत्तर को समझ सकता है और वही तब सिद्ध हो सकता है—ऐसा कहते हैं ।
२७. यही (देह) सरस्वती है, यही सोमनाथ है, यही है वह गंगासागर; यही है वाराणसी और प्रयाग, चन्द्रमा और सूरज ।
२८. यह क्षेत्र, पीठ उपठीठ, में समाधि पर भटका । देह के समान तीर्थ, न मने देखा और न मने सुना ।
२९. जग में उत्पन्न होने में बहुत दुःख है; उत्पन्न होने पर ही सुखसार हैं; उत्पन्न और उत्पाद कुछ नहीं है, दुनिया यह तत्व सार नहीं समझती ।
३०. शब्दों में बाँध लो यही धर्म है, लोकाचार में यही कर्म है; जो समस्त तत्वों को अपने स्वभाव में देखता हैं, तब वह लोकाचार की उपेक्षा करता है ।

पासों पास भमन्ते अच्छह ।  
 सरह भणअ तसु घरिणी रोच्छअ ॥  
 साढ् के खाद्धउ सअल जगु ।  
 सढ् का ए केणवि खाद्ध ॥३६॥

---



---

३६. पास पास रहते हुए घूमते हुए भी सरह कहते हैं, उस घरनी को नहीं चाहते ।  
 शंका ने ही सब जग खा लिया, शंका को कोई नहीं खा सका ।

मेल्लिवि सयला अवक्खडी, जिय, णिच्चित्तउ होइ ।  
 चित्तु णिवेसहि परम-पए, देउ णिरंजणु जोइ ॥७॥  
 जोइय, णिय-मणि णिम्मलए पर दीसइ संतु ।  
 अंवरि णिम्मलि घण-रहिए भाणु जि जेम फुरंतु ॥८॥  
 राए रंगिए हियवडए देउ ए दीसइ संतु ।  
 दप्पणि मइलए विबु जिम, ओहउ जाणि णिभंतु ॥९॥  
 जहिं भावइ तहिं जाइ, जिय, जं भावइ करि तं-जि ।  
 केम्बहि मोक्खु ए अत्थि पर, चित्तहं सुद्धि ए जं-जि ॥१०॥  
 सिद्धिहं केरा पंथडा, भाउ विसद्धउ एककु ।  
 जो तसु भावहं मुणि चत्तइ, सो किम होइ विमुक्कु ॥११॥  
 बुब्भइ सत्थइ, तउ चरइ, पर परमत्थु ए वेइ ।  
 ताव ए मुंचइ जाम एवि इहु परमत्थु मुणेइ ॥१२॥  
 चेल्ला-चेल्ली-पेत्थियहिं तूसइ महु णिभंतु ।  
 एयहिं लज्जइ णाणियउ वंधहं हेउ मुणंतु ॥१३॥  
 संता विसय जु परिहरइ, बलि किज्जउं हउं तासु ।  
 सो दइवेण जि मुंडियउ, सीसु खडिल्लउ जासु ॥१४॥  
 मोक्खु म चित्तिहिं? जोइया, मोक्खु न चित्तउ होइ ।  
 जेण णिवद्वउ जीवडउ, मोक्खु करेसइ सोइ ॥१५॥  
 'परमप्पयास'

णिम्मलु णिक्कलु सुद्ध जिणु विण्हु वुद्धु सिव संतु ।  
 सो परमप्पा जिण भणित, एहउ जाणि णिभंतु ॥१॥

- 
७. अवक्खडी—भ्रंशट । णिच्चित्तउ—निश्चित ।  
 ८. घण रहिए—घन रहित, अंवरि—आकाश में, फुरन्तु—चमकता है ।  
 १०. केम्बहि—किसी भी तरह, चित्तहं—चित्त की ।  
 ११. सिद्धहं केरा—सिद्धों का, विमुक्कु—विमुक्त ।  
 १२. सत्थइ—शास्त्रों को । वेइ—जानता है । (वेत्ति)  
 १३. तूसइ—संतुष्ट रहता है, एा णियउ—जानी, हेउ—हेतु, कारण ।  
 १४. संता—विद्यमान । बलि किज्जउं—बलिहारी करता हूं ।  
 १५. करेसइ—करेगा ।



सो परमत्मा सो जिहउ, सो हउ सो परमत्मा ।  
 हउ जाणेविणु, जोइया, अपणु म वरुह विणु ॥२॥  
 ज्ञान म भावहि, जिय, महु, गिण्मय अपण-महाउ ।  
 नाम म लब्धउ मिय ममणु, जहि भावइ नहि जाउ ॥३॥  
 पउ नउ मज्जु मीनु, जिय, म मज्जइ अपण-महु ।  
 ज्ञान म ज्ञानउ इहउ पम महुउ भाउ पविणु ॥४॥  
 नाम कृत्तव्यइ परिभमइ, धुत्तिम नाम करेइ ।  
 मुग्गु पसाण ज्ञान गवि, अपण देउ मुग्गेइ ॥५॥  
 पुण्णिं पावइ मय जिय, पावण मय-गिवाणु ।  
 वे छंडिवि अपण मुग्गु, तो लब्धउ मिय-यामु ॥६॥  
 देहा-देवलि देउ जिणु, जणु देवलिहि गिणु ।  
 हासउ महु पडिहाइ इहु, मिद्धं भिक्ख भमेइ ॥७॥  
 आउ गलइ, गवि मणु गलइ, गवि आत्माहु गलेइ ।  
 मोहु कुरइ, गवि अपण-हिउ, इम संमार भमेइ ॥८॥  
 जेहउ मणु विसयहं रमइ, निगु जइ अपण मुग्गेइ ।  
 जोइउ भणइ, हो जोइयहु, लहु गिण्वाणु लहेइ ॥९॥  
 धंभइ पडियउ सयल जगि, गवि अपण हु मुग्गंति ।  
 तहि कारणि ओ जीव फुलु, ग हु गिण्वाणु लहंति ॥१०॥  
 जह लोहम्मिय गियउ, बुद्ध, तह सुणंम्मिय जाणि ।  
 जे सुहु असुहु परिचयहि, ते-वि हवंति हु गणि ॥११॥

- 
२. सो जि हउं—वही मे हैं, जाणेविणु—जानकर, वियणु — विफल ।  
 ३. अपण सहाउ—आत्म स्वभाव, लब्ध—पाया जाता है ।  
 ४. वउ—ग्रत, तउ—तप ।  
 ५. धुत्तिम—धूर्तता, पसाएँ—प्रसाद से ।  
 ६. पुण्णिं—पुण्य से । छंडिवि —छोड़कर ।  
 ७. देहा-देवलि—देहरूपी मन्दिर, पडिहाइ—प्रतिभासित होता है, भिक्खं—भीख, भमेइ—भ्रमण करता है ।  
 ८. अपण हिउ—आत्महित, कुरइ—चमकता है ।  
 ९. विसयहं—विषयों मे । गिण्वाणु—निर्वाण ।  
 ११. लोहम्मिय—लोह मय, सुणम्मिय—स्वर्णमय, परिचयहि—छोड़ देते हैं ।

जं वड-मळ्ळइं बीउ फुडु, बीयहं वडु वि हु जाणु ।  
 तं देहहं देउ वि सुणहि, जो तइ-लोय-पहाणु ॥१२॥  
 जो जिण सो हउं, सो जि हउं, एहउ णिभंतु ।  
 मोक्खहं कारण जोइया, अप्पु ण तंतु ण मंतु ॥१३॥

---

१२. तइलोय—त्रिलोक ।

१३. णिभंत—निर्भान्त, तंतु मंतु—तंत्र मंत्र ।

## मुनि रामसिंह

गुरु दिण्यरु, गुरु हिम-किरण, गुरु दीवउ, गुरु देउ ।  
 अप्पा-परहं परंपरहं, जो दरिसावइ भेउ ॥१॥  
 उव्वलि चोप्पडि चिट्ठ करि, देहि सु-मिट्ठाहार ।  
 सयल वि देह गिरत्थ गय, जिह दुज्जणि उवयार ॥२॥  
 मणु मिलियउ परमेसरहो, परमेसरु जि मणस्स ।  
 विण्णि वि सम-रस हुइ रहिय, पुज्ज चडावउं कस्स ॥३॥  
 भितर-चित्ति वि मइलियइं, बाहिरि काइं तवेण ?  
 चित्ति गिरंजणु को-वि धरि, मुच्चहि जेम मलेण ॥४॥  
 हत्थ अहुट्ठहं देवली, बालहं णाहि पवेसु ।  
 संतु गिरंजणु तहिं वसइ, णिम्मलु होइ गवेसु ॥५॥  
 हउं सगुणी, पिउ णिग्गुणउ, णिल्लक्खणु णीसंगु ।  
 एककहिं अंगि वसंतयहं, सिलिउ ण अंगहिं अंगु ॥६॥  
 देह गलंतहं सवु गलइ, मइ सुइ धारणा धेउ ।  
 तहिं तेहइं, वढ, अवसरहिं विरत्ता सुमरहिं देउ ॥७॥  
 छह-दंसण-धंधय पडिय, मणहं ण फिट्ठिय भंति ।  
 एककु देउ छह भेउ किय, तेण ण सोक्खह जंति ॥८॥

मुनि रामसिंहः—२. उव्वलि— । चोप्पडि—चुपड़कर । चिट्ठकरि—बैठाकर ।

उवयार—उपकार ।

३. विण्णि—दोनों । पुज्ज—पूजा ।

४. भितर चित्ति—भीतर चित्त में ।

५. हत्थ अहुट्ठहं—साढ़े तीन हाथ का ।

७. मइ—बुद्धि । सुइ—श्रुति, शास्त्र । तेहइं—वैसे । अवसरहिं—अवसरों  
 वर । धेउ—ध्येय ।

८. छह दंसण-धंधय पडिय—६: दर्शनों के धंधे में पड़ा हुआ ।

पोत्था पढणिं मोक्खुं कहं मणु वि असुद्धउ जासु ।  
 बहु-यारउ लुब्धउ णवइ मूल द्विउ हरिणासु ॥६॥  
 तित्थइं नित्थ भमेइ, वढ, धोयउ चम्मु जलेण ।  
 एहु मणु किम धोअेसि तुहुं मइलउ पाव-मलेण ॥१०॥  
 अग्गइं पच्छइं दह-दिहहिं जहिं जोवउं त हं सोइ ।  
 ता महु फिट्ठिय भंतडी, अवसु ण पुच्छइ कोइ ॥११॥  
 जो पइं जोइउं, जोइया, तित्थइं तित्थ भमेइ ।  
 सिउ पइं सहुं हिंदिडियउ लहिवि ण सक्किउ, तोइ ॥१२॥  
 मढा जोवइ देवलइं, लोयहिं जाइं कियाइं ।  
 देह ण पिच्छइ अप्पणिय, जहिं सिउ संतु ठियाइं ॥१३॥  
 जइ लद्धउ माणिककडउ, जोइय, पुहुवि भमंत ।  
 बंधिज्जइ णिय-कप्पडइं जोइज्जइ एककंत ॥१४॥

## देवसेन

दुज्जण सुहियउ होउ जणि, सुयणु पयासिउ जेण ।  
 अमिउ विसैं, वासरु, तमिण, जिम मरगउ कच्चेण ॥१॥  
 इक्कु वि तारइ भव-जलहि बहु दायार सुपत्तु ।  
 सु-परोहणु एककु वि बहुय दीसइ पारहु णितु ॥२॥

- 
६. पोत्था पढणिं—पोथी पढ़के से । बहुयारउ—बवकार । लुब्धउ—  
 लुब्धक—शिकारी । मूलद्विउ—मूल स्थित । हरिणासु—हरिणों के ।  
 १०. तित्थइं तित्थ—तीर्थों से तीर्थ, मइलउ—मैला, भंतडी—भ्रान्ति ।  
 १२. पइं सहुं—तुम्हारे जैसा । हिंदिडियउ—धूमता फिरा । लहिवि ण सक्किउ—  
 पा नहीं सका ।  
 १३. मढा—मूर्ख, लोयहिं—लोगों ने जिन्हें बनाया, पिच्छ इ—पहचानता । अप्प-  
 णिय—अपनी । ठियाइं—स्थित हैं ।  
 १. सुहियउ—सुहित कल्याण । सुयणु—सुजन, सज्जन । अमिउ—अमृत । वासरु  
 दिन । मरगउ—मरकत । कच्चेन—कांच से ।  
 २. बहुदायार—बहु देने वाला, दाता । सु-परोहण—नाव ।

- 
५. पाणिपद—पाया जाता है, पाद—पाय, पदप्लुट—देती है, पद मुमई—मन भूता । पदच्छद—देती है, दुष्पु—दूष ।
६. जाणहि—यानों में, जंति—जाते हैं, पावें—पाप से, वहंति—ले जाते हैं, वहन करते हैं ।
७. बहु भरद्—बहुतों को तारता है, तदं—स्वयं, वटु—पट, बहुयहं—बहुतों को । छाया करह—छाया करता है, घम्मु—घाम ।
८. मोक्कलज—मुक्त, दुक्कलसाइं—सकड़ों दुःख, पुच्छिज्जइं काइं—पूछना क्या ?
९. काइं बहुत्तइं जंपियइं—बहुत कहने से क्या ?
१०. विणय-विवज्जहि—विनय से रहितों के । केम रहंति—कैसे रहते हैं ।

शरद्

सोदृढ सलिल सरिर्द्धि सयवर्त्तिदि ।  
विविध तरंग तरंगिणि जंतिदि ।  
जं ह्य हीय गिभि गव सरयद् ।  
तं पुण सोद् चडी एव सरयद् । १०॥

४. लोग, शरीर को कपूर और चन्दन से व्यर्थ चर्चित करते; क्योंकि विरहाग्नि तो प्रिय ही बुझा सकता है ?

वर्षा:—५. वगुले सरोवर छोड़कर तर शिखरों पर चढ़ गए; नाचते हुए मोर शिखरों पर बोल उठे; मंडक तालाबों में कठोर आवाज कर रहे हैं; आम्रवृक्षों पर कोयलें बोल रही हैं । ६. मच्छरों के डर से गायों का भुण्ड ऊंची टेकरी पर चढ़ गया है; गोपियाँ अपने पतियों के साथ सुन्दर गीत गा रही हैं; कदम्बों से हरीभरी धरती महक उठी है ? कामदेव अंग अंग को चूर कर रहा है । ७. नव मेघमालाओं से गुंफित आकाश और लाल लाल दिशा में इन्द्रधनुष का प्रसार ! और बहुटियों से अत्यन्त ढका हुआ पावस एकदम असह्य है ।

शरद्:—१०. समयस्तिही—शतपत्रों, कमलनियों से । वहती हुई नदी, विविध तरंगों से । शीष्म ने नवशरद् की जो शोभा, आहत कर छीन ली थी, वह नव शरद् पर फिर चढ़ गई ।

मंदि भुनग नरुण जोडकमहि,  
 महिनिय दिमि मलाडय अस्मिदि ॥१६॥  
 उमि मिमि केनि करहि मंभुन्निय,  
 मड पुण ग्यमि ममिय उडिन्निय ।  
 अचह्द नरि गरि गीउ खन्नउ.  
 इवहु समग्गु कट्ठ मः दिन्नउ ॥१७॥  
 कि नदि देमि गह्द कुरह जुन्ह गिमि गिममल चंदह,  
 अह कलउ न तुणानि हंस फल येवि रविदह ।  
 अह पायउ गह्द पडह कोइ सुनलिय पुण राइण,  
 अह पंचमु गह्द कुणह कोइ कायालिय भाइण,  
 महमहह अहव पच्चूमि गह्द ओससित्तु घण कुसुमभरु,  
 अह गुणित पडिय । अणुरसित पिउ सरह समह जु न  
 सरह घर ॥१८॥

## हेमन्त

दीह उसासिदि दीह रयणि मह गइय गिरक्खर ।  
 आइ ग णिइय । णिद तुज्ज सुयरंतिय तक्खर ।  
 अंगिहिं तुह अलहंत धिट्ठ ! करयल फरिसु ।  
 संसोसित्त तण्ण हिमिण हाम हेमह सरिसु ।  
 हेमंति कंत । विलयंतियह, जइ पलुट्टि नासासिहसि,  
 तं तइय मुख ! खल ! पाइ मइ मुइय विज्ज किं  
 आविहसि ॥१९॥

१८. दीवाली में रात में दीपदान करती हैं; नयी चन्द्र रेखा के समान हाथ में लेकर; दोनों से संसार को आलोकित करती है; महिलाएँ आँखों में सलाई से काजल लगाती हैं । १७. इस प्रकार कोई पुण्यवती क्रीड़ा करती हैं, मैदुःख में रात बिताती हैं; घर घर सुन्दर गीत है, एक अकेली मुझे सारा दुख दिया ।

हेमन्तः—१९. हे मूर्ख, लम्बी उसासों में लम्बी रात बीत गई, हे निर्दय चोर, तुम्हारी याद करते हुए नींद नहीं आई; रे ढीठ, तुम्हारे हाथों का स्पर्श न पाने से, हेमन्त ने मेरे अंग अंग सुखा डाले; जैसे धूप ठंड को । हे प्रिय यदि हेमन्त में भी नहीं आते और विलाप करती हुई मुझे आश्वासन नहीं देते; तो क्या रे दुष्ट मेरे घरने पर आग्रोगे ?

## शिशिर

द्यायफुल्लफलरहिय असेविय सउणियण,  
 तिमिरंतरिय दिसा य तुहिण धूइण मरिण ।  
 मग्ग भग्ग पंथियह ण पवसिहि हिम डरिण,  
 उज्जाणिहि ढंरवरिय असोसिय कुसुमवण ॥२०॥  
 तरुणिहि कंत पमुक्किय णिय केली हरिहि,  
 सिसरि भइण किउ जलणु सरणु अग्गीहरिहि ।  
 उवभुंजहि केलीरसु अग्गितंर भुयण,  
 उज्जाणह दुम्मिहिणि ण कीरइ किवि सयण ॥२१॥

## वसन्त

महमहिउ अंगि बहु गंधमोउ,  
 णं तरणि (तरुणि) पमुक्कउ सिसरि सोउ ।  
 तं पिक्खिणि मइ मज्झहि सदीय,  
 लंकोडउ पढियउ वल्लहीय ॥२२॥  
 निवडंत रेणु धरपिंजरीहि,  
 अहिययर तविय णवमंजरीहि ।  
 मरु सियलु वाइ महि सीयालंतु,  
 णहु जणइ सीउ णं खिवइ तंतु ॥२३॥

शिशिर—२०. उज्जाविहि—उद्यान में जो कुसुम वन अभी तक नहीं सूखा था, वह भी काढ़-झंझाड़ रह गया है ।

२१. पत्तियाँ पतियों को केलियर में छोड़कर, शीत के डर से अग्निघर में आग की शरण में है; भीतर ही भुजाओं से क्रीडारस का आनन्द ले रही है । उद्यानों में पेड़ों के नीचे अब कोई नहीं सोता ।

वसंतः—२२. बहुत से गंध आमोद से अंग अंग महकने लगे मानो तरुणी (तरुणि) मूर्य ने शिशिर का शोक छोड़ दिया हो, यह देखकर मैंने प्रिय सखियों के बीच, यह श्लोक पढ़ा ।

२३. नयी मंजरियों से घरती पर पराग गिरता है, वह अधिक तप उठता है, ठण्डी हवा घरती को शीतल करती हुई बहती है, वह ठंडक पैदा नहीं करती, बरन संताप पैदाती है ।



- 
- 
- 
- 
२७. जिसका नाम लोगों ने भूठमूठ रख छोड़ा है, वह असोक भी एक क्षण भी शोक दूर नहीं करता; कामदेव दर्प से अंगों को जलाता है । सहकार (आमवृक्ष) भी अंगों को सहारा नहीं देता ।
२८. उसके शिखर पर प्रेम से सराबोर काली कोयलें बोल रही हैं, मानों भरत मुनि के विविध भावों को गा रही हों, अत्यन्त सुन्दर वसंत ऋतु आगई: मधुकर भी अत्यन्त सुन्दर स्वर में बोल रहे हैं ।
२९. वसंत में चांचर खेल में ताली की ध्वनि कर गीत गाया जा रहा है और अपूर्व नाच हो रहा है, मजबूती से गहने पहने हुए खेलती हुई जिनकी करधनी किकरियों की रुनझुन हो रही है ?
३०. नवयौवना तरुणियाँ गरज रही हैं,—उसे सुनकर प्रिय की आकांक्षा रखने वाली उसने एक गाथा पढ़ी ।

# दोहा संग्रह

हेमचन्द्र

१) वीर

एइ ति घोड़ा, एह थलि, एइ ति निसिआ खग ।  
 एत्थु मुणीसिम जाणिअइ, जो नवि वालइ वग ॥१॥  
 पुत्ते जाअे कवणु गुणु, अवगुणु कवणु मुअेण ।  
 जा वप्पी की भूँहडी चंपिज्जइ अवरेण ॥२॥  
 हिअडा जइ वेरिअ घणा, तो किं अदिभ चडाहुँ,  
 अम्हाहिं वे हत्थडा, जइ पुणु मारि मराहुँ ॥३॥  
 अम्हे थोवा, रिउ बहुअ, कायर एम्ब भणंति ,  
 मुद्धि, निहालहि गयण-यलु, कइ जण जोन्ह करंति ॥४॥  
 पइं मइं वेहिं वि रण-गयहिं को जय-सिरि तक्केइ ।  
 केसहिं लेप्पिणु जम-घरिणि, भण, सुहु को थक्केइ ॥५॥  
 तुम्हेहि अम्हेहि जं किअउं दिट्ठउं बहुअ जणेण ।  
 तं तेवंडउ समरःभरुं निज्जिउ एक-खणेण ॥६॥  
 जाम न निवडइ कुंभ-यडि सीह-चवेड-चडक ।  
 ताम समत्तहं मय-गलहं पइ-पइ वज्जइ ढक्क ॥७॥

- 
१. एइ ति घोड़ा=यही वे घोड़े । एइ ति निसिआ खग=ये ही वे पैनी तलवारें ।  
 मुणीसिम=मनुष्यत्व । वालइ वग=मोड़ता है लगाम ।
  २. भूँहडी=भूमि धरती । चंपिज्जइ=चांप ली गई । अवरेण=दूसरे के द्वारा ।
  ४. अदिभ=आकाश में । चडाहुँ=जड़ जाऊँ । अम्हा हिं=हमारे भी । वे हत्थडा  
 =दो हाथ ।
  ५. जोन्ह=ज्योत्स्ना । ६. रण गयहिं=रण में जाने पर । जयश्री=विजय श्री ।  
 को तक्केइ=कोई कल्पना करता है ।
  ७. तं तेवंडउ=वह उतना बड़ा । समरभर=युद्ध भार ।

कंत जु सीहहो उव सि अइ, तं महु खंडिउ माण ।  
 सीह गिरक्खय गय हणइ, पिउ पय-रक्ख-समाण ॥१॥  
 भग्गउ देखिवि निअय-वलु, वलु पसरिअउं परस्सु ।  
 उम्मिलइ ससि-रेह जिंव करि करवालु पियस्सु । ॥६॥  
 जहिं कप्पिज्जइ सरेण सरु, छिज्जइ खग्गेण खग्गु ।  
 तहिं तेहइ भड-घड निवहि-कंतु पयासइ भग्गु ॥११॥  
 संगर-सयेहिं जु वणिणअइ-देक्खु अम्हारा कंतु ।  
 अइ-मत्तह चत्तकुसहं गय कुंभइं दारन्तु ॥१२॥  
 कंतु महारउ, इलि सहिए, निच्छइं रुसइं जासु ।  
 अत्थिहिं सत्थिहिं हत्थिहिं वि ठाउ वि फेडइं तासु ॥१३॥  
 महु कंतहो गोट्ठ-ट्ठिअहो, कउ सुं पडा बलंति ।  
 अह रिउ-रुहिरें उल्लवइ-अह अप्पणें, न भंति ॥१४॥  
 महु कंतहो वे दोसडा, हेल्लि, म, भंखहिं आलु ।  
 देतहो हउं पर उव्वरिअ, जुज्झंतहो करवालु ॥१५॥  
 प्रिय एस्वहिं करे सेल्लु करि, छड्डहिं तुहुं करवालु ।  
 जं कावालिउ वप्पुडा लेहिं अमग्गु कवालु ॥१६॥  
 जइ भग्गा पारक्कडा तौ, सहि मज्झु पिअेण ।  
 अह भग्गा अम्हहं तणा, तो तें मारिअडेण ॥१७॥  
 पाइ विलग्गी अंत्रडी, सिरु ल्हसिउ खंधस्सु ।  
 तो वि कटारइ, हत्थिउ बलिकिज्जउ कंतस्सु ॥१८॥  
 भल्ला हुआ जु मारिआ, वहिणि, महारा कंतु ।  
 लज्जेज्जंतु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरु एंतु ॥१९॥

कुंभयडि=कुंभ तट पर । सीह भवेड-चडक्क=सिंह की चपेट की तड़क  
 समत्तहं मयगलहं=मतवाले हाथियों का । वज्जइ डक्क=वज्रता है नगाड़ा  
 उवमिअइ=उपमीयते । विरक्खय=अरक्षित । पय रक्ख=पद रक्षित ।  
 उम्मिल्लइ ससि-रेह=चन्द्र रेखा के समान चमकता है ।  
 कप्पिज्जइ=काटा जाता है । निवहिं=समूह में । पयासइ=प्रकाशित करत  
 है । १२. चत्तकुंसहं—त्यक्तांकुश गय अंकुश रहित गज । १३. अत्थिहिं-  
 अस्त्र-शस्त्र और हाथियों सहित ।  
 आलु म भंखहिं—भूछ मत बोवो । उल्लवइ—घात करना है ।  
 अमग्गु—अभय । १७. पारक्कडा—पराए ।

आयहिं जम्महिं अन्नहिं वि, गोरि, सु दिज्जहिं कंतु ।  
 गय मत्तहं चत्तकुसहं, जो अन्निभइ हंसतु ॥२०॥  
 खग्ग-विसाहिउ जहिं लहहु, पिय, तहिं देसहिं जाहुं ।  
 रण-दुन्निक्खे भग्गाइं, विणु जुम्मे न वलाहुं ॥२१॥  
 विहवि पणट्ठइ वंकुडउ, रिद्धिहि जण-सामन्नु ।  
 किं पि मणाउं महु पिअहो ससि अणुहरइ न अन्न ॥२२॥  
 विहि विणडउ, पीडंतु गह, मं वणि, करहि विसाउ ।  
 संपइ कडडउ वेस जिवं, छुडु अग्घइ ववसाउ ॥२३॥  
 एहु जम्मु नगाहं गयउ, भडसिरि खग्गु न भग्गु ।  
 तिक्खा तुरय न बालिया गोरी गलि न लग्गु ॥२४॥

## (२) अन्योक्ति

भमर, म रुणभुणि रणणइ सा दिसि जोइ सरोइ ।  
 सा मालइ देसंतरिअ, जसु तुहुं मरहि विओइ ॥१॥  
 भमरा-ऐत्थु-वि लिंघइ के-वि दिअहडा विलंबु ।  
 घण-पत्तलु छाया-वहुलु फुल्लइ जाम कयंबु ॥२॥  
 वप्पीहा, कइ वोल्लिएण निग्घिएण वार-इ-वार ।  
 सायरि भरिअइ तिमल-जलिं लहइ न एकइ धार ॥३॥  
 कुंजरु अन्नहं तरुअरहं कोड्डेण घल्लइ हत्थु ।  
 मणु पुणु एकइहिं सल्लइहिं, जइ पुच्छइ परमत्थु ॥४॥

२०. आर्याहिं जम्महिं—इस जन्म में दूसरे जन्म में जो अन्निभइ हंसतु—भिड़ जाय हंसता हुआ । २१. खग्ग-विसाहिउ—खग्ग व्यवसाय । जहिं लहहु—जहां प्राप्त कलं । २२. विहवि पणट्ठइ वंकुडउ—घन के नष्ट होने पर बांका । रिद्धिहि—ऋद्धि में । जन-सामन्नु—जन सामान्य । २२. किं पि मणाउ—कुछ थोड़ा । महु-पिय-हो—मेरे प्रिय से । ससि अणुहरइ—चन्द्रमा समानता करता है । २३. विहि विणडउ—भाग्य नाचे । पीडंतु गह—ग्रह सताएं । वेस जिवं—वैश्य की तरह । छुडु अग्घइ ववसाउ—जरा व्यवसाय तो चल जाय । २४. व्यर्थ गया मेरा यह जन्म । न योद्धा की श्री मिली, न तलवार भग्न की, व तीखे घोड़ों पर चढ़ा, और न गोरी के गले लगा ।

१. खाइ—अरण्य-जंगल में । देसंतरि अ—देशान्तरित कर दी गई ।  
 २. लिंघइ—नीम पर । कयंबु—कदम्ब । ३. वप्पीहा—पपीहा । निग्घिएण—निर्दय । ४. कोड्डेण—कौतुक से । हत्थु घल्लइ—हाथ डालता है । एकइहिं सल्लइहिं—एक सल्लकी लता में । पुच्छइ—पूछते हो ।

कुंजर, सुमहि म सल्लङ्घ, सरला मास म मेल्लि ।  
 कवल जि पाविय विद्धि-वग्गेण, ते चरि, माण-म मेल्लि ॥१॥  
 मइं वुत्तउं, तुहं भुरु भरहि, कसरेहिं विगुत्ताइं !  
 पइं विणु, धवल, न चढइ भरु, एम्बइ वुन्नउ काइं ॥६॥  
 धवलु विसूरइ सामिअहो गरुआ भरु पिकववि ।  
 हउं किं न जुत्तउ दुहुं दिसिहिं खंडउं दोएण करेवि ॥७॥  
 गयउ सो केसरि, पिअहु जलु, निरिचिउतइं धरिणाइं ।  
 जसु केरएँ हुंकारउएँ मुहइं पडंति तिणाइं ॥८॥  
 तणइं तइज्जी भंगि न वि तें अयड-यडि वसंति ।  
 अह जणु लग्गवि उत्तरइ अह सह सइं मज्जन्ति ॥९॥  
 सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति ।  
 तो-वि महइम सउणाइं अयराहिउ न करंति ॥१०॥

पइं मुक्काहं वि वरतरु  
 फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताणं ।  
 तुह पुण छाया जइ होज्ज  
 कह-वि ता तेहिं पत्तेहिं ॥११॥

जे छड्डेविणु रयण-णिहि अप्पउ तडि चल्लंति ।  
 तहं संखइं विट्ठालु परु, फुक्किजंत भमंति ॥१२॥  
 एत्तहे मेह पिअंति जलु,  
 एत्तहे वडवानल आवट्टइ ।  
 पेक्खु गहीरिम सायरहो,  
 एकक-वि कणिअ नाहिं ओहट्टइ ॥१३॥

- 
- ४, सास म मेल्लि—सांस मत छोड़ो । विधि-वसि—भाग्य के वश से ।  
 ६, कसरेहिं विगुत्ताइं—कसर-गरियाल बेल से खिन्न । काइं वुन्नउ—इस समय खिन्न क्यों ? हउं दुहुं दिसि—दोनों दिशाओं में भुभे क्यों नहीं जोत दिया । जसु केरए हुंकारउएँ—जिसकी हुंकार से ।  
 ९, तइज्जी भंगि ए वि—तीसरी गति नहीं । तें अयड तडि पडन्ति—चूँकि औघट घाट पर पड़ते हैं १ १०, सउसाहं—पक्षियों का । १२, अघड यडि चल्लंति—ग्रपने को तट पर डाल लेते हैं । विट्ठालु—नीच । फुक्किजंत भमंति—फूँके जाते हुए घूमते हैं । १३, आवट्टइ—विद्यमान है । गहीरइ—गंभीर । सायरहो—समुद्र का । कविअ नाहिं ओहट्टइ—एक कण भी कम नहीं होता ।

सोसउ म सोसउ चिचअ

उअही, बडवानलस्य किं तेण ।

जं जलइ जले जलणो

—आएण व किं न पज्जत्तं ॥१४॥

तं तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेबडु वित्थारु ।

तिसहे निवारणु पलु वि न-वि, पर धुट्ठुअइ असारु ॥१५॥

वच्छहे गृण्हइ फलइं जणु, कडु. पल्लव वज्जेइ ।

तो-वि महददुसु सुअणु जिवं ते उच्छंगि धरेइ ॥१६॥

### (३) नीति

सरिहि न सरेहिं न सर-वरेहिं न-वि उज्जाण-वणेहिं ।

देस रवण्णा होंति, वढ, निवसंतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥

सत्थावत्थहं आलवणु साहु वि लोउ करेइ ।

आदन्नहं मग्गीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥

जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु ।

तसु इउ कलि-जुगि दुल्लहहो वलि किज्जउ सुअणस्सु ॥३॥

सु-पुरिस कंगुहे अणुहरहिं, भण कज्जे कवणेण ।

जिवं वडुत्तणु लहहिं, तिवं तिवं नवहिं सिरेण ॥४॥

दूरुड्डाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।

जिह गिरि-सिगहु पडिअ सिल अन्नु वि चूरु करेइ ॥५॥

१४. चिचअ—चेत्—शायद । उअही—उदधि—समुद्र । आएण व किं न पज्जन्तं—क्या इतना पर्याप्त नहीं है । १५. सो ते बडु=वित्थारु—वह उतना बड़ा विस्तार । तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण । धुट्ठुअइ असारु—व्यर्थ गरजता है । १६. वच्छहे गृण्हइ—वृक्ष ऐ ग्रहण करते हैं । फलइं जणु—लोग फल । कडुपल्लव—कड़वे पत्ते । वज्जेइ—छोड़ देते हैं । उच्छंगे धरेइ—उत्संग—गोद में धारण करते हैं ।

१. सरिहि=नदियों से । सरेहिं=सरो से । सरवरेहिं=सरोवरों से । देस र वण्णा होंति=देश सुन्दर होते हैं । वढ=मूर्ख । २. सत्था.....आलवणु=स्वस्थ अवस्था वालों से आलाप । आदन्नहं=पीड़ितों को । मग्गीसडी=डरोमत यह अभयदान । ३. वलि किज्जउ=बलिहारि करता हूँ । ४. कवणेण कज्जे=किस काम से । ५. दूर.....दूर भी स्थान में । पडिउ=पड़ा हुआ अप्पणु जणु मारेइ=अपने जन को मारता है । सिल=शिला ।

सोसउ म सोसउ चिचअ

उअही, वडवानलस्य किं तेण ।

जं जलइ जले जलणो

—आएण व किं न पज्जत्तं ॥१४॥

तं तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेवडु वित्थारु ।

तिसहे निवारणु पलु वि न-वि, पर धुट्ठुअइ असारु ॥१५॥

घच्छहे गृण्हइ फलइं जणु, कडु. पल्लव वज्जेइ ।

तो-वि महददुमु सुअणु जिवं ते उच्छंगि धरेइ ॥१६॥

### (३) नीति

सरिहि न सरेहिं न सर-वरेहिं न-वि उज्जाण-वणेहिं ।

देस रवणणा होंति, वढ, निवसंतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥

सत्थावत्थहं आलवणु साहु वि लोउ करेइ ।

आदन्नहं मग्गीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥

जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु ।

तसु हंड कलि-जुगि दुल्लहहो वलि किज्जउ सुअणस्सु ॥३॥

सु-पुगिस कंगुहे अणुहरहिं, भण कज्जे कवणेण ।

जिवं वडुत्तणु लहहिं, तिवं तिवं नवहिं सिरेण ॥४॥

दूरुड्डाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।

जिह गिरि-सिगहु पडिअ सिल अन्नु वि चूरु करेइ ॥५॥

१४. चिचअ—चेत्—शायद । उअही—उदधि—समुद्र । आएण व किं न पज्जत्तं—क्या इतना पर्याप्त नहीं है । १५. सो ते वडु=वित्थारु—वह उतना बड़ा विस्तार । तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण । धुट्ठुअइ असारु—व्यर्थ गरजता है । १६. वच्छहे गृण्हइ—वृक्ष ऐ ग्रहण करते हैं । फलइं जणु—लोग फल । कडुपल्लव—कड़वे पत्ते । वज्जेइ—छोड़ देते हैं । उच्छंगे धरेइ—उत्संग—गोद में धारण करते हैं ।

१. सरिहि=नदियों से । सरेहिं=सरों से । सरवरेहिं=सरोवरों से । देस र वणणा होंति=देश सुन्दर होते हैं । वढ=मूर्ख । २. सत्था.....आलवणु=स्वस्थ अवस्था वालों से आलाप । आदन्नहं=पीड़ितों को । मग्गीसडी=डरोमत्त यह अभयदान ३. वलि किज्जउ=वलिहारि करता हूँ ४. कवणेण कज्जे=किस काम से ५. दूर.....दूर भी स्थान में । पडिउ=पड़ा हुआ अप्पणु जणु मारेइ=अपने जन को मारता है । सिल=शिला ।

साहू वि लोउ तउपफइइ वउत्तगहो तगोण ।  
 वउत्तगण परि पाविअइ हउथे मोक्कलडेण ॥६॥  
 गुणहिं न संपइ किंति पर, फल लिहिआ भुंजति ।  
 केसरि न लहइ वोडिअ वि गय लक्खेहिं घेण्पति ॥७॥  
 सायरु उप्परि तगु धरइ, तलि पल्लइ रयणाइं ।  
 सामि सुभिच्चु वि परिहरइ, संमाणेइ खलाइं ॥८॥  
 जीविउ कासु न वल्लहंउ ? धगु पुगु कासु न इटु ।  
 दोणिण वि अयसर-निवडि तिण सम गणइ विसिटु ॥९॥  
 कमलइं मेल्लिवि अलि-उलइं करि-गंडाइं महंति ।  
 अ-सुलह-मेच्छण जाहं भलि, तेण-वि दूर गणंति ॥१०॥  
 माणि पणटुइ जइ न तगु, तो देसडा चइज्ज ।  
 मा दुज्जण-कर-पल्लवेहिं दंसिज्जंतु भमिज्ज ॥११॥  
 जामहिं विसमी कज्ज-गइ जीवहं मज्जे एइ ।  
 तामहिं अच्छउ इयरु जगु, सुअणु वि अंतरु देइ ॥१२॥  
 दइवु घडावइ वणि तरुहुं सउणिहं पक्क फलाइं ।  
 सो वरि सुक्खु पइट्टण-वि कण्णहिंखल-वयणाइं ॥१३॥  
 तरुहुं वि वक्कलु फल मुणि वि परिहणु असणु लहंति ।  
 सामिहुं एत्तिउ अगलउं आयरु भिच्चु गृहंति ॥१४॥  
 गिरिहे सिला-यलु, तरुहे फलु घेण्पइ नीसावन्नु ।  
 घरु मेलेप्पिणु माणुसहं तो-वि न रुच्चइ रन्नु ॥१५॥  
 विहवे कस्सु थिरत्तणउ, जोव्वणि कस्सु मरटु ? ।  
 सो लेखडउ पठाविअइ, जो लगगइ निच्चटु ॥१६॥  
 एत्तहे-तेत्तहे वारि-घरि लच्छि विलंतुल धाइ ।  
 पिअ-पव्वभट व गोरडी णच्चल कहिं-वि न ठाइ ॥१७॥

७. लिहिआ=लिखा हुआ । वोडिअ वि=कौड़ी में भी । घेण्पति=खरीदे जाते हैं । सुभिच्चु  
 विसुभृत्य को ९ दोणिण....किवउइं=दोनों अक्सर आ पड़ने पर ११. देसडा  
 चइज्ज=देश छोड़ दो । या.....दुष्टों के अंगुलियों द्वारा संकेतित न घूमे ।  
 १२. सुअणु वि=सज्जन भी किनारा काटता है । १३. सउनिहं=पक्षियों के  
 लिए । १४. अगलउं=अलग विशेष । १५. नीसावन्नु=निःसामान्य । रन्नु न  
 रुच्चइ=वन अच्छा नहीं लगता । १६. निच्चटु=नीचट, पक्का ।  
 १७. वारिघरि=घरद्वार । विसंतुल=विसंस्थुल=अस्तव्यस्त । धाइ=दौड़ती  
 है । पिअपव्वभट=प्रिय से भ्रष्ट गौरी ।



आयहो दड़द-कलेवरहो जं वाहिउ तं सार ।

जइ उटम्भइ तो कुहइ, अह् डम्भइ तो छार ॥२५॥

## ( ४ ) शृङ्गार

### ( १ ) रूप-चित्रण

सीसि सेहरु खणु विणिम्मविटु,

खणि कंठि पांलवु किटु रदिअे ।

विट्टिटु खणु मुंडमालिअे जं पणअेण,

तं नमहु कुसुम-दाम-कोदंडु कामहो ॥१॥

साव सलोणी गोरडी, नवक्खी क-वि विस-गंठि ।

भड्ड पच्चलिअो सो मरइ, जासु न लग्गइ कंठि ॥२॥

जइ सो घडदि प्रयावदी केत्थु-वि लेप्पिणु सिक्खु ।

जेत्थु-वि तेत्थु-वि जगि, भण तो सहि सारिक्खु ॥३॥

मुह-कवरि वंध तहे सोह धरहिं ।

नं मल्ल-जुम्भु ससि-राहु करहिं ॥

तहे सहहिं कुरल भमर-उलःतुलिअ ।

नं तिमिर-डिंभ खेल्लंति मिलिअ ॥४॥

चलेहिं चलतेहिं लोअणेहिं जे तइं दिट्ठां, बालि ।

तहिं मयरद्धय-दडवडउ पडइ अपूरइ-कालि ॥५॥

आयइ, लोअहो, लोअणइ जाई'सरइ, न भंति ।

अप्पिए दिट्ठइ मडलिअहिं पिएदिट्ठइ विहसंति ॥६॥

जिवं-जिवं वंकिम लोअणहं णिरु सामलि सिक्खेइ ।

तिवं-तिवं वम्महु निअय-सर खर पहारि तिक्खेइ ॥७॥

२५. इस दग्ध देह से जो सघ जाय, वही सार है । यदि सम्हालो तों नष्ट होता है, यदि जलता है तो छार छार होता है ।

१. ....

२. सलोणी=सलोनी, गोरडी=गोरी, नवक्खी=अनोखी, विसगंठी=विष की गांठ ४. सोह=शोभा । धरइ=धारण करती है । तिमिर डिंभ=अंधकार के वच्चे । ५. जाई-सरइ=जाति-स्मृति । अप्पिए दिट्ठइ=अप्रिय के देखने पर । ७. जिवं जिवं=जिस जिस प्रकार । सामलि=श्यामला । सिक्खेइ=सिखाती है । खर पत्थरि=तीखे पत्थर । तिक्खेइ=तीखा करती है ।

विट्टीअे, मइं भणिअ, तुहुं मा करु वंकी दिट्ठि ।  
 पुत्ति, सकण्णी भल्लि जिवं मारइ हिअइ पइट्ठि ॥८॥  
 अंसु जेल-आइम्ब गोरिअहे, सहि, उव्वत्ता नयण सर ।  
 ते संमुह संपेसिआ देंति तिरिच्छी घत्त पर ॥९॥  
 उअ कणिआरु पफुल्लिअउ कंचण-कंति-पयासु ।  
 गोरी-वयण-विणिज्जिअउ णं सेवइ वण-वासु ॥१०॥  
 ओ गोरी-मुह णिज्जिअउ वदलि लुक्कु मियंकु ।  
 अन्नु वि जो परिह्विय-तणु, सोकिं व भवइ निसंकु ॥११॥  
 निअ-मुह-करहिं वि मुद्ध कर अंधारइ पडिपेक्खइ ।  
 ससि-मंडल-चंदिमए पुणु काइं न दूरे देखइ ॥१२॥  
 जिवं तिवं तिक्खा लेवि कर जइ ससि छोटिलिज्जंतु ।  
 जो जइ गोरिहे मुह-कमलिं सरिसिम का-विलहंतु ॥१३॥

फोडेंति जे हिअडउं अप्पणउं,

ताहं पराई कवण घण ?

रक्खेज्जउ, लोअहो, अप्पणा,

बालहे जाया विसम थण ॥१४॥

अन्नु जु तुच्छउं तहे धणहे, तं अक्खणह न जाइ ।

कटरिणतंरु मुद्धहे, जे मणु विच्चि ण माइ ॥१५॥

अन्ने ते दीहर लोअण, अन्नु तं भुअ-जुअलु ।

अन्नु सु घण-थण-हारु, तं अन्नु जि मुह-कमलु ॥

अन्नु जि केस-कलावु, सुअन्नु जि प्राउ विहि ।

जेण णिअंविणि घडिअ स गुण-लावण-णिहि ॥१६॥

८.

वंकी दिट्ठी=वंकी नजर । सकण्णी भल्लि=सकण्ण भोली की तरह ।

९. अंसुजले=आसुओं के जल में । प्राइम्ब=प्रायः, उव्वत्ता=गीले या भीगे हुए । नयण-सर=नेत्ररूपी वाण । १०. उअ=देखो । कणिआर=कनैर । ११. वदलि=वादल में । मियंकु=मृगांक । १२. सरिसम=समानता । लइन्नु=प्राप्त करती है । १४. घण=दया । अप्पणा=अपनी । १५. धनंह=घन्या का । अक्खणह न जाइ=कहा नहीं जा सकता । कटरि=आश्चर्य हैं ? विच्चि=बीच में । ण माइ=नहीं समाती ।

१६. गुण लावण णिहि=गुणलावण्य निधि ।

## (२) प्रेम

कहिं ससहरु कहिं मयर-हरु, कहिं वरिहिणु कहिं मेहु ।  
 दूर-ठिआहं वि सज्जणहं होइ असइहलु नेहु ॥१७॥  
 देसुच्चाडणु सिद्धि-कठणु, धण-कुट्टणु जं लोइ ।  
 मंजिट्ठण अइ-रत्तिण सच्चु सहव्वउं होइ ॥१८॥  
 अगलिअ-णेह-णिगट्टाहं जोअण-लकखु वि जाउ ।  
 रिस-सणण वि जो मिलइ, सहि, सोक्खहं सो-टाउ ॥१९॥  
 सुमरिज्जइ तं वल्लहउ, जं बीसरइ मणाउं ।  
 जहिं पुणु सुमरणु जाउ गउ, तहो नेहहो कइं नाउं ॥२०॥  
 तिलहं तिलत्तणु ताउं पर, जाउं न नेह गलंति ।  
 नेहि पणट्ठइ ते-ज्जि तिल तिल फिट्ठवि खल होंति ॥२१॥

## (३) संयोग शृंगार

विवाहिर तणु रयण-अणु किह टिउ सिरिआणंद ।  
 गिरुवम-रसु पिणँ पिअवि जणु सेसहो दिण्णी, मुह ॥२२॥  
 अइ-तुंगत्तणु जं थणइ, सो छेयउ, न हु लाहु ।  
 सहि, जइ केम्बइ तुडि-वसेण अहरि पहुच्चइ नाहु ॥२३॥  
 भण सहि, निहुअउं तेवं मइं, जइ पिउ दिट्ठु सदोसु ।  
 जेवं न जाणइ मज्झु मणु पक्खावडिअ तासु ॥२४॥  
 जइ न सु आवइ दूइ घरु, काइं अहो मुहुं तुज्झु ?  
 वयणु जु खंडइ तउ सहिए, सो पिउ होइ न मज्झु ॥२५॥  
 केम सभण्णउ दुट्ठु दिणु, किध रयणी छुडु होइ ।  
 नव-वहु-दंसण-लालसउ वहइ मणोरह सोइ ॥२६॥

१७. वरिहिणु=वहि मयूर । दूरठिआहं=दूरस्थितों का । असइहलु=असाधारण  
 १८. देसुच्चाडणु=देश से उच्चाटन । सिद्धि कठणु=आग सेनिकलना ।  
 धण कुट्टणु=धन से पीटा जाना । सच्चु .... सब कुछ सहन पड़ता है ।  
 १९. अगलिअ.....अगलित स्नेह से भरपूर ।  
 २२. रयणवणु=रदन वण=दांत का घाव । मुह=मुद्रा मुहर । २३. तुडि-वसेण=  
 त्रुटि से भूले से । पहुच्चइ=पहुंचता है । २४. पक्खा वडिअ=पक्षपाती  
 है । तासु=उसका । २५. वयणु=वचन मुख ।  
 २६. किध=किस प्रकार । रयणी छुडु होइ=रात शीघ्र हो ।

अम्मी,एं सत्थावत्थेहिं सुधिं चित्तिज्जइ माणु ।  
 पिएं दिट्ठे हल्लोहलेण को चेअइ अप्पाणु ॥२७॥  
 अंगहिं अंगु न मिलिउ, हलि, अहरें अहरु न पत्तु ।  
 पिअं जोअंतिहे सुह-कमलु एम्भइ सुरउ सवत्त ॥२८॥

मान

ढोल्ला, मइं तुहुं वारिआ, मा कुरु दीहा माणु ।  
 निदहे गमिही रत्तडी, दडवड होइ विहाणु ॥२९॥  
 चंचलु जीविउ, ध्रुवु मरणु, पिअ, रुसिज्जइ काइं ।  
 होसहिं दिअहा रुसणा दिव्वइं वरस-सयाइ ॥३०॥  
 अम्मडि, पच्छायावडा, पिउ कलहिअउ विआलि ।  
 घइं विवरीरी बुद्धडी होइ विणासहो कालि ॥३१॥

वियोग शृंगार

मइं जाणिउं वुड्डीसु हउ पेम्स-द्रहि हुहुरुत्ति ।  
 नवरि अचित्ति य सपडिय विप्पिय-नाव भडत्ति ॥३२॥  
 ढोल्ला, एहे परिहासडी, अइ भण, कवणहिं देसि ? ।  
 हउं झिउसउं तउ केहि, पिअ, तुहुं पुणु अन्नहि रेसि ॥३३॥  
 महु द्विअउं तइं, ताए तुहुं, स-वि अन्ने विनडिज्जइ ।  
 पिअ, काइं करउं हउं, काइं तहुं, मच्छे मच्छु गिलिज्जइ ॥३४॥  
 एककु कइअह-वि आवही, अन्नु वहिल्लउ जाहि ।  
 मइं, मित्ताडा, पमाणियड, पइं जेहउ खलु नाहि ॥३५॥  
 विप्पिअ आरउ जइ-वि-पिउ तो वि तं आणहि अज्जु ।  
 अग्गिण दड्ढा जइ-वि घरु, तो तें अग्गि कज्जु ॥३६॥

२७. सत्ता०=स्वस्थ=अवस्था वाले । सुधि=मुखसे । २८. एम्भइ=इस समय । सुरउ=सुरति समात्तु=समाप्त है । २९. दडवड=शीघ्र । विहाणु=सवेरा । रत्तडी=रात । निद=नींद में । ३०. काइं रुसिज्जइ=क्यों रुसता है । वरस सयाइ=सौकड़ों वर्षों तक ३१. पच्छायावडा=पश्चात्ताप । विआलि=विकाल संध्या समय । घइं=प्रायः विवरीरी=उल्टी । विनाश काले विपरीत बुद्धि ३२. वुड्डीसु=डूब जाऊंगा । पेदहि=प्रेम समुद्र में । हुहुरुत्ति=हह हहर कर । विप्पिय नाव=वियोग की नौका । ३३. अन्नहि रेसि=दूसरे के लिए । ३४. वहिल्लउ=शीघ्र ही । पमाणियउ=प्रभावित कर दिया ।

जइ तहे तुट्टउ नेहडा, मइं सहुं न-वि तिल-तार ।  
 तं किहे वंकेहिं लोअणेहिं जोइज्जउं सय-वार ॥३७॥  
 पइं मेल्लंतहो ? महु मरगु, मइं मेल्लंतहो नुज्जु ।  
 सारस जसु जो वेगला, सो-वि कदंत हो सज्जु ॥३८॥  
 अज्ज वि नाहु महु विज्ज घरि सिद्धत्था वंदेइ ।  
 ताउं जिं घरहु गवखेहिं मक्कड-घुगिउ देइ ॥३९॥  
 जाउ, म जंतउ पल्लवह, देकखउं कइ पय देइ ।  
 द्विअइ तिरिच्छी हउं जि पर, पिउ डंवरइ करेइ ॥४०॥  
 रवि-अत्थमणि समाउलेण कंठि विइणु न छिणु ।  
 चक्के खंडु मुणालिअहे नउ जीवगलु दिणु ॥४१॥  
 वाह विछोडवि जाहि तुहुं, हउ तेवइ को दोसु ।  
 द्विअअ-ट्टिउ जइ नीसरहि, जाणउं, मुं ज, सरोसु ॥४२॥

विरहाणल-जाल-करालि अउ  
 पहिउ को-वि बुडिडवि ठिअउ ।  
 अण सिसिर-कालि सीअल-जलहु ॥४३॥  
 धूसु कहंतिहु उट्ठिअउ ? ॥४३॥  
 विरहाणल-जाल-करालिअउ  
 पहिउ पथि जं दिट्ठउ ।  
 तं मेलवि सव्वहिं पंथिअहिं  
 सो जि किअउ अग्गिट्ठउ ॥४४॥

द्विअइ खुडुकइ गोडो, गयणि घुडुकइ मेहुं ।  
 वासा-रत्ति-पवासुअहं, विसमा संकडु एहु ? ॥४५॥  
 पहिआ, दिट्ठी गोरडी, दिट्ठी मग्गु निअंत ? ।  
 अंसू-सासेहिं कंचुआ तितुवाण करंत ॥४६॥

३७. तिल-तार=तिलों की तरह स्वच्छ । जोइज्जउ=देखा जाता है ।  
 ३८. वेगला=जोड़ी । कदंत हो सज्जु=कृतान्त का साध्य है । ३९. मक्कड  
 घुगिउ=बंदर घुड़की । ४०. डंवरइ=आडम्बर । ४१. विइणु=देदी ।  
 जीवगलु=जीवार्ण दे दी । वाह=वांह । ४४. अग्गिट्ठउ=अग्नि स्थित ।  
 ४५. वासा रत्ति=वर्षा की रात में । पवासुअहं=प्रवास करने वालों का  
 ४६. कंचुआ=कंचुकी । तितुवाण=गीता । करंत=करती हुई ।

जइ स-सणेही तो मुइअ, अप जीवइ निन्नेह ।  
विहिं वि पयारे हिं गइअ घण, कि गज्जइ, खलमेह ॥४७॥

अव्भा लग्गा डुंगरिहिं, पडिउ रडंतउ जाइ ।  
जो अहे गिरि-गिलण-मथु, सो किं घणहे घणाइ ॥४८॥

लोणु विलिज्जइ पाणिअेण, अरे खल मेह, म गज्जु ।  
वालिउ गलइ सु भुं पडा, गोरी तिम्मइ अब्जु ॥४९॥

जउ पवसंतें सहुं न गय, न मुअ विओओतस्सु ।  
लज्जिज्जणइ सदेसडा देंतेहिं सुहय-जणस्सु ॥५०॥

एक्कहिं अक्खिहिं सावणु, अन्नहिं भद्वउ ।

माहउ महि-अल-सत्थरि, गंडत्थले सरउ ॥

अंगिहिं गिम्ह, सुहच्छी-तिल-वणि मग्गसिरु ।

तहे मुद्वहे मुह-पंकइ आवासिउ सिसिरु ॥५१॥

वलयावलि-नियडण-भअेण धण उद्वभुअ जाइ ।

वल्लह-विरह-महा-दहहो थाह गवेसइ नाइ ॥५२॥

वप्पीहा पिउ-पिउ भणवि केत्तिउ रुअहि, हयास ।

तुह जलि, महु पुणु वल्लहइ, विहुंवि न पूरिअ आस ॥५३॥

हिअडा, फुट्टि तडत्ति कर, काल-क्खेवें काइं ?

देक्खउं हय-विहि कहि ठवइ पइं विणु दुक्ख-सयाइं ॥५४॥

हिअडा, पइं एहु वोल्लिअओ महुं अगइ सय-वार ।

फुट्टिसु पिर पवसंनि हउं, भंडय ढक्कर-सार ॥५५॥

जे महु दिण्णा दिअहडा दइअें पेवसंतेन ।

ताण गणंतिअे अंगुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥५६॥

मइं जाणिउ, पिअ विरहिअहं क-वि धर होइ विअलि ।

एवर मिअंकु वि तिहि तवइ जिह दिणमरु खय-गालि ॥५७॥

४७ तिम्मइ=गोली होती है । ५१. भद्वउ=मादों । ५२. उद्वभुअ=ऊंची भुजाएं  
करके जाई=जाती है । गवेसइ=खोजाती है । ५३ विहुंवि=दोनों की ।  
५४ काल-क्खेवे काइं=गमय बिताने मे क्या ? ठवइ=रखता है । दुक्ख  
सयाइं=गैकड़ों दुयों को । सयवार=शतवार ५७. विअलि=विकाल=  
संध्या समय ।

अन्वण लाइवि जे गया पदिअ पराया केन्धि ।  
 अक्स न सुअदिं सुहन्दिअदिं जिवं अम्हइं तिवं ते-वि ॥१८॥  
 रक्खइ सा थिस-हारिणी वे कर चुन्धिवि जीउ ।  
 पडिविअ-गुंजालु-जलु जेहिं अडोहिउ पीउ ॥१९॥  
 चूडल्लउ चुएणी-होइसइ, मुद्धि, कवेलि निहत्तउ ।  
 सासानल-जाल-भलक्किअउ वाह-सलिल-संसित्तउ ॥२०॥  
 जाइजइ तदिं देसइइ, लम्भइ पिअहो पमाणु ।  
 जइ आवइ तो आणिअइ, अहवा तं जि निवाणु ॥२१॥  
 संदेसे काइं तुहारेण, जं संगहो न मिलिज्जइ ? ।  
 सुइणतरि पिअं पाणिअेण, पिअ, पियास किं छिज्जइ ॥२२॥  
 जइ केवइं पावीसु पिउ, अकिआ कोड्ड करीसु ।  
 पाणिउ नवइ सरावि जिवं सव्वंगे पइसीसु ॥२३॥  
 एसी पिउ, रुसेसु हउं, रुट्ठी मइं अणणेइ ।  
 पग्गिम्भ एइ मणोरहइं दुक्करु दइउ करेइ ॥२४॥  
 पिअ-संगमि कउ निहडी, पिअहो परोक्खहो केम् ।  
 मइं विन्नि-वि विन्नासिआ, णिइ न अेम्भ न तेम्भ ॥२५॥  
 एड गृएहेप्पिणु ध्रुं मइं, जइ पिउ उव्वारिज्जइ ।  
 महु करिएव्वउ किंपि ण-वि, मरिअेव्वउ पर देउजइ ॥२६॥  
 अम्भड-वंचिउ वे पयइं पेम्मु निअत्तइ जावं ।  
 सव्वासण-रिउ-संभवहो कर परिअत्ता तावं ॥२७॥



१८. जेहिं....जिन हाथों से लाकर पिया ६०. निहितउ-निहित रखा हुआ ।  
 वाह.....वाष्पजल से गीला । सासा.....श्वास की अग्नि ज्वाला से  
 प्रदीप्त । २१. निवाणु=निर्वाण । २२. सुइणंतरि =स्वप्नांतर में ।

## मेरु तुंगाचार्य द्वारा संकलित:

अस्मीणउ सन्देसडउ नारय कन्ह कहिज्ज ।  
 जगु दालिदिदि दुत्थियउ वलिवन्धणह मुइज्ज ॥१॥  
 सउ चित्तह सट्ठी मणह वत्तीसडा हियांह ।  
 अस्मी ते नर दड्ढसी जे वीससइं तियांह ॥२॥  
 भोली तुट्ठवि किं न मूउ किं हूउ न छारह पुञ्जु ।  
 हिएडइ दोरी दोरियउ जिम मट्ठु तिम मुञ्जु ॥३॥  
 चित्ति विसाउ न चितीयइ रयणायर गुण पुञ्ज ।  
 जिम जिम वायइ विहि पडहु तिम नच्चिजइ मुंज ॥४॥  
 सायरु पा (खा) इ लंक गढु गढवइ दस शिरु राउ ।  
 भग्गपा (ख) इ सो भज्जि गउ मुंज म करलि विसाउ ॥५॥  
 गय गय रह गय तुरय गय पायक्कडा निभि ।  
 सगगट्ठिय करि मंतडऊ मुहुंता रुदाइच्च ॥६॥  
 च्यारि वइल्ला धेनु दुइ मिट्ठा बुल्ली नारि ।  
 काहुं मुंज कुडंवियाहं गयवर वज्झइं वारि ॥७॥  
 जे थक्का गोला नई हूँ वलि कीजूं ताह ।  
 मुंज न दिट्ठउ विहलउ रिद्धि न दिट्ठ खलाहं ॥८॥

१. अस्मीणउ=हमारा । सन्देसडउ=संदेश । कहिज्ज=कहिए । मुइज्ज=छोड़ दो ।
२. स्त्रियों के सी चित्त साठ मन और वत्तीस हृदय होते हैं, वे नर नष्ट हो जाते हैं जो स्त्रियों का विश्वास करते हैं ।
३. भोली=शरीर । दोरी दोरियउ=डोरी से बंधा हुआ । छारउ पुंजु=बूल का ढेर ।
४. मुंज, मन में खेद न कर, विधाता जैसा २ नगाडा जाता है वैसा २ तुझे नाचना है ।
५. भजि गउ=भजन होगया । विसाउ म करगि=विषादमत करो ।
६. पायक्कटानि=पैदल गिपार्ह । मिच्च=मृत्यु=नीकर । गगगट्ठिय=स्वर्ग स्थित । रुदाइच्च=रुद्रादित्य ।
७. वारि=द्वार पर । वज्झइ=बांधना है ।



जा मति पच्छइ सम्पज्जइ सा मति पहिली होइ ।  
 गुञ्ज भणइ गुणालवइ विवन न वेढइ कोइ ॥६॥  
 जईयइ रावणु जाइयउ दइगुइ इक्कु सरीरु ।  
 जण्णि वियम्भी चिन्तवइ कवणु पियावउं खीरु ॥१०॥  
 सइरु नहीं स राण न कु लाईउ नकु लाईइ ।  
 सउं पंगारिहिं प्राण कि न वइसानरि होमीइ ॥११॥  
 राणा सव्वे वाणिया जेसलु वट्टउ सेठि ।  
 काहूँ वाणिजहुँ माण्डीयउं अम्मीणा गढहेठि ॥१२॥  
 तइं गरुआ गिरनार काहूँ मणि मत्सरु धरिउ ।  
 मारीतां पंगार एकू सिहरु न ढालियउं ॥१३॥  
 जेसल मोडि म बांइ वलि वलि विरुप भावियइ ।  
 नइ जिम नवा प्रवाइ नवधण विणु आवइ नहीं ॥१४॥  
 वाढी तउं वढवाण वीसारतां न वीसरइ ।  
 सूना समा पराण भोगावइ तइं भोगवइ ॥१५॥

जा मति=जो बुद्धि । पच्छइ=पीछे वाद में । सम्पज्जइ=उत्पन्न होती है ।  
 वेढइ=धेरता है । १२. पियावउं=पिलाऊं । खीर=खीर=दूध । १५. गढहेठि  
 =गढ़ के नीचे । माण्डीयउं=मांड़ा=रचा बनाया । वणिजहु=वाणिज्य ।  
 मत्सरु=ईर्ष्या । मारीतां पंगार=खंगार के भरने पर । न ढालियउं=नहीं  
 ढाल दिया ।

# स्वयंभूच्छंद

मित्तु सककटु मत्तु दद्वयवगु <sup>१</sup>  
 रथ मामरुः दुप्पगमु  
 सो वि वंधु पादाण-खंडहिं  
 जह रामहो तह, लच्छि ववसायवन्त हो ।  
 भार्द-विघोण जिह जिह करइ विहीसगु सोओ  
 तिह तिह दुखेण रुवइ वाणर लोओ ।  
 सव्व गोविउ जइवि जोणइ ।  
 हरि सुट्ठवि आयरेण,  
 देइ दिट्ठी जहि कहि राही  
 को सककवि मंवेरेवि  
 दद्वयवगु रोहें पलोट्टउ, <sup>२</sup>  
 ठाम ठामहिं घाम संतट रत्तिहिं परिसंठिआ  
 रोमंयणवम चलिअ गंडिआ  
 दोसन्ति भवलुज्जला  
 जोन्दा-निदाण गोहन्ता <sup>३</sup>  
 पद सकदगु गहु सकाअ  
 सहि सरस, सलिल सरस  
 सरय मेह हिमि बहल विज्जुल  
 पट्टिअ-जग-मग मोह-अरु मवरिचारु पाउमु <sup>४</sup>

## स्वयंभुदेव १

रामकथा का उद्गम और कवि को आत्मलघुता

( १ )

रामकथा और नदी

वद्धमाण—मुह—कुहर—विगि गाय  
 रामकहा—एइ एह कमागय ॥  
 अक्खर—वास—जलोह—मणोहर  
 सु—अलङ्कार—छन्द—मच्छोहर ।  
 दीह—समास—पवाहावङ्किय ।  
 सकय—पायय—पुलिणालङ्किय ॥  
 देसीभासा—उभय—तडुज्जल  
 क वि दुकर—वण—सह—सिलाय ॥  
 अत्थ—वदल—कल्लोलाणिट्ठय  
 आसासय—समतूह—परिट्ठय ॥  
 एह रामकह—सरि सोहन्ती  
 गणहर—देवहिं दिट्ठ वहन्ती ॥  
 पच्छइ इन्दभूइ—आयरिएं  
 पुण्ण धम्मेण गुणालङ्करिएं ॥

कवि, अपने प्रसिद्ध काव्य 'पउम चरित' में स्वीकृत रामकथा को नदी का रूपक देता है, और हर प्रकार अपनी रामकथा की परम्परा को चौबीसवें तीर्थंकर महावीर से जोड़ता है ।

(२) वद्धमाण—वर्द्धमान, महावीर का नाम । मुहकुहर=मुखकुहर । कमागय—क्रमागत । अक्खरवास=अक्षर-व्यास । जलोह=जलोध=जल का समूह । मच्छोहर=मत्स्यधर, मछली धारण करने वाली । सकय=संस्कृत प्राच पामय=घन शब्द शिलातल ।

पुणु पदये नंसागगणं  
 कित्तिदरेण अणुत्तवाणं ॥  
 पुणु रविनेणाग्रिय-रमाणं  
 बुद्धिणं अयणादिय कडराणं ॥  
 पउमिणि-जणाणि-गन्ध-संभूणं  
 सारयण्य--रुय--अणुगणं ॥  
 अद--तणुणं पट्टहर--गत्तं  
 द्विधर--णासं पविरल--दन्तं ॥

यत्ता

गिम्मल-पुण्ण-पयित्त-कद-कित्तणु आदण्ड ।  
 जेण समागिज्जन्तणं धिर कित्ति विदण्ड ॥

एउ संधिहे उपरि वुद्धि थिय ॥  
 एउ रि सुअउ सत्त विहत्तियउ  
 छविहउ समास—पउत्तियउ ॥  
 छकारय दस—लयार ए सुय  
 वीसोवसग पच्चय घट्टय ॥  
 ए वलावल धाउ रिशाय—गणु  
 एउ लिङ्ग उणाइ वक्कु वयणु ॥  
 एउ रि सुणिउ पच्च—महाय कव्वु  
 एउ भरहु गेउ लक्खणु वि सव्वु ॥  
 एउ वुज्झिउ पिङ्गल—पत्थारु  
 एउ भम्मह—दण्डि—अलङ्कारु ॥  
 ववसाउ तो वि एउ परिहरमि  
 वरि रद्धावद्ध कव्वु करमि  
 सामण भास छुडु सावडड  
 छडु आगम—जुत्ति का वि वघड ॥  
 छडु होन्तु सुहासिय—वयणाइं  
 गामिल्ल—भास—परिहरणाइं ॥  
 एंहु सज्जण—लोयहों किउ विणउ  
 जं अवुहु पदरिसिउ अप्पणउ ॥  
 जइ एम विरुसइ को वि खलु  
 तहों हत्थुत्थल्लिउ लेउ छलु ॥

धत्ता

पिसुणें किं अरुमत्थिएण जसु को वि ण रुच्चइ ।  
 किं छण-चन्दु महागहेण कम्पन्तु वि मुच्चइ ॥

सत्त विहत्तियउ=सात विभक्तियां । छविहउ=छैं विघ । छकारय=छैं कारक ।  
 वीसोवसग=वीस-उपसर्ग । पच्चय=प्रत्यय । उणाइ-वक्कु=उणादि वाक्य ।  
 महाय कव्वु=महाकाव्य । पत्थारु=प्रस्तार । सामणभास=सामान्य भाषा ।  
 गामिल्ल-भास=ग्रामीण भाषा । पिसुण=पिशुन, दुष्ट ।

## हनूमान सीता संवाद—

प्रस्तुत सन्धि, पउम चरित के 'सुन्दर कांड' से है। पउम चरित-पद्मचरित-रामचरित्र, राम का सम्बन्ध सूर्य वंश से है, पद्म-कमल का भी सम्बन्ध सूर्य से है, शायद प्रतीक भाषा में रामचरित्र को पद्म चरित्र इसीलिए कहा गया ? स्वयंभू के पउम चरित में कांड हैं। विद्याधर, अयोध्या, सुंदर, युद्ध और उत्तर काण्ड। सीता का अपहरण अयोध्या कांड में हो चुकता है। विराधित और सुग्रीव के सहयोग से हनूमान को दूत बनाकर सीता के पास भेजा जाता है। प्रस्तुत पाठ में उन दोनों की यातचीत है; हनूमान से राम के मति आश्वस्त होकर सीता भोजन ग्रहण कर लेती है, इसके पूर्व वह भोजन से विरत थी। विजय का स्वप्न देखती है, जिसका फल है रावण की आमन्न मोत।

गय मन्दोयरि शिय-घरहों  
हरणुवन्तु वि सीयहें सम्मुद्रउ ।  
अग्गए' थिउ अहिसेय-करु  
णं सुरवर-लच्छिहें मत्त-नाउ ॥

( ३ )

मालूर--पवर--पीवर--थणाए'  
कुवलय-दल-दीहर-लोयणाए' ।  
पप्फुल्लिय--वर--कमलाणाणाए'  
हरणुवन्तु पपुच्छिउ दिद-मणाए' ॥<sup>१</sup>

(पद्धडिया दुवई)

सीता कुशल वार्ता पूछ रही हैं—

'कहें कहे वच्छ वच्छ बहु-णामहों  
कुसल-वत्त किं अकुसलु रामहों ॥  
कहें कहें वच्छ वच्छ कमलेम्भरणु  
किं विणिहउ किं जीवइ लक्खणु ॥

(३) मालूर=घेन का फल। ये सब सीता देवी के विशेषण हैं।

कहें कहे=कहो कहो। कुसलवत्त=कुशल वार्ता। विणिहउ=विनिहृत।

तं गिगुगोत्रि मिरसा पणमन्ते  
 अविस्त्रय कुसल-वत्त द्दणुवन्ते ॥  
 माणं माणं करे धीरउ गिय-सणु  
 जीवइ रामचन्द्र स-जणद्वण ॥  
 एवरि परिट्ठउ लीद-विसेसउ  
 तवसि व सव्य-सङ्ग-परिसेसउ ॥  
 चन्दु व बहुल-पक्ख-स्वय-स्त्रीणउ  
 गियइ व रज्ज-विद्योय-विहीणउ ॥  
 रक्खु व पत्त-रिद्धि-परिचत्तउ  
 सुकइ व दुक्कर कह चिन्तन्तउ ॥  
 तरणि व गिय-रिगोइं परिवज्जिउ  
 जलणु व तोय-तुसार-परज्जिउ ॥

वत्ता—

इन्दु व चवण-काले ल्हसिउ दसमिहें आगमणें जेम जलहि  
 खाम-खामु परिभीण-तणु तिह तुम्ह विओएं दासरहि ॥

( ४ )

लक्ष्मण आपकी बहुत याद करता है—

अणुण वि मयरहरावत्त-धरु  
 सिर-सिहर-चडाविय-उभय-करु ।  
 गिय-जणुणि वि एव ण अणुसरइ  
 सोमिति जेम पइ संभरइ ॥<sup>१</sup>

(पद्धडिया दुवई)

---

परिवज्जिउ=परिवर्जित । चवण-काले=चयनकाल, प्रस्थान के समय ।  
 परिभीण तणु=परिक्षीण तनु ।

(४) मयर हरावत्त-धरु ।

अणुसरइ=अनुसरति; अनुसरण करता है । सुमरइ=स्मरति-याद करता है

सुमरइ शिख-एन्दण माया इव  
 सुमरइ सिहि पाउस-छाया इव ॥  
 सुमरइ जण पहु-मज्जाया इव ॥  
 सुमरइ भिच्चु सु-सामि-दया इव  
 सुमरइ करहु करीर-लया इव ॥  
 सुमरइ मत्त-हत्थि वणराइ इव  
 सुमरइ मुणिवरु गइ-पवरा इव ॥  
 सुमरइ शिद्धण धण-संपत्ति व  
 सुमरइ सुरवरु जम्मुप्पत्ति व ॥  
 सुमरइ भविउ जिणेसर-भत्ति व  
 सुमरइ वड्याकरुण विहत्ति व ॥  
 सुमरइ ससि संपुण्ण पहा इव  
 सुमरइ बुद्धयण सुकड कहा इव  
 तिह पइ सुमरइ देवि जणहरा  
 रामहों पासिउ सो दूमिय-मण ॥

घत्ता

एककु तुहारउ परम-दुहु, अण्णेक्कु विरहु-तणयहों तणउ  
 एककु रत्ति अण्णेक्कु दिणु सोमितिहें सोक्ख कहिं तणउ ॥

( ५ )

सीता की प्रतिक्रिया और अपहरण की कहानी—

तो गुण-गण-सलिल-महाणइहें  
 रोमञ्चु पवड्हिउ जाणइहें ।

---

पाउस छाया इव=पावस की छाया की तरह । पहु मज्जाया=प्रभु मर्यादा=  
 राजा की मर्यादा । भिच्चु=भृत्य-ग्रन्थर । मत्त-हत्थि=मत्त हस्ति, मतवाला  
 हाथी । वनराइ इव=वनराजी-वनमाला के समान । जिणेसर भत्ति=  
 जिनेश्वर भक्ति । वड्याकरुण=वैयाकरण । विहत्ति=विभक्ति । पहा इव=  
 प्रभा के समान । सुकड-कहा=सुकवि कथा । सोमिति=सोमित्री=लक्ष्मण ।

(५) पवड्हिउ=प्रवधित; बढ़ गया । जाणइहें=जानकी का । कञ्चुउ=कञ्चुक-



कञ्चुउ फुट्टे'वि सय-खन्हु गउ  
रां खलु अलहन्तु विसिट्ठ-मउ ॥'

(पद्धडिया-दुवई)

पढमु सरीरु ताहें रोमञ्चिउ  
पच्छए' एवर विसाए' खञ्चिउ ॥  
दुक्करु राम-दूउ एहु आइउ  
मञ्छुडु अएणु को वि संपाइउ ॥  
अत्थि अणेय एत्थु विज्जाहर  
जे णाणाविह-रूव-भयंकर ॥  
सव्वहं मइ' सव्भाव णिरिक्खिय  
चन्दणट्ठि वि चिरु णाहिं परिक्खिय ॥  
णं वण-देवय थाणहों चुक्की  
"मइ' परिणहों" पभएन्ति पढुक्की ॥  
एवर णियाणों हूअ विज्जाहरि  
किलकिलन्ति थिय अम्हहं उप्परि ॥  
लक्खण-खग्गु णिएवि पणट्ठी  
हरिणि व वाह-सिलीमुह-तट्ठी ॥  
अण्णेक्कए' किउ णाउ भयंकर  
हउ मि छलिय विच्छोइउ हलहरु ॥

धत्ता

कहिं लक्खणु कहिं दासरहि आयहों दूअत्तणु कहिं तणउ ।  
माया-रूवें पिउ करे'वि मणु जोअइ को वि महु त्त्तणइ ॥

चोली (अंगिया) । फुट्टे'वि = फूट कर । दुक्कर=दुष्कर, कठिन । मञ्छुडु=  
शायद । संपाइउ=प्राप्तः आया है । एत्थु=यहां । विज्जाहर=विद्याधर ।  
मइ'=मैंने । वण देवय=वन देवता । थाण हो चुक्की=स्थान से चूक गई ।  
पढुक्की=पढ़ेची । णियाणों=निदान में, अन्त में । खग्गु=खड्ग-तलवार ।  
तट्ठी=व्याघ्र के मुंह के त्रस्त । विच्छोइउ=विश्रुव किया । कहिं तणउ=  
किसका कैसा ।

## हनूमान की कूट परीक्षा—

आढवमि खेड्डु वरि एण सहुँ  
 पेक्खहुं कवणुत्तरु देइ महु ।  
 माणवेंण होवि आसङ्खियउ  
 किह लवण-महोवहि लंघियउ ॥<sup>१</sup>  
 पच्चारिउ गिय-मणें चिन्तन्तिणं  
 'जइ तुहुं राम-दूउ विणु भन्तिणं' ॥  
 तो किह कमिउ वच्छ पइं सायर  
 जो सो णक्क-ग्गाह-भयङ्कर ॥  
 कच्छय-मच्छ-दच्छ-पुच्छाहउ  
 संसुमार-करि-मयर-सणाहउ ॥  
 जोयण-सयइं सत्त जल-वित्थरु  
 णिच्च-णिगोउ जेम अइ-दुत्तरु ॥  
 एककु महोवहि दुप्पइसारो  
 अण्णु वि आसाली-पायारो ॥  
 सो सव्वहुं दुलङ्ग संसार व  
 अवुहहुं विसमउ पच्चाहार व ॥  
 तहों पडिबलु परिवद्धिय-हरिसउ  
 वज्जाउहु वज्जाउह-सरिसउ ॥  
 अण्णु महाहवें विप्फुरियाहरि  
 केम परज्जिय लङ्कामुन्दरि ॥

- (६) आढवमि=प्रारम्भ करता हूँ । खेड्डु=खेल । आसङ्खियउ=पूछा । नक्क-ग्गाह=नक्क ग्राह=मगर मच्छ । संसुमार=शिशुमार, एक जलचर । णिच्च-णिगोउ=नित्य निगोद । आसाली-पायारो=आसाली विद्या का परकोटा । पच्चाहार=व=प्रत्याहार के समान । परिवद्धिय हरिसउ=परिवर्धित हर्ष । वज्जाउहु=वज्जायुध । महाहवें=महायुद्ध में । पइदु=प्रविष्ट ।

आयइं सञ्चइं पदिहरंवि तुहं लङ्का-णगरि पट्टुकिह ।  
अट्ट वि कम्मइं णिदलंवि वर-सिद्धि-महापुरि सिद्धु जिह ॥

( ७ )

हनुमान का प्रत्युत्तर—

तं णिसुणंवि वयणु महग्घविउ  
विसेहपिणु अंजणोउ चविउ ।  
परमेसरि अज्ज वि भान्त तउ  
जायेहि वज्जाउहु समरं हउ ॥१॥  
जोवेहि वसिकिय लङ्कासुन्दरि  
'लइय सावि कुञ्जरंण व कुञ्जरि ॥  
णिहयासालि महोवहि लङ्घिउ  
एवहि रात्रणो वि आसङ्घिउ ॥  
एव वि जइण देवि पत्तिज्जहि  
तो राहव-सङ्कोउ सुणेज्जहि ॥  
जइयहु वण-वासहों णोसरियइं  
दसउर-कुव्वर-पर पइसरियइं ॥  
णम्मय विञ्जु तावि अहिणाणइ  
अरुणागम-रामउरि-पयाणइं ॥  
जयउर-णन्दावत्त-णिवाणइं  
खेमञ्जलि-वंसत्थल-थाणइं ॥  
गुत्त-सुगुत्त-जडाइ-णिवेसइं  
खग्गु सम्बु चन्दणहि पएसइं ॥

(७). महग्घविउ = महाघित = पूज्यनीय या मूल्यवान् । अंजणोउ = ग्रांजनेय ।  
चविउ = बोला । पत्तिज्जहि = विश्वास करती हो । जइयहु = जव । वनवास  
हों = वनवास के लिए । दसउर = कुव्वर = दसपुर-कूवडपुर । णम्मय = नर्मदा ।

पर-तिय मञ्जु मंसु महु घञ्चहों  
जें चुक्कहों संसार-पवञ्चहों ॥

घत्ता

मं जाणेज्जहों पहरु गउ जमरायहो केरउ आण-करु ।  
तिक्खेहिं णाडि-कुटारणहिं दिवे दिवे छिन्देवउ आउ-तरु

( १० )

स्वप्न दर्शन-

णिसि-पहरे चउत्थए ताडियाए  
णं जग-कवाडे उग्घाडियए ।  
नहिं तेहए काले पगासियउ  
तियडए सिविणउ विण्णासियउ ॥  
'हले हले लवलए लइए लवङ्गिए  
सुमणे सुवुद्धिए तारे तरङ्गिए ॥  
हले कक्कोलिए कुवलय-लोयणे  
हले गन्धारि गोरि गोरोयणें ॥  
हले विञ्जुप्पहे जालामालिणि  
हले ह्यमुहि गयमुहि कङ्कालिणि ॥  
सिविणउ अञ्जु माए मइ दिट्ठउ  
एक्कु जोहु उब्जाणें पइठ्ठउ ॥  
तरु तव सव्वु तेण आकरिसिउ  
वज्जे जिह वण-भङ्ग पदरिसिउ ॥  
सो वि णिवद्धउ इन्दइ-राए  
पाव-पिण्डु णं गरुअ-कसाए ॥  
पट्टणे पइसाहिउ वेढेप्पिणु

८. रयणकेसि=रत्नकेशी एक विद्याधर । सहसगइ=सहस्रगति । वइसा तारियउ-  
बैठाया । अंगुत्थलउ=अंगूठी । पइद्धउ=प्रवर्धित । चउत्थउ=चोथा । जम-पडहउ=यम  
पटह=यम का नगड़ा । छिन्देवउ=काटा जाता है । आउ-तरु=आयुरूपी वृक्ष ।

१०. उग्घाडियए=उद्धाटित होने पर । पगासियउ=प्रकाशित हुआ । तियडए=  
विजटा । वेढेप्पिणु=घेर कर । तावऽण्णेक्के=तब एक श्री ने । आवट्टिय=  
आवर्तित कर दी घुमा दी ।

घत्ता

एहु सिथिणउ सीयहें सहलु जसुरामहो वित्रज जणदणहों ।  
सहु परिवारे सहं बलेण खय-काल पढुक्कु दसाणण हो ॥

( १२ )

लंका सुन्दरी का प्रवेश—

तहिं अवसरे पीण-पओहरिए  
अरुणुगमे लङ्कासुन्दरिए ।  
इर-अइरउ विणिए मि पेसियउ  
हणुवन्तहो पासु गवेसियउ ॥  
जहिं उज्जाणे परिट्ठउ पावणि  
सयल-णग्गिन्द-विन्द-चूडामणि ॥  
तहिं संपत्तउ विणिए वि जुवइउ  
णं सिव-सासए तवसिरि-सुगइउ ॥  
णं खम-दयउ जिणुगमे दिट्ठउ  
जयकारेप्पिणु पासे णिविट्ठउ ॥  
तेण वि ताहिं समउ णिउ जम्पेवि  
कण्ठउ कञ्ची-दामु समम्पेवि ॥  
पुण् विणएत्त हलीस-मणोहरि  
'भोअण तुम्ह केम परमेसरि ॥'  
अक्खइ सीय समीरण-पुत्तहों  
'वासर एककवीस मइ भुत्तहो ॥'  
जाम ण पत्त वत्त भत्तारहो  
ताम णिवित्ति मज्झु आहारहो ॥  
अज्जु णवर परिपुण्ण मणोहर  
तं जे भोज्जु जं सुअ रामहो कह ॥'

घत्ता

तं णिसुणेवि पवणहो सुएण अवलोइउ मुहुअइरहे तणउ  
'गम्पिण अक्खु विहीसणहो वुच्चइसीयहें करि पारणउ ॥

११. पीण-पओहरिए=पीन पयोधरा । अरुणुगमे=अरुण-उद्गमे=सूर्योदय होने पर । इर-अइरउ=चिरा, अचिरा । तवसिरि=तपश्री । णिविट्ठउ=बैठा । विणएत्त=विज्ञप्तः, निवेदित किया । पत्त=प्राप्ता=पायी ।

## हनुमान की वापसी और प्रतिवेदन—

अणु वि आलिङ्गे वि गुण-घण्ट  
 सन्देसउ अक्खु महु त्ताणउ ।  
 “वल तुज्जु विओण जणय-सुय  
 थिय लीह-विसेस ए कंढ विमुअ ॥”  
 भीण मयङ्क-लेइ गंढ-गहिय व  
 भीण मुरन्द-रिद्धि तव-रहिय व ।  
 भीण कुदेस-मज्जे वासाण व  
 भीणाऽबुद्ध-मुहं सुकइ-सुवाण व ॥  
 भीण-दिवायरस्-दसणं रत्ति व  
 भीण कु-जणवणं जिणवर-भत्ति व ॥  
 भीण दुभिवखे अत्थ-सपत्ति व  
 भीण बुद्धत्तणेण वल-सत्ति व  
 भीण, चारित्त-विहूणहो कित्ति व  
 भीण कु-कुलहरं कुलवहु णित्ति व ।”  
 अणु वि दसरह-वंस-पगासहो  
 वच्छत्थले जय-लच्छि-णिवासहो ॥  
 रणे दुव्वार-वइ रि-विणिवारहो  
 तहो स-देसउ णेहि कुमारहो ॥  
 बुच्चइ “पइ” होन्तेण वि लक्खण  
 अच्छइ सीय रुयन्ति अलक्खण ॥”

घत्ता

णउ देवेहि णउ दाणवेहि णउ रामेवइरि-वियारण ।  
 पर मारेव्वउ दहवयण सइ भुअ-जुअलेण तुहारण ॥



भिज्जइ कमारु सुसियाणणउं ।  
 एं करिणि विरहे वण वारणउ ।  
 जउ जउ सीमतिणि संचरइ ।  
 तउ तउ चटुयार-सयइ करइ ॥  
 सकरहि दिणि गयणाणंदणिण ।  
 णिब्भच्छिउ दुमयहो णंदणिश्रे ॥  
 एत्थु करंति पुरि गंधव्व पंच महु पेसण ।  
 जइ जाणंति पइं ते णंति, पाव जम-सासण ॥१॥  
 जोएप्पिणु दोवइ-मुह-कमलु ।  
 पभणइ णव-णाय-सहास-वल्लु ॥  
 हउं सुहइ-सएहिं पडिवज्जियउ ।  
 पइं, सुंदरि, णवर परज्जियउ ॥  
 पडिमल्ल ए हरि-हर-चउवयण ।  
 पंचहिं गंधविहिं का गणण ॥  
 छुडु करि पसाउ जीवावि मइं ।  
 भुंजावमि वसुमइ-अच्छु पइं ॥  
 अवहेरि करिवि गय दुमय-सुय ।  
 तहो णवमी कामावत्थ हुय ॥  
 णिय-ससहे कहिज्जइ कइकइहे ।  
 मणु रंजहि आयहे तीमइहे ॥  
 जहिं अच्छामिं हउ एयंग-मणु ।  
 तहिं पट्ठवि लेवि समालहणु ॥

को पज्जलइ=प्रज्वलित=जलता है । अणंग-सिहि=काम की ज्वाला ।  
 भिज्जइ=क्षीण होता है । सुसियाणणउ=शोषित मुख वाला । वण-वरणउ=  
 जंगली हाथी । चटुयार-सयइ=सैकड़ों चाटुकारताएँ । एकहिं दिणि=एक  
 दिन । गयणंदणिण=नेत्रों को आनंद देने वाली ने ; विब्भच्छिउ=डांटा  
 पेसण=प्रेषण=सेवा, आज्ञा ।

जोएप्पिणु=देखकर । प्रभणइ=प्रभणति=कहता है । णव-णाय-सहास-वल्लु  
 हजारों नवभागों (गज) के बल वाला । सुहइ-सएहिं=सैकड़ों सुभटों द्वारा  
 उं=मैं । णवर=केवल । गणण-गणना=गिनती । पसाउ=प्रसाद । छुडु=  
 शीघ्र । जोवावि=जिलाओ । पइं=तुम्हें । अवहेरि=अवहेलना=उपेक्षा ।

विणयेण विउज्जाविउ संगुहं ।

एणं सीह-किसोयरि पंच मुहं ॥

रोवइ दुमय—सुय दरिसंति किणंकिय—इत्या ।

पइं जीवंतयेण महु अही भइय अवत्था ॥३॥

### भाग्य की आलोचना—

तो भणइ विओयरु अरि—दमणु ।

कहि, काइं, माथे, किउ आनमणु ॥

परिभविय केण, कहो तणउं दुहु ।

पक्खालहि लोयण, लुहहि मुहु ॥

तं णिसुणिवि दुमय—राय—दुहिय ।

पभणइ छण—छुद्ध—हीर—मुहिय ॥

महु कवणु सुह अच्चइ कवण दिहि ।

जहिं तुम्ह वि वट्टइ एह विहि ॥

जो सामि—सालु महि—मडल हो ।

थिउ हरिवि लच्छि आहंडलहो ॥

सो विहि—परिणामे संचरइ ।

घरि मच्छ हो णिच्च सेव करइ ॥

जो मुट्ठि—पहारें दलइ गिरि ।

जं खणु वि ण मेल्लइ सुहइ—सिरि ॥

दिशामों के अन्तराल को काला बनाने में समर्थ । किम्मीर=एक राक्षस ।

विओरहो=वृक्कोदर के । विउज्जावि=समझाया । पंचमुहुं=सिंह ।

किणंकिय=हस्त्या=कलकित हस्त । भयइ=हुई । अवत्थ=अवस्था ।

४. परिभाविय=प्रपमानित किया । कहो तणउं=कोन सा । पक्खालहि=प्रक्षालयति=

पोंछ लो । छण-छुद्ध-हीर मुहिय=उत्सव में चमकते हीरों के समान मुखवाली ।

दिहि=भाग्य । वट्टइ=वतते है । सामि-सालु=स्वामि श्रेष्ठ । विहि-परिणामे=

भाग्य के परिणाम से । मच्छहो=मत्स्य (गज) के । मुट्ठि पहारें=मुट्ठी के



कीचक की कूट स्वीकृति एवं कीचक का भोग के पंजे में फँसना—

पदियण्णु मच्चु जं दोवड्ढे ।  
 दुब्बार-जार-मारण-महिण ॥  
 आविज्जड नच्चण-साल तुट्ठ ।  
 तं माणहुं विणिण-वि सु-रय-सुट्ठ ॥  
 गय तेत्थहो कट्ठिउ विओयरहो ।  
 विडु गिवडिउ दिट्ठो-गोयरहो ॥  
 भीमेण वि तं पदियण्णु रणु ।  
 अ-हिम-यर ताम गउ अत्थवणु ॥  
 सेणा-वड्ढ लेवि पसाहणउ ।  
 संकेय-भयणु गउ अप्पणउ ॥  
 जहिं भीमसेणु थिउ पड्सरिवि ।  
 जहि सीहु कुरंगहो कमु करिवि ॥  
 तहिं घंघु विस्तथु पड्ढु विडु ।  
 ण-उ जाणइ मंडिउ मरण-पिडु ॥  
 रायाणुओण चिहुइ दिं घरिउ ।  
 णं कालें पढम कवलु भरिउ ॥  
 चित्तिउ कीयओण, लड्ढ, हउं गंधव्वे मारिउ ।  
 ण-उ सइलिधिं-करु एहु कालें हत्थु पसारिउ ॥८॥

८. दुब्बार-जार मारण-महिण=दुर्वार जार को मारने की गरज से । सेणावड्ढ=सेनापति । पसाहणउ=प्रसाधन । घंघु=घोंघा रयाणुएण=राजा के अनुगामी ने । चिहुरेहिं=वालों से । पसारिउ=फँसा लिया ।

कीचक की कूट स्त्रीकृति एवं कीचक का भोग के पंजे में फंसना—

पडिवण्णु सवु जं दोवइअे ।  
 दुव्वार-जार-मारण-महिए ॥  
 आविज्जइ नच्चण-साल तुहु ।  
 तं माणहुं विण्णि-वि सु-रय-सुहु ॥  
 गय तेत्थहो क्हिउ विओयरहो ।  
 विडु णिवडिउ दिट्ठी-गोयरहो ॥  
 भीमेण वि तं पडिवण्णु रणु ।  
 अ-हिम-यरु ताम गउ अत्थवणु ॥  
 सेणा-यइ लेवि पसाहणउ ।  
 संकेय-भवणु गउ अप्पणउ ॥  
 जहिं भीमसेणु थिउ पइसरिवि ।  
 जहिं सीहु कुरंगहो कमु करिवि ॥  
 तहिं घंघु विसत्थु पइट्ठं विडु ।  
 ण-उ जाणइ मंडिउ मरण-पिडु ॥  
 रायाणुअेण चिहुइं धरिउ ।  
 णं कालें पढम कवलु भरिउ ॥  
 चित्तिउ कीयअेण, लइ, हउं गंघव्वे मारिउ ।  
 ण-उ सइलिधि-करु एहु कालें हत्थु पसारिउ ॥८॥

८. दुव्वार-जार मारण-महिए=दुर्वार जार को मारने की गरज से । सेणावइ=सेनापति । पसाहणउ=प्रसाधन । घंघु=घोंघा रायाणुएण=राजा के अनुगामी ने । चिहुइं=वालों से । पसारिउ=फँला लिया ।

द्वंद्व युद्ध—

तो भिडिय परोप्पर रण-कुसल ।  
 त्रिणिण-वि एव-णाय-सहास-वल ॥  
 त्रिणिण-वि गिरि-तुंग-सिंह-सिहर ।  
 त्रिणिण-वि जल-हर-रव-गहिर-गिर ॥  
 त्रिणिण-वि दट्ठोदठ रुदठ-वयण ।  
 त्रिणिण-वि गुंजा-हल-सम-णयण ॥  
 त्रिणिण-वि एह-यल-णिह-वच्छ-यल ।  
 त्रिणिण त्रि परिहोवम-भुय-जुयल ॥  
 त्रिणिण-वि तणु-तेयाहय-तिमिर ।  
 त्रिणिण-वि जिण-चरण-कमल-णमिर ।  
 त्रिणिण-वि मंदर-परिभमण-चल ।  
 त्रिणिण-वि त्रिणिणाय-करण-कुसल ॥  
 त्रिणिण-वि पहरंति पहर-खभिहिं ।  
 भूय-दंडिहिं वज्ज-दंड-समिहिं ॥  
 पय-भारिहिं भारिय त्रिहि-मि-महि ।  
 महि-पडण-पेल्लिणाहित्थ महि ॥  
 भीमु समाहयउ वच्छ-त्थलि मुट्ठि-पहारें ।  
 कह-वि ए णिण्डिउ महि-यलि सह रुद्धिगारें ॥६॥

- 
६. गुंजाहल-सम-नयण=मूंगों के समान लाल अखों वाले । परिहोवम-भुय-जुयल=परिखा के समान वक्षस्थल वाले । तणुतेयाहय-तिमिर=शरीर के तेज से ग्रन्थकार को नष्ट करने वाले । जिन चरण कमल णमिर=जिनके चरण कमलों को नमस्कार करने वाले ।

कीचक वध—

सेणावइ पेक्खिवि अ-तुल-वल्लु ।  
 ओहुल्लिउ भीमहो मुह-कमलु ॥  
 किय होसइ महु जस-दाणि रणि ।  
 वज्जेसइ अ-यस-पढहु भुवणि ॥  
 किय होसइ जण-वञ्चे जंपणउं ।  
 कह-कहव-वि धीरवि अप्पणउं ॥  
 आयासु करिवि शिय-भुय-जुयलि ।  
 हउ मुट्ठि-पहारिं वच्छ-यलि ॥  
 घाएण जि चइवस-णयरु णिउ ॥  
 सो कीयउ कुम्मागारु किउ ॥  
 पइसारिय हत्थ-पाय डयरि ।  
 णं पुंजिउ आमिस-पुंजू घरि ॥  
 णीसारिवि भीमु महा-भुयञ्चे ।  
 जाणाविउ दुमय-राय-सुयञ्चे ॥  
 गंधन्निहिं विड-भड्डु णिट्ठिउ ।  
 पेयाहिव पथि पट्ठविउ ॥  
 थाइय पवर भड, मरु-मारिउ कीयउकेण ।  
 पंच-जणाहिञ्चेण घरु वेढिउ भाय-सञ्जेण ॥१०॥

- 
१०. पेक्खिव=देखकर । ओहुल्लिउ=नीचे झुक गया । वज्जेसइ=बजेगा । अयस-पढहु=अपयश का डंका । जंपणउं=निन्दा । कुम्मागारु=कूर्माकार । डयरि=पेट में ।

# भाइयों द्वारा हत्यारे की खोज एवं द्रौपदी की विकराल मुद्रा—

उज्जोउ करियि शिञ्जाइयउ ।  
 सन्चउ गंधविहिं घाइयउ ॥  
 एवउ सरीरि ण कहिं मियणु ।  
 ण-उ ओक्कु-वि करु ओक्कु विचरणु ॥  
 अण्णेत्तहे दीसइ दुमय-सुय ।  
 बाहु-लयालिगिय-सिद्धिण जुय ॥  
 णं काल-रत्तिदुद्धं सणिय ।  
 णं असणि सदायें भीसणिय ॥  
 णं विसहरि आसीविस-भरिय ।  
 णं रवखसि भुयण-भयंकरिय ॥  
 णं परम-कुट्ठाण जम-सासण्हो ।  
 आसंक जाय सव्वहो जण्हो ॥  
 मथर-द्धय-आणोवद्धिउ ।  
 ओट्टु आयहे कारणि विद्धिउ ॥  
 लइ ओवहिं काइं विद्याण्णेण ।  
 परिपुच्छिअेण किं राण्णेण ॥  
 दोवइ 'सवेण सट्ठं' थावि उप्परि मज्झयाजाण्हो ।  
 कीयथ-भाउ-सउ सउंशुट्टु चलिउ मसाण्हो ॥११॥

- 
११. वसु = अणु = पान । अण्णेत्तहे = एक दूधरी जगह । काल-रत्ति = काल रात्रि ।  
 दुद्धं सणिय = दुरभंगीय । असणि = गण । सदायें = स्तभाय से । आसीविस-भरिय =  
 सिपाकदांत वाली । रवखसि = राक्षसी । कुट्ठाणी-गली = पगट्टी । सवेण = जय  
 के राण । नोगली = अनोखी । भंगि = भंगिमा । मुगलिय पे.सु = खुले हुए घात ।  
 उण्णाग = उत्तात ।

## द्रौपदी का चीत्कार और भीम का प्रकट होना—

शिञ्जंती कंदडु दुमय-सुय ।  
 गंधव्वहु, धावहु, काइं सुय ॥  
 अहो जय जयंत विजयंत-घरि ।  
 जयसेण जयावह-रक्ख करि ।  
 तो भी मुण कुह्णिणिहिं माइयउ ॥  
 भंजिवि पाथारु पथाइयउ ।  
 अण्णेत्तहे जेत्तहे वइरि ए-वि ॥  
 उप्पाइय नोक्खी भांग क-वि ।  
 मुक्कलिय-केसु उक्खाय-तरु ॥  
 पच्चक्खु एाईं थिउ रयणि-यरु ।  
 सबडंमुहुं दीमइ कीयअेहिं ॥  
 जमु दंड-पाणि एं भीयअेहिं ।  
 छड्ढिज्जइ मडया-जाणु त-हिं ॥  
 एउ-एाय पणट्ठ, पइट्ट कहि ।  
 पल्लट्ट विओयरु गिय-भवणु ॥  
 पडिवणु दिवायरु उगमणु ॥  
 संकप्प उट्ट मणि तहो मच्छहो अ गिहय-मल्लहो ।  
 कइकइ सिक्खावइ, सयलिधि गिवासहो घल्लहो ॥१२॥

---

सवडंमुहुं=सामने मुख । छड्ढिज्जइ=छोड़ दी गई । पणट्ठ=नष्ट हो गए ।  
 पइट्ट=कहीं चले गए । पल्लट्ट=पलटा ।

## राजा की प्रतिक्रिया—

तर्हि अवसरि दुमय-एहि-सुय ।  
 पक्खालिय-अ-गोबंग-भुय ॥  
 लक्खिज्जइ सवल जणेण किह ।  
 पट्टणि पइसंति भवित्ति जिह ॥  
 सिय-वलयाल-किय-कर-यलहो ।  
 गय स-रहसु पास विहंदलहो ॥  
 पच्छण-पउत्तिहिं वज्जारिवि ।  
 उत्तरइ समाणु खेडु करिवि ॥  
 अप्पणउ णिहेलणु जाइ किर ।  
 उच्छलइ सुजेट्ठहो ताम गिर ॥  
 जा-जाहि भडारिए काह-मितुहुं ।  
 राजलहो स-णयरहो देहि सुहु ॥  
 धट्ठज्जुण-ससए सम्मुणएण ।  
 वोल्लिज्जइ रोस-वसं-गअएण ॥  
 जइ एवहिं वल्लिय कह-वि पइं ।  
 तो पुरु घाएवउ सयलु मइं ॥  
 जइ पुणु थत्ति महु वरि तेह दिवसउ देसहु ।  
 पुएण-मणोरहि य तो रज्जु सइं भंजसहु ॥१३॥

- 
१३. भवित्ति=भवितव्यता=होनहार । स रहसु=सहर्ष । विहंदलहो=अर्जुन के ।  
 पच्छण-पउत्तिहिं=प्रच्छन्न उक्तियों से । सुजेट्ठहो=जेठे के (युधिष्ठिर के)  
 र.लहो=राजकुल के । स-णयरहो=नगर-महित । धट्ठज्जुण-ससए; घट्ट  
 अर्जुन को वहन से । सम्मुणएण=समुन्नत । एवहिं=इस समय । घाएवाउ=  
 घात करूंगा । भुंजसहु=भोगोगे ।

# महाकवि पुष्पदन्त

आत्मलघुता और दुर्जननिंदा

( १ )

अकलंक कविल कण्ठर मयाइं  
 दियसुगय पुरंदरणयसयाइं ।  
 दत्तिल त्रिसाहिलुद्रा रियाइं  
 एउ णायइं भरहवियारियाइं ।  
 एउ पीयइं पायंजल जलाइं  
 अइहासपुगणइं शिम्मलाइं ।  
 भावाहिउ भारवि भासु वासु  
 कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।  
 चउमुहु सयंभु सिग्गिरिसु दोणु  
 णालोइउ कइ ईसाणु वाणु ।  
 एउ धाउ ण लिंगु ण गण सभासु  
 एउ कम्मु करणु किरियाणिवेसु ।

- 
१. अकलंक कविल-जीताचार्य अकलंक, कवि, सांख्य, दार्शनिक, कण्ठर-वैज्ञानिक दार्शनिक. दिय द्विज वेद पाठक; सुगल=बौद्ध, पुरंदरणय=चर्वाकमत के संस्थापक (पुरंदर) के मिद्वान्त । दत्तिल=दत्तिल और त्रिसाहिल संगीतकारों की रचनाएं; भरह=भरत के रचे नाट्य । पयंजल जल=पतञ्जलि का शास्त्र; इतिहास और निर्मल पुगण । भावाधिक भारवि, नाटककार भास, महाभारत का व्यास कवि कोहल; चतुर्मुख, पद्धिभिय वद्ध काव्य का रचयिता स्वयंभू. कोमल वाणी कालिदास; श्री ह्य, द्रोण, ईशान और वाण; आयमु = आयम ।



एउ संवि ए कारउ पयसमत्ति  
 एउ जाणिय मइं एकक वि विहत्ति ।  
 एउ बुझिउ आयमुमहवासु  
 सिद्धन्तु धवल जयधवल एामु ।  
 पडु रुदडु जडणिएणामयारु  
 परियच्छिउ एालंकारमा ५ ।  
 भिगल पत्थारु समुहि पडिउ  
 ए कया वि मटारइ चित्ति चडिउ ।  
 जसइंधु निंधु कल्लोलसित्तु  
 ए कलाभोसलि हियउ एहिन्तु ।  
 हउं वप्प एारक्खए कुक्खिमुक्खु  
 एारवेसें हिडमि चम्मरुक्खु ।  
 अइदुग्गमु होउ मडापुगणु  
 कुडएण मवइ को जलणिहारु ।  
 अमरासुर गुरुयण मणदरेहिं  
 जं आमि कियउ मुणिएणदरेहिं ।  
 त हउं मि कहमि भत्तीभरेण  
 किं एहि ए भभिज्जइ महुयरेण ।  
 एहु विणउ पयासिउ सज्जणाहं  
 मुहि मसिकुचउ कउ दुज्जणाह ।

घन्ता

धरे धरे भमउ असारउ दुणयगारउ विवगेक्खए किं अक्खइ ।  
 लइ मइं सो मोक्कल्लिउ खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥

१. धवल जय धवल=जीनों के सिद्धन्त शास्त्र; रुदडु=रुद्रट जड=जड़त्व का नाशक । भिगल का प्रस्तार । कुक्खि मुक्खु=प्रक्षिपूर्व । हिडमि=घूमता हूं । अइ दुग्गमु=अत्यन्त दुर्गम । मवइ=माप सकता है । कुडएउ=कुडव=छोटी नाव । जलणिहारु=समुद्र । भत्तीभरेण=भक्ति से भर कर । मसि कुचउ=मसी कूची । असारउ=सारहीन । दुणयसारउ=दुर्नय कारक, बुरा करने वाला; मोक्कल्लिउ=छोड़ दिया ।

## भरत बाहुवलि युद्ध

‘आदि पुराण’—आदि तीर्थंकर ऋषभ का जीवन चरित्र है; यह महापुरुषों का एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है। ऋषभ देव १४ वें कुलकर नाभिराय के पुत्र थे। उनका युग—देवभूमि की समाप्ति और कर्मभूमि (कृषि सभ्यता) के आरम्भ का युग था। ऋषभ की दो पुत्रियाँ थीं; यशोवती और सुनन्दा ! यशोवती से १०० पुत्र और एक कन्या ब्राम्हिः भरत उनमें बड़ा था। सुनन्दा से सुन्दरी और बाहुवलि। ऋषभ राज्य का बेटों में बटवारा कर, कैलाश पर तपस्या करते हैं। भरत, दिग्विजय के बाद, अयोध्या लौटता है, उसका चक्र नगर सीमा में प्रवेश नहीं करता; इसका कारण था—बाहुवलि का अभी तक उसकी अधीनता नहीं स्वीकारना। भरत, सूत द्वारा अधीनता का प्रस्ताव भेजता है जिसे बाहुवलि ठुकरा देता है; फलस्वरूप, सेनाएं आमने सामने आ डटती हैं। लेकिन वृद्ध मन्त्री, पिता की आज्ञा के नाम पर दोनों माइयों को द्वंद्व युद्ध के लिए आग्रहान करते हैं। दृष्टिजल और मल्लयुद्ध में भरत को हराकर बाहुवलि दीक्षा ग्रहण कर लेता है। जबकि, भरत को मन्त्री अयोध्या ले जाते हैं।

( २ )

आरणालं

रविणिहकणकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।

चलिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठ बद्धधारा ॥

भरत की सेना के कूच का वर्णन—

होइ गिरित्थलु णित्रिसैं समथलु

किं ण किं ण विर कद्मियउं जलु।

---

२. रविणिहकणकुंडला—रवि निभ कण कुंडलः सूर्य के समान कानों के

किं ए किं ए किर संचूरिउ वणु  
किं ए किं ए धूली जायउ तणु ।  
कणयदंडमडिय पडिहारें  
आवेतें पहुंघावारें ।

अयोध्या में स्वागत की तैयारी—

पुरणागिदिं आइरणु लडज्जइ  
मउ देवंगवत्थु परिट्टिज्जइ ।  
कुंजुमेण छडउल्लउ दिज्जइ  
कपूरें रंगावलि किज्जइ ।  
धिप्पइ कुसुमकरंजु ससडयणु  
वज्झइ सुगतरु पल्लवतोरणु ।  
घरि घरि गाइज्जइ जिणुं दणु  
दोवदहिय सिद्धत्थयचंदणु ।  
दण्णु कलसु धरिज्जइ अण्णहिं  
उग्घोसिउ मंगलु सुग्गण्णहिं ।  
सलहिज्जंतु महंतु सुदिदिं  
सहुं जाक्खिद गगिंदण्णिदिं ।  
कग्गि वर कंधरत्थु मण्णहिं  
विज्जिज्जंतउ चामरधारिं ।

घत्ता

महि सयल वि खगें गिज्जिणिवि कयदिज्जिजयविलासहिं ।  
उज्झहि भरहाहिउ पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥

कुंडल वाले । रयण मेहला=रत्न मेखला वाले । मउडपट्टधारा=पुकुट पट्ट धारण करने वाले । कट्टमियउ=कर्दामित कीचड़ भरा कर दिया । पहु खंघावारें=प्रभु-खंघावार । देवंगवत्थु=दिव्य वस्त्र । छडउल्लउ=छड़काव । रंगावलि=रंगोली । छिप्पइ=ग्रहण की जाती है । कुमुम करंजु=कुमुम घूली । वज्झइ=बांवा जाता है । दोवदहिय सिद्धत्थय चंदणु=दूव दही सिद्धाथं

## चक्र का अवरोध—

( ३ )

थव रुद्र चक्रु ए पुरि परिसवकइ  
कुकरहि कउ वुव एउ चिम्वकइ ।  
एणं कोवालणु जाला मंडलु  
एणं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।  
भरहपयावें कायरिजायउ

आरणांतं

एउपइसरइ पुरउरे रयणमयदरे जयसिरीवरंगं ।  
भंगुर भासरारयं णिमियधारयं राइणो रहंगं ॥  
भागुविंचु एं छज्जइ आयउ ।  
इंदचंद पडिक्कलण सीलउ  
धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।  
सहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु  
एयरे दीवु धरिउ एं लोयहु  
मणिमऊहमाला वेलाउलु  
रायदिवायरि पूरणयरुज्जलु ।

(चावल) चंदन । जक्खिद=यक्षेन्द्र; जिज्जंतउ=डुनाए जाते हैं ।  
उज्जहि=अयोध्या में । सट्ठिहि=साठ सालों में ।

३. परिहिउ=पहन लिया है । जयसिरीवरंगं=विजयश्री के रंग वाला । भंगुर  
भासुरारयं=चंचल किरणों का समूह । णिसियवारयं=पैनी धार वाला ।  
राइणो=राजा का । रहंगं=चक्र । खयहुय वह लोलउ=क्षयकाल की आग के  
समान लीला वाला । जि=ही । मणि यऊह=मणिमयूख । समसलु=भ्रमर  
सहित । एहसरि=नभरूपी नदी से । विइंसिउ=खिल गया । रत्तुप्पलु=  
लाल कमल । सच्चायहु=सुन्दर कीर्ति वाला । अवसें=अवश्य ही । आयहु=  
इसको । एिराइणा=नृराज ने । रुद्धराइणा=प्रसिद्ध राजा ने । रहंगयं=

सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु  
 णं णहसरि विहसिउ रत्तप्पलु ।  
 वलयायारहु णिरु सच्छायहु  
 अवसें देइ धरणि कर आयहु ।  
 घत्ता

तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ।  
 हियउल्लय कवडसहयं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥

( ४ )

आरणात्

ता भणियं गिराइणा रुढराइणा चंडवाउवेयं ।  
 किं थियमिह र्हंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥

मंत्रियों का सुभाव—

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ  
 जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।  
 अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर  
 देवदेव दुज्जय भरहेसर ।  
 भुयजुयवलपडिबलविद्वण्हं  
 पयभ रथिरमहियलंकंपवण्हं ।  
 तेओहामियचंददिणेसहं

- 
४. गिराइणा==नृराज ने । रुढराइणा==प्रसिद्ध राजा ने । र्हंगयं=चक्र । णिच्च लंगयं=निश्चलांग । गइ-पसरु=गति प्रसार । पुरोहउ=पुरोहित=मन्त्री । तेओहामियचंददिणेसहं=अपने तेज से चन्द्रमा और सूर्य को भुका देने वाले । कित्सत्ति जणमेत्ति-सहायइ=कीर्ति शक्ति और

जणणदिण्णमहिलच्छित्तासहं ।

कित्तिसत्तिजणमेत्ति सहायहं

को पडिमलु एत्थु तुह भायहं ।

सेव करंति ण णहभाईवइ

णउ णवंति तुह पयराईवइ ।

देंति णि करभरु केसरिकंधर

पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।

अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि

पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण जि ।

घत्ता

रइवर परमेस रु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ।

कासवतणुरुहु णवणलिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधरु ॥

( ५ )

आरणालं

दूतों से भाइयों का निवेदन—

ता विगया बहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।

दुमदलललियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु

सामिसालतणुरुह पणवोप्पणु ।

लोगों की सीमित संख्या की सहायता पर निर्भर रहने वाले । णह-भाई वइ = नख चन्द्र की । पयराईवइ = चरण कमलों की (सेवा नहीं करते ।) ण तेण जि = इसी कारण से ।

५, विगया = चले गए । ता = तब । बहुयरा = बहुत से चर । रसियवारणं = दरवाजे पर हाथी गरज रहे हैं । छिण्णभूमिदेसं = जिसका भूभाग ढका हुआ है ।

सरणर विसहरभयइं जखेरी

करहु केर एरणहहु केरी ।

पणवहु किं बहुवेण पलावें

पुहइ ए लब्भइ मिच्छागावें ।

तं गिसुणेवि कुमारगणु घोसइ

तो पणवहु जइ वाहिण दीसइ ।

तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवर

तो पणवहु जइ जीविउ सुंदर ।

तो पणवहु जइ जरइ ए भिज्जइ

तो पणवहु जइ पुट्ठि ए भज्जइ ।

तो पणवहु जइ बलु णोहट्ठइ

तो पणवहु जइ सुइ ए विहट्ठइ ।

तो पणवहु जइ मयणु ए तुट्ठइ

तो पणवहु जइ कालु ए खुट्ठइ ।

कंठि कयंतवासु ए चुट्ठइ

तो पणवहु जइ रिद्धि ए तुट्ठइ ।

घत्ता

जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु गिवाइ ।

तो पणवहु तासु एरेसइो जइ संसारहु तारइ ॥

---

जखेरी=उत्पन्न करने वाली । केर=आज्ञा । एरण हहु केरी=राजा की ।  
मिच्छागावें मिथ्यामान से । णोहट्ठइ=नष्ट नहीं होता । विहट्ठइ=नष्ट नहीं  
होता । पुट्ठइ=टूटता है । खुट्ठइ=नहीं खुटता ! चुट्ठइ=नहीं पहुँचता, नहीं  
लगता ।

## आरणालं

पूणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं परिसं पडत्तं ।  
आणपसरधारणे धरणिधारणे पणविउं एणं जुत्तं ॥

पारतंत्र्य की आलोचना—

पिंडिखंडु महिखंडु महेप्पिणु  
किह पणविज्जइ माणु मुणप्पिणु ।  
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु  
वणहलभोयणु वर तं सुंदरु ।  
वर दालिह, सरीरहु दंडणु  
एउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु ।  
परपयरयधूसर किंकरसरि  
असुहाविणि एं पाउससिरिहरि ।  
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु  
को विसइइ करेण उरलोट्टणु ।  
को जोयइ सुहुं भूभगालउ  
किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।  
पहु आसण्णु लहइ धिट्ठत्तणु

६. सवण महुरयं=श्रवण को महुर । पडत्तं=प्रोक्त,=कथन । आणपसरधारणे=आज्ञा के प्रसार को धारण करने के लिए । महेप्पिणु=आदर करके । वक्कलणिवसणु=वक्कलों का पहनना । कंदरुमंदिस=गुफा का घर । वणहलभोयणु=वनफल का भोजन । परपयरय धूसर=दूसरों की पदरज से धूसरित । किंकरसरि=सेवक रूपी नदी । पाउससिरिहरि=पावस की शोभा धारण करने वाली । मोणें=मौन से । खंतिइ=शान्ति से । अज्जवु=ऋजु=सरल सीधा । पलाविरु=प्रलाप करने वाला । महुर पयंपिरु=मीठा



पविरत्नदंसणु शिण्णोहत्तणु  
 मोण जडु भडु खंतिइ कायरु  
 अज्जवु पसु पंडियउ पत्ताविरु ।  
 अमुणियहिययचारुगरुयत्ते  
 कलहसीलु भण्णइ सुहडत्ते ।  
 महुरपयंपिरु चाडुयगारउ  
 केम त्रि गुणि ए होइ सेवारउ ।

घत्ता

अइतिकलहं धम्मगुणुज्झियहं वम्मवियारणवसणहं ।  
 को वाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइवरि पिसुणहं ॥

( ७ )

आरणालं

अहवा तेहिं कि हयं जं समागयं दुल्लहं णरत्तं ।  
 तं जो विसयविसरसे धिवइ परवसे तस्स कि बुहत्तं ॥  
 कंचणकंडे जंवुउ थिंधइ  
 मोत्तियदामे मंकडु वंधइ ।  
 खीलियकारणि देउलु मोडइ  
 सुत्तणिमित्तु दित्तु मणि कोडइ ।  
 कप्पूरायरुरुक्खु णिसुंभइ

वोलने वाला । धम्म गुणुज्झियइ=धर्म की डोरी या गुणों से रहित ।  
 वम्मवियारण-वसणहं=मर्म और कवच के विदारण के स्वभाव वाला ।  
 महिवइ वरि=राजा के घर में । संमु हुं णाइ=सामने खड़ा हो सकता है ।

७. धिवइ=क्षिप्तेत=व्यतीत करता है । मंकडु=बंधर । खीलिय कारण=खोल

कोदवद्येत्तहु चइ पारंभइ ।  
 तिलखलु पयइ डद्विवि चंदणतरु  
 विसु गेणइ सप्पहु ढोयधिकरु ।  
 पीयइ कसणइं लोद्वियसुक्कइं  
 तक्कें विक्कइ सो माणिककइं ।  
 जो मणुयत्तणु भोएं णासइ  
 तेण समाणु हीणु को सीसइ ।  
 चित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ  
 पत्तु कलत्तु वित्तु संचितइ ।  
 मरइ रसणफंसणरसदड्डउ  
 मे मे मे करंतु जिह् मेढउ ।  
 खज्जइ पलयकालसदूलें  
 डज्जइ दुक्खहुयासणजालें ।  
 मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु  
 होइ जीउ मक्कडु माहुंडलु ।

धत्ता

केलासहु जाइवि तवयरणु ताएं भासिउ किज्जइ ।  
 जेणेइ सुदूसहतापवरि संसारिणि तिस द्विज्जइ ॥

---

के लिए । सुत्तणिमित्तु=सुक्ति के लिए, दिए हुए मणि को भोटता है ।  
 कप्पूरायरुक्खु = कपूर और अणरु के वृक्षों को नष्ट करता है ।

## आरणां

जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।  
तं मह लिहियसासणं कुल विहूसणं हरइ को पहुत्तं ॥

बालि का उत्तर—

केसरि केसरु वरसइ थणयलु  
सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।  
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ  
किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।  
हउं सो पणवमि को सो भण्णइ  
महिखंडेण कवण परमुण्णइ ।  
किं जम्मणि देवहिं अहिंसिचिउ  
किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।  
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ  
सिरिसइ रिणियइ किं रोमच्चिउ ।  
चक्कु दंडु तं तासु जि सारउ  
महु पुणु णं कुंभारहु केरउ ।  
करिसूयरहवरुडिंभयरहं

८. दिण्णं=दत्तं दिया । दुरियणासिणा=दुरित नाशी-पाप का नाश करने वाले ।  
वरसइ थणयलु=वर सती का स्तनतल । सुहडहु-सरणु=सुभट की शरण ।  
केहउ=कैसा । जेहउ=जैसा । मायंगु=गज ।

९. खज्जोए=खद्योत से जुगनू से । अण्णारणे=अज्ञान से । वायसेण=  
कोए से । विज्झइ=वेधा जा सकता है ? वसहेण=वृषभ=बैल से । वग्घु=

एर गिहणमि रणि जे वि मद्दारइ ।

भरहु हरइ किं मज्झु भूयाभरु

तइ चुक्कइ जइ सुयरइ जिणवर ।

यत्ता

तहु मेइणि महु पोयणणयर आइजिणिदे दिण्णउं ।

अभिइउ पडउ असि सिहिसिद्धिं जइ ए सरइ घडि पयण्णउं ॥

( ६ )

आरणांलं

ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।

बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया हांति दुण्णिवारा ॥

दूत को फटकार—

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ

किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।

खज्जोए रवि गित्तेइज्जइ

किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।

गोप्पएण किं एहु माणिज्जइ

अएणाणें किं जिणु जाणिज्जइ ।

वायसेण किं गरुडु गिरुज्जइ

णवकमलेण कुलिसु किं विज्जइ ।

करिणा किं मयारि मारिज्जइ

किं वसहेण वाघु दारिज्जइ ।

वाघ । ससंकु=शशांक-चन्द्रमा; डेंडुहेण=सांप से । जिप्पइ=जीया जा सकता है ।

माणु ण छंडइ छंडइ भयसु  
 दयवु ण चितइ चितइ पोरिसु ।  
 संति ण मणइ मणइ कुलकलि  
 पुइइ ण देइ देइ वाणावलि ।  
 तुउभु ण णवइ णवइ मुणतंडउ  
 अंगु ण कड्ढइ कड्ढइ खंडउ ।  
 देव ण देइ भाइ तुइ पोयणु  
 पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।  
 ढोयइ रयणइ णउ करिरयणइ  
 ढोएसइ ध्रुवु णरउररयणइ ।

घत्ता

संताणु कुलकम्मु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुब्भइ ।  
 मज्जायविवडिजउ सामरिसु अवसें दाइउ जुब्भइ ॥

( १३ )

आरणालं

आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।  
 णं णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥

संध्या का चित्रण—

संभारायजलणु जो भमियउ  
 सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।

१३. संभाराय जलणु=संध्याराग ज्वलन । संभारायघुसिणु=संध्याराग रूपी  
 केशर । संभाराय विडवि=संध्याराग रूपी जो वृक्ष खिला है । तमोह

संभारायघुसिणु जं संकिउ  
 तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।  
 संभारायविडवि जो फुल्लिउ  
 सो तमतवैरमवइपेल्लिउ ।  
 चंदमइ दें तमकरि भग्गउ  
 किं जाणहु सो नासु जि लग्गउ ।  
 मयणिहेण दीसइ सुहयारउ  
 तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।  
 विसइ गवक्खहिं थणयलि घोळइ  
 बहुहारु व ससितेउ णिहालइ ।  
 रंधायारु थियउ अंधारइ  
 दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।  
 रइयासेयविंदु तेणुवज्जु  
 दिट्ठु भुयंगहिं एं मुत्ताहलु ।  
 दिट्ठुउ कथइ दीहायारउ  
 घरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।  
 मोरें पंडरु सप्पु विचप्पिवि  
 मुद्धे कइ व ए गहिउ ऋडप्पिवि ।

यत्ता

गंगामरि हंसपक्खदलइं पियविरहिं णिगंडयलइं ॥  
 लायइं समियरपक्खालियइं थयलइं जि णिरु वयलइं ॥

मयणाहें = तम मयइ कपो मृगेन्द्र । तमतवैरमवइ = अतिकार कपो  
 मदागइ । चंदमइ दें = चन्द्र मृगेन्द्र । तमकरि = अन्धकार कपो गज । जाणहु =  
 घुटनों मे । तमवइ = अन्धकार । गवक्खहिं = गदाधो, गोधो मे ।

दृष्टि युद्ध में भरत की पराजय—

इय चितिवि इच्छिउ मंतिमं तु  
 बुद्धाणुगामिणीसेसु संतु ।  
 अग्रलंघिउ रोसु ए परियणेहिं  
 आयंवरकसण सियलोयणेहिं ।  
 सकसायभाव आसणु दुक्कु  
 दोहिं मि अवलोइउ एकमेक्कु ।  
 उद्धाणुगु पहु भयवलिहिं तोंडु  
 पेच्छइ रविंनु व किरणचंडु ।  
 हेठिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ ।  
 णिज्जिय दिट्ठिइ अविहाल्लियाइ  
 एं होंति कुगइ पंचमगईइ  
 विसयासा इव मुणिवरमईइ ।  
 एं तावसि भग्गी विडरईइ  
 एं सेलभित्ति गंगाणईइ ।

१४. बुद्धाणुगामी=बृहानुगामी । परियणेहिं=परिजनों ने । आयंवर कसण-सिय लोवणेहिं=लाद सफेद आंखों वाले । उद्धाणुगु=ऊंचा मुख पेच्छइ-प्रोक्ष्यते=दिखाई देता है । हेठिल-दिट्ठि=नीची दृष्टि । उवरिल्लियाइ=ऊपर की दृष्टि; । अवइल्लियाइ=अविचलित । पंचम गईइ=पंचम गति=मोक्ष । विडरईइ=विटरत्या; दुष्ट के प्रेम से । सेल-भित्ति=शैल भित्ति=हिमालय रूपी दीवार । ससियरतईइ=चन्द्र संतति=चन्द्रमा की किरणों द्वारा । उपमा बाहुवलि ने अपनी अविचलित दृष्टि से भरत की दृष्टि को वैसे ही जीत लिया जैसे मोक्षगति कुगति को, मुनि की बुद्धि विषयाशा को; दुष्ट का प्रेम तपस्वी की, गंगानदी हिमालय की दीवार को जीतले, इत्यादि । ससी छाहिसारंग डेवंतभीहं=चन्द्रमा के प्रतिविम्ब में हरिण को देखकर, जिसमें

एणं कमलपंति ससियरतईइ  
कुमुओलि व मउलिय रविरईइ ।

घत्ता

ठिउ हेट्टासुहुं चक्कवइ णिज्जिउ पडिभइदिठ्ठपहावहिं ।  
घल्लियणवकुसुमंजलिहिं एणंदातणुरुहु संथुउ देवहिं ॥

( १५ )

सरोवर का वर्णन—

मओमत्तमायंगलीलावहरा  
रमावासवच्छत्थलोलंतहारा ।  
फण्णिंदेण चंदेण इंदेण पइइ  
पुणो दो वि राया सरंते पइइ ।  
सरंतेहि आलोइयं सच्छणीरं  
विसालं गहीरं तुसारोहतारं ।  
महापोमसुत्ताहिमाणिककदित्तं  
मरुध्दूयतिं गिच्छिधूली विलितं ।  
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं  
मरालीपहालगलीलामरालं ।  
सिरीणेउरालावणच्चंत मोरं  
मिसाहारपूरंतचंचूचऊरं ।  
तरंतामरं रेत्यारद्ध कीलं

सिंह दौड़ रहा है । समुत्तुंग=ऊंची उछलती हुई फेनराशि से जिसके किनारे ढक गए हैं; गुंजन करते भ्रमरों का जिसमें कोलाहल हो रहा है; सारसों से भरा हुआ । सूर्य की मुक्त किरणों से फूल, जिसमें खिले हुए हैं; जिसमें, पक्षीन्द्र और यक्षेन्द्रों के शब्द सुनाई दे रहे हैं; नहाते हुए हाथियों की सूड़ों से, जिसका पानी मथा जा चुका है ? (सरोवर का वर्णन) :

१५. सुन्दरासु=सुन्दर के । दीसइ=दृश्यते दिखाई देती है । ताराली=तारावली ।



जलुम्भं तमीणं लयापत्तणीलं ।  
 ससीद्धादिसारं गड्यंतसीहं  
 समुत्तुंगफेणा वलीछण्णत्तुहं ।  
 भुण्णंतालिकोलादलं सारसिल्लं  
 इण्णम्मुक्कपायावली फुल्लकुल्ल ।  
 सुयाण्य पक्खिद जक्खिदसदं  
 पमज्जंत हत्थिदसोडाविमदं ।

घत्ता

त हिं विणिण वि जण ओयरिय पहुणा घित्त जलंजलि भायहु ।  
 वियलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥

( १६ )

जल युद्ध—

कडियल धावन्ती सुंदरासु  
 दीसइ तारालि व मंदरासु  
 णं मरगय महिहरि चंदकंति  
 णं णील महोरुहि हंसपंति  
 डेवन्ती दीसइ सलिलधार  
 णं कंदुभइ कंठिय सुतार  
 णं सुरसरि चवल तरंग फार  
 गयणुल्ललंत भससुं सुमार  
 आलसिवि पुण्ण भरइहु विमुक्क  
 णंदा तण्ण गुरुजल भलक्क

मरगय महिहरि=मरकत महीधर; गुरुजल का भुलम्म=भारी जल की धारा;  
 १६. तओ=तदा=तब । भुयमंडणि=बाहुयुद्ध में । माण-महल्ल=मान में श्रेष्ठ ।

सलिले एवसोत्तडं पूरियाइं  
 बहु परियण सयणइं जूरियाइं  
 उग्योसिउ विणउ महासरेहिं  
 बाहुवलि एराधिव किंकरेहिं

घत्ता

सीसु धुरांतु सुयंतु छलु सरवर वारि पवाहें सित्तउ ।  
 पडि ओसारियउ पुहइवइ एाइं करिंदु करिंदे जित्तउ ॥

( १७ )

तिल युद्ध--

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग  
 एरिंदसिरोमणि घट्टपयग्ग ।  
 कुलीण कुकारणि माणमहल्ल  
 पहाण महावल विरिण वि मल्ल ।  
 सुकंचण कुंडल मंडियगंड  
 पसारियवाह सरोसपयंड ।  
 चिराउस चंदचडावियणाम  
 सुविक्कमवंत एराहिवकाम ।  
 समत्थ सिरीण रईण णिकेय  
 महारह भारह भक्खरतेय ।  
 मित्तंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति  
 धरेप्पिणु देह वडेवि पडंति ।

- 
१७. वड़े भाई भरत को बाहुबली ने उठा लिया; इस पर कवि की उपेक्षाएं हैं: मानो शुभ परिणाम ने जीव का उद्धार किया हो, सज्जन समूह ने सुकवि को काय्य का, मुनिवर व्रत विशेष का; किसी महान् राजा ने देश का; इत्यादि । णिय कुल पईउ=निज कुल प्रदीप । सूख घुत्ति चित्ताणुवट्टि=काम की घूर्तता

पढंत जि गाह्णिबंधणु देंति  
 कडीयलु कंठु गिरुंभिवि ठंति ।  
 विरुद्ध वि गाह् वलेण मुयंति  
 मुएप्पिणु ँड्ढवि भक्ति वलंति ।  
 अलंभुयजुम्भ विहाणसयाइं  
 पचप्पणकड्ढणवेढणयाइं ।  
 करंति वि धीर अविद्वियंग  
 गिरंकुस णाइं मयंथ मयंग ।  
 तओ ह्यमाणिणिमाणमएण  
 णारामरसंगरलद्धजएण ।  
 सुरिंदकरी करथोर भुएण  
 अणिदजिणिंद सुणंद सुएण ।  
 पहुस्स करेण करा परतावि  
 परेण थिरेण धरेण कमावि ।

घत्ता

कुंअरें राउ समुद्धरिउ णायणियंविणिसेवियकंदरु ।  
 कयइच्छा कोउइलेण किं ण पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥

( १८ )

उद्धरिउ सुपुत्तें णं सुवंसु  
 कमलायरेण णं रायहंसु ।

में अपने चित्त का अनुगमन कौन कर सकता है ?

हिमालय कायउ=हिमालय शरीर; जैसे कमल-सरोवर को पाला मार हुय= हो । दव दड्ढउ रुक्खु=दावानल से जला हुआ पेड़ । ओहुल्लिय मुग

बाहुवलि ने भरत को उठा लिया—

रां सुहपरिणामें जीव भव्नु  
 रां सुयणसमूहें सुकइकव्नु ।  
 रां मुणिवरणाहें वयविसेसु  
 रां एरवरिंदणाएण देसु ।  
 रां गमणवियारे बालभाणु  
 रां बाणं चांपयकुसुमरेणु ।  
 रां कामुयसत्थें कामचारु  
 रां सो जि तेण संसारसाह ।  
 खयरामरमाणविमदणेण  
 पढमेण पढमजिणणंदणेण ।  
 अइलुद्धें बहुमणियधणेण  
 कुद्धें अवगणियसब्जणेण ।  
 परिपालियसयल वसुंधरेण  
 ता चित्तिउ चक्कु सुकंधरेण ।  
 जमदाढाबलयहु अणुहरंतु  
 उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।  
 रवित्रिनेण व जियविसमवेउ  
 तें परियंचिउ बाहुवलिदेउ ।  
 थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ  
 को एहइ किर गियकुलपईउ ।

को सुरयघुत्तिचित्ताणुवट्टि  
को एम जिणइ जगि चक्कयट्टि ।

घत्ता

विंमिउ भरहणराहिवइ वाहुवलीसु जगेण पसंसिउ ।  
गयणभाउ सुरमुक्कियहिं पुप्फदंतपंतिहिं गां पट्टसिउ ॥

( १२ )

बाहुवलि की आत्मग्लानि—

गां कमलसरु हिमाहयकायउ  
दवदड्डउ रुक्खु व विच्छायउ ।  
जं ओहुल्लियमुहु पहु दिट्ठइ  
तं वलि भणइ हउं जि णिक्किट्ठउ ।  
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ  
जेण महंत भाइ ओहामिउ ।  
हा किं किञ्जइ भुयवलु मेरउ  
जं जायउ सुहिदुणायगारउ ।  
महि पुण्णालि य केण ण भुत्ती  
रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।  
रज्जहुकारणि पिउ मारिज्जइ  
बंधवहुं मि विमु संचारिज्जइ ।

---

अधोमुख । हउंजि=मैं ही । णिक्किट्ठउ=निकृष्ट । सामिउ=स्वामी ।  
ओहामिउ=पराजित किया । सुहिदुणायगारउ=सुधियों के मति दुर्नमा  
करने वाला । पुण्णालि=पुंश्चली=वेश्या । भुत्ती=भोगी । समसुत्ति=  
सभीचीन सूक्ति । रज्जहु पडहु वज्जु=राज्य पर वज्र पड़े । तंवारहु=नाश की

जिह् अलि गंधें गउ संवारहु  
 तिह् रज्जेण जीउ तंवारहु ।  
 भडसासतमंतिकयभायउ  
 चिंतिज्जंतउ सव्वु परायउ ।  
 तंहुलपसयहु कारणि राणा  
 णरइ पडंति काइं अवियाणा ।  
 डज्झउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ  
 जइ सुहु तो किं ताएं सुक्कउ ।  
 सुहणिहि भोयभूमि संपययर  
 कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

यत्ता

दुल्लंगहु दुक्कियलंछणहो दूसहदुक्खदुरंतहो ।  
 भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को डव्वरिउ कयंतहो ॥

( १३ )

भरत की प्रतिक्रिया—

सज्जनकरुणें सज्जणु कंपइ  
 तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।  
 जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ  
 तइयहुं पईं वि किं ण परितोलिउ ।  
 मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ  
 मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउ ।

प्राप्त होता है । दाढ़पिजरि=दाढ़ां पंजर में । उव्वरिउ=उवर सका ।

१३. सज्जनकरुणें=सज्जन की करुणा से । भरहाणुउ=भरतानुज । पराहउ=

जे गय ते सयल वि मगिवि मिमु  
 भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।  
 तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ  
 वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ ।  
 जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि  
 ता जें दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।  
 तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ  
 मतिहि भमिणाहु संबोहिउ ।  
 सुउ संताणि थर्वाव महावलि  
 गउ केलासु परायउ भुयवलि ।

घत्ता

वणु जंतु सुयंतु णंरिदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ।  
 साकेयहु राउ विसणमणु मंतिहिं मड्डइ आणिउ ॥



पराभव ! महाइउ=महाहव । पयच्छइ=दो । णिरोहिउ=निरोधित, रोक ।  
 संबोहिउ=संबोधितः संबोधित किया । परायउ=परायात=पहुँचा । मड्डइ=  
 बलपूर्वक । मंतिहिं=मन्त्रियों के द्वारा ।

# महाकवि पुष्पदन्त

‘श्रीकृष्ण का चरित्र, पुष्पदन्त के महापुराण का सबसे अधिक महत्वपूर्ण चरित्र है; पांडवों और कृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं में कुछ भिन्नता होते हुए भी जहां तक कृष्ण वाल यौवन लीलाश्री का सम्बन्ध है, हिन्दू परम्परा से; बहुत समानता है; काव्य और मार्मिकता की दृष्टि से भी यह बेजोड़ है; इसमें कृष्ण चरित्र के कई नए संदर्भों की सूचना है; उदाहरण के लिए, कृष्ण के ‘स्वाल रूप’ का वर्णन, राधा का उल्लेख, उपासना इत्यादि ।’

## कृष्ण की वाल लीलाएं

( १ )

दुवई

एणं हरिवंसवंसणवजलहरु एणं रिउणयणतिमिरओ ।  
जोइउ दीवणण हरि मायइ एणं जगकमलमिहिरओ ॥

रात में चुपचाप बालक कृष्ण को ले जा रहे हैं—

कणहुमासि सत्तमि संजायउ  
मारण कंखिरु कंसु एण आयउ ।  
हउं जाणमि सो दइवं मोहिउ  
महिचइन्नक्खणलक्खपसाहिउ ।  
लइयउ वासुएउ वसुएणें  
धरिउं वारिवारणु वलएणें ।

---

१, हरिवंस वंस एवजलहरु=हरिवंश रूपी वंश (वांस) के लिए=नए मेघ की तरह । रिउ एयण तिमिरओ=शत्रु की आंखों के लिए अन्धकार । जोइउ=



णिसि संचलिय छत्तमणियरें  
 रां वियाणिय णिरु कूरें इयरें ।  
 अग्गइ दरिसिय तिमिरविहंगिहि  
 वच्चइ वसहु फुरंतहि सिंगहि ।  
 को वि पराइउ अमरविसेसउ  
 कालहि कालिहि मग्गपयासउ ।  
 देवइ चोइइ आवयकुंठइ  
 लग्गइ माहवचरणंगुट्ठइ ।  
 जमलकवाडइं गाढविइएणइं  
 विहडियाइं ए वडरिहि पुण्णइ ।  
 कुल्लिसायसवल्लयंकियपाए  
 बोल्लिउ सुमहुरु महुराराए ।  
 छत्तालंकिउ का किर णिग्गइ  
 को णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ ।  
 भासर सीरि ससि य सुहदंसणु  
 जो तुह णिविडणियलविद्धंसणु ।  
 जो जीवंसवइविद्वावणु ।  
 पोमावइकरसरिमेल्लावणु ।

देखा । दीवएव=दीपक से । जग कभल मिहिरओ=जगरूपो कमल के लिए  
 सूर्य । कण्हु=कृष्ण । सत्तमि=सातवें । मारण कंखिरु=मारने की आकांक्षा  
 रखने वाला । महिवइ.....पसाहिउ=महीपति के लक्षणों से प्रभावित । वारि  
 वारणु=महागज । बलएवें=बलराम ने । छत्तमणियरें=क्षत्र के ग्रंथकार  
 के समूह से । इयरें=इतर = दूसरा । अग्गइ=आगे । पराइउ==परायातः=  
 आया । मग्ग पयासउ=मार्गप्रकाशक । आवय कुंठइ=आपत्ति को  
 कुंठित करने वाला । माहव चरणंगुट्ठइ=माघव के चरण का ग्रंथ ।  
 महुराराए मथुराराज ने (उग्रसेन) । णिसि समइ=निशा के समय । सुह दंसणु=  
 शुभ दर्शन । णिविण-णियल विद्धंसणु=निविड निगड विध्वंसक=सघन वेड़ियों

सो गिगउ तुह सोखजणेउ  
उगसेण नूव अछहि सेरउ ।

घत्ता

एवं भणंत गय ते हरिसें कहिं मि ण माइय ।  
णयरहु णोसरिवि जउणाणइभ त्ति पराइय ॥१॥

( २ )

यमुना का वर्णन—

दुवई

ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मंथरवारिगामिणी ।  
एं सरिरुवु धारविथिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ॥

णारायणतणुपहंपंती चिव  
अंजणगिरिवरिदकंती चिव ।  
महिमयणाहिरइयरेहा इव  
चहुतरंग जरह्यदेहा इव ।  
महिद्वरदंति दाणरेहा इव  
कंसरायजीवियमेरा इव ।  
वसुहणिलीणमेहमाला इव  
साम समुत्ताहल बाला इव ।  
एं सेवालवाल दक्खालइ  
फेणुप्परियणु एं तहि धोलइ ।

को काटने वाला । जीवजस वड-विदावणु=जीवंससा पति विद्रावक=जीवजसा के पति (कंस) को मारने वाला । सोखजणेउ=मुख उत्पन्न करने वाला ।

२. कालिंदी=यमुना । मंथर वारि गामिणी=जिसका जल धीरे धीरे बह रहा था । भक्ति=शीघ्र । जउण नदी=यमुना नदी । सरि रुवु धरि=नदी का रूप

गेरुयरत्तु तोउ रत्तंवरु  
 णं परिदइ चुयकसुमहिं कच्चुरु ।  
 किंणरिथणसिहरइं णं दावइ  
 विव्वभमेहिं णं संसउ भावइ ।  
 फणिमणिकिरणहिं णं उज्जोयइ  
 कमलच्छिहिं ण कणहु पलोयइ ।  
 भिसिणिपत्तथात्तेहिं सुणिम्मल  
 उच्चाइय णं जलकणतंदुल ।  
 खलखलंति णं मंगलु घोसइ  
 णं माहवहु पक्खु सा पोसइ ।  
 णउ कासु वि सामण्णहु अण्णहु  
 अवसें तूसइ जवण सवण्णहु  
 विहिं भाइहिं थक्कउ तीरिणिजलु  
 णं धरणारिविहत्तउं कज्जलु ।

घत्ता

दरिसिउ ताइ तलु किं जाणहुं णाहु रत्ती ।  
 पेक्खिवि महुमहणु मयणं णं सरि वि विगुत्ता ॥२॥

( ३ )

दुवई

णइ उत्तरिणि जांवथोवंतरु जंति समीहियासए ।  
 दिट्ठउ णंदु तेहिं सो पुच्छिइ णिक्कुडिलं समासए ॥

## नन्द की पुत्री का श्रीकृष्ण से विनिमय—

महु कंतइ देवय ओलगिय  
 धूय ण सुंदरु पुत्तु जि मगिय ।  
 देविइ दिण्णी सुय किं किञ्जइ  
 तहि केरी लइ ताहि जि दिञ्जइ ।  
 जइ सा तणुरुहु पडि महुं देसइ  
 तो पणइणिहि आस पूरेसइ ।  
 णं तो गंधधूवचरुफुल्लइ  
 चारुभक्खरुवाइं रसिल्लइं ।  
 देमि ताम जा देवि गिरिक्खमि  
 ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।  
 लइ लइ लच्छिविलासरवणणउ  
 एहु पुत्तु तुह देविइ दिण्णउ ।  
 भंति स करहि काइं सुहुं जोवहि  
 मेरइ करि तेरी सुय ढोयहि ।  
 ता हियउल्लइ णंदु विगप्पइ  
 णारवेसेण भठारी जंपइ ।  
 लेमि पुत्तु किं पउरपलावें

---

ओलगिय=सेवा की । मगिय=मांगी । धूय=लड़की, कन्या । दिण्णी=दी ।  
 तहि केरी=उसकी । पडिमहुं देसइ=प्रति दास्यति=फिर देगा । पणइणिहि=  
 प्रणयिनी की । चारु=मुन्दर खाद्य रूपों से । रसिल्लइं=रसीले । हलहेइ=  
 बलराम । अक्खमि=कहता हूँ । लच्छि=लक्ष्मी के विलासों से रमणीय ।  
 देविइ=देवी ने दिया । जोवहि=देखते हो । मेरइ=मेरी । तेरी सुय=तुम्हारी  
 कन्या । हियउल्लइ=हृदय में । णंदु=नन्द । वियप्पइ=विकल्पयति=विकल्प  
 करता है । पउर पलावें=प्रवर प्रलाप से क्या । चवेप्पिणु=कह कर । कमन

परिपालमि सणेहसम्भानें ।  
 एम चवेप्पिणु अप्पिय चाली  
 बलकरकमलि कमलसोमाली ।  
 लइउ विट्ठु साण्हे गण्हे  
 मेहु व आलिंगियउ गिरिदें ।  
 हुउ सकयत्थउ गउ सो गोउलु  
 जणय तणय अडिआया राउलु ।

वत्ता

सुय छणससिवयण देवइयहि पुरउ णिवेसिय ।  
 केण वि किंकरिण णरणाहुहु वत्त समासिय ॥३॥

बाल लीलाए—

दुवई

धलीधूसरेण वरमुक्कसरेणु तिणा मुरारिणा ।  
 कीलारसवसेण गोवालयगोवीहिययहारिणा ॥  
 रंगंतेण रमंतरमंते  
 मंथउ धरिउ भमंतु अणंतें ।  
 मंदीरउ तोडिवि आवट्टिउ  
 अद्धविरोलिउं दहिउं पलोट्टिइ ।  
 का वि गोवि गोविंदहु लग्गी

सोमाली=कमल की तरह सुन्दर । विट्ठु=विष्णु । सकयत्थउ=सकृतार्थ ।  
 गोउलु=गोकुल । छणससिवयण=पूर्णचन्द्रके समान मुखवाली । वत्त=वार्ता=  
 वात । समासिय = कहदी ।

४. तिण मुरारिणा=उन मुरारी ने । गोवालयगोवीहिययहारिणा=गोपालक

एण महारी मंथणि भग्गी ।  
 एयहि मोल्लु देउ आलिङ्गणु  
 णं तो सा मेल्लहु मे प्रंगणु ।  
 काहि वि गोविहि पंडरु चेलउं  
 हरित्तणुतेएं जायउं कालउं ।  
 मूढ जलेण काइं पक्खालइ  
 णियजडत्तु सहियहिं दक्खालइ ।  
 थण्णारसिच्छिरु द्वायावंतउ  
 मायहि संमुहुं परिधावंतउ ।  
 महिससिलंवउ हरिणा धरियउ  
 ण करणिवंधणाउ णीसरियउ ।  
 दोहउ दोहणहत्थु समीरइ  
 मुइ मुइ माहव कीलिउं पूरइ ।  
 कत्थइं अंगणभवणालुद्धउ  
 वालवच्छु वालेण गिरुद्धउ ।  
 गुं जाभेंदुयरइयपओएं  
 मेल्लाविउ दुक्खेहिं जसोएं ॥  
 कत्थइ लोणियपिंडु गिरिक्खउ  
 कएहे कंसहु णं जसु भक्खिउं ।

---

की गोपी का हृदय चुराने वाले । रंगतेण=रेंगते हुए । अद्ध विरोलिउं=  
 आधा विलोया हुआ । दहिउं=दही । पलोट्टिउं=पलोट दिया=उलट दिया ।  
 मा मेल्लहु=मत छोड़ो । हरित्तणुतेएं=कृष्ण के शरीर के तेज से । पंडरु  
 चेलउं=सफेद कपड़ा । थण्णारसिच्छिरु=थन के दूध की इच्छा रखने वाला ।  
 दोइउ=दुहने वाला । वाल वच्छु=छोटे वछड़े को । महिससिलंवउणु=भैंस के  
 वच्चे को । गुंजा=भूंगों की । मेल्लाविउ=छुड़ाया । लोणियपिंडु=नवनीत का

## घत्ता

पसरियकरयलेहिंसदंतिहिं सुइसुइकारिणिहिं  
भदिइ गियडिथिए घरयम्मु ए लग्गइणारिहिं ।

दुवई

णउ भुंजंति गोव कयसंसय गिज्जियणीलमेइइ ।  
केसवकायंकतिपविलित्तइं दहियइं अंजणाइइं ॥

गोपियों से बाल लीलाएं—

घयभायणि अवलोइवि भावइ  
गियपडिविबु बिट्ठु बोल्लावइ ।  
हसइ गण्डु लेप्पिणु अवरुंडइ  
तहु उरयलु परमेसरु मंडइ ।  
अम्माहीरण तंदिज्जइ  
गिहं धइयउ परियंदिज्जइ ।  
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ  
तुब्भु पसाएं होसइ उण्णइ ।  
हलहरभायर वेरिअगोयर  
तुहुं सुहुं सुयहि देव दामोयर ।  
तहु घोरंतहु गहयलु गज्जइ  
सुत्तविउद्ध ए केण लइज्जइ ।

पिड । भदि=कृष्ण के । गियडिथिए=समीप रहने पर !

केसव =लित्तइ=कृष्ण के शरीर की कान्ति से लिप्त । घयभायवि=घृतभाजन ।  
गिय पडिविबु=अपने प्रतिविम्ब को । बोल्लावइ=बुलाता है । हल्लरु हल्लरु=  
धीरे धीरे । उण्णइ=उन्नति । वेरि अगोयर=शत्रु के लिए अदृश्य । महुरहि=

पुहइणाहु किर कासु ए वल्लहु  
 अच्छउ एरु सुरहं मि सो दुल्लहु ।  
 वियलियपयकिलेससंतावें  
 पसरंते तहु पुण्णपद्दावें ।  
 एंदहु केरउ गोउलु एंदइ  
 महुरहि एारि मसाणइ कंदइ ।  
 मंहि कंपइ पढंति एक्खत्तइं  
 सिविणंतारि भग्गइं नृवच्छत्तइं

घत्ता

गियवि जलंति दिस कंसें विणएण गियच्छिउ ।  
 जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु एाम आउच्छिउ ॥५॥

दुवई

कहियं देवयाहिं जो एंदणिहेलणि वसइ बालओ ।  
 सो पइं नृवण भंति कं दिवसु विमारइमच्छरालओ ॥

पूतना वध—

जाणिइ अरिवरि	ता तहिं अवसरि ।
कंसाएसें	मायावेसैं ।
बल मायाविणि	धाइय जोइणि ।
वच्छरवाउलु	गय तं गोउलु ।

मथुरा में । मसाणइ=मरघट में । एक्खत्तइं=नक्षत्र । सिविणंतारि=स्वप्न में ।  
 नृवच्छत्तइं=नृपच्छत्र । गियच्छिउ=पूछा ।

६. मच्छरालओ=मत्स्यराज को । जोइणि=योगिनी । वच्छरवाउलु=वछड़ों के शब्द से व्याकुल । पवण्णी=पहुंची । पूयण=पूतना । दुद्धरसिल्लउ=दूध से



लयसिरितण्डहु	एवमहु कण्टहु ।
पासि पवण्णी	भू त्ति णिमण्णी ।
पभणइ पूयण	हे महूसूयण ।
पियगरुडद्वय	आउ थणद्वय ।
दुद्धरसिल्लउ	पियहि थणुल्लउ ।
तं आर्याण्णवि	चंगउं मण्णिवि ।
चुयपयपंडरि	वयणु पओहरि ।
हरिणा णिहियउं	राहुं गहियउं ।
णं ससिमंडलु	सोहइ थणयलु ।
सुरहियपरिमलु	णं णीलुप्पलु ।
सियकलसुप्परि	विंभिउ मणिहरि ।
कडुए खीरें	जाणिय वीरें ।
जणणि ण मेरी	विप्पियगारी
जीवियहारिणी	रक्खसि वइरिणि ।
अज्जु जि मारमि	पलउ समारमि ।
इय चिंतंते	रोसु वहंतें ।
माणमहंतें	भिउडि करते ।
लच्छीकंते	देवि अणंते ।
दंतहिं पीडिय	मुट्ठिइ ताडिय ।
दिट्ठिइ तज्जिय	थामें णिज्जिय ।
अणु वि ण मुक्की	एहहिं विलुक्की ।
खलहि रसंतहि	सुण्णु हसंतहि ।

रिसते । चंगउं=चंगा-भला समझ कर । चुयपयपंडरि=रिसते दूध से सफेद ।  
 णिहियउं=पकड़ लिया । कडुएं खीरें=कड़वे दूध से । विप्पियगारी=बुरा  
 करने वाली । भिउडि करते=भोहें चढ़ाते हुए । लच्छीकंते=लक्ष्मीकान्त ने,  
 तज्जिय=डांटा । थामें=स्पर्श से । एहहिं विलुक्की=आकाश में छिप गई ।

भीमें वालें	कयकल्लोलें ।
लोहिउ सोसिउं	पलु आकरिसिउ ।
दाणवसारी	भणइ भडारी ।
हियरुहिरासव	मुइ मुइ केसव ।
एंदारुंदरु	मेल्लि जणइण ।
कंसु ए सेवमि	रोसु ए दावमि ।
जहि तुहुं अछछहि	कील समिचछहि ।
तहिं एउ पइसमि	छलु ए गवेसमि ।

## घत्ता

इय रुयंति कलुगु कह कह व गोविंदें मुक्की ।  
गव देवय कहिं मि पुणु एंद शिवासिण दुक्की ॥६॥

## दुवई

वरकाहलियवंसखवहिरिए गाइयगेयरससए ।  
रोमंथंतथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए ॥  
अणहिं पुणु दिणि तहिं शियपंगणि  
जणमणहारी रमइमुरारी ।  
घोट्टइखीरं लोट्टइणीरं ।  
भंजइ कुंभं पेल्लइ डिंभं ।

पलु=मांस । आकरसिउ=खींच लिया । मुइ मुइ=छोड़ो छोड़ो । छलु ए  
गवेसमि=अब कोई छल नहीं करूंगी । दुक्की=पहुंची ।

७. वरकाह-काहल वांसुरी से बहरे । गाइय.....ससए=सैकड़ों गीत रस गाए जा रहे थे  
डिभंपजण=वच्चे को । चलच्चिं=जलती आग को । दुवारि=दुष्काल,  
छोटा समय । राहे=लोगों की शोभा ले ।

छंडइ महियं	चक्खइ दहियं ।
कड्डइ चिच्छिं	धरइ चलच्छिं ।
इच्छइ केलिं	करइ दुवालिं ।
तहिं अवसरए	कीलाणिए ।

### शकटा का पड्यन्त्र—

कयजणाराहे	पंकयणाहे ।
रिउणासिद्धा	देवीदुद्धा ।
अवरा घोरा	सयडायारा ।
पत्ता गोदठं	गोवइइदुं ।
चक्कचलंगी	दलियभुयंगी ।
उपरिएंती	पलउ करंती ।
दिट्ठा तेणं	महुमहणेणं ।
पाएं पहया	णासिवि विगया ।
रविकिरणावहिं	अवरदिणावहिं ।
इंदाइणिए	पियचारिणिए ।
दिहिचोरेणं	दढडोरेणं ।
पवलबलालो	बद्धो बालो ।
उदूखलए	णिहियउ णिलए ।
सीयसमीरं	तीरिणितीरं ।
सिसुकयळाया	विगयगामाया ।
ता सो दिव्वो	अव्वो अव्वो ।
इय सद्धंतो	परियड्ढंतो ।

तमुदूहलयं	पयणियपुलयं ।
णयकयकणहहु	जयजसतणहहु ।
जाणियमगो	पच्छइलगो ।
अरिविज्जाए	गयणयराए ।
ता परिमुक्कं	णियडे दुक्कं ।
मारुयचवलं	तरुवरजुयलं ।
अंगेषुलियं	भुयपडिखलियं ।
कीलंतेणं	विहसंतेणं ।
वलवंतेणं	सिरिकंतेणं ।

घत्ता

होइवि तालतरु रंगतहु परि तडितरलइं ।  
रक्खसि केसवहु सिरि धिवइकदिणतालहलइं ॥७॥

( ८ )

रान्सी का तालफल गिराना—

दुवई

सिरिरमणीविलासकीलाधरिवच्छयले घडंतइं ।  
णं अरिवरसिराइं विहिलुक्कइं दसदिसिवहि पडंतइं ॥  
ताइ इच्छए सो पडिच्छए ।  
पंजलीयरो कीलणायरो ।  
गयणसंचुए णाइ भिंदुए ।

हुई । उदूहलए=उलूखल से । णिलए=वेड़ी में । तडितरलइं=विजली की तरह कड़कते हुए । धिवइ=डालता है । तालतलइं=तालफल । रक्खसि=रान्सी ।

८. सिरिरमणी....वच्छयते=लक्ष्मी रूपी रमणी के लिए, जिनका वक्ष, विलास का

ता महारचा	तिव्वभेरचा ।
पुंछलालिरी	कण्णचालिरी ।
धाइया खरी	त्रिभिओ दरी ।
उल्ललंतिया	एहि मिलंतिया ।
वेयवंतिया	दीह दंतिया ।
उवरि एंतिया	घाउदंतिया ।
एंदवासिणा	जाइओसिणा ।
आहया उरे	धारिया खुरे ।
मेहसंगहे	भामिया एहे ।

### गधी का उत्पात—

सुट्ठुचावरी	कंसकिंकारी ।
तीइ ताडिओ	महिहि पाडिओ ।
तालुरुक्खओ	पुणुभिवक्खओ ।
जगि एमाइओ	तुरउ धाइओ ।

### तालवृत्त के रूप में राक्षस का आना—

गहिरहिंसिरो	जीवहिंसिरो ।
वकिंयाणणो	एाइ दुब्बजणो ।
हिलिहिलंतओ	महि दलंतओ ।
कालचोइओ	ए तु जोइओ ।
लच्छिधारिणा	चित्तहारिणा ।

---

घर था । दसदिसिवहि=दशों दिशाओं के पथ में । कीलणायरो=क्रीड़ा में नागर, चतुर । किदुए=गेंद से । पुंछलालिरी=पूँछ डिलाने वाला । कण्णचालिरी=कान हिलाती हुई । धाइया खरो=गधी दौड़ी । कंसकिंकारी=कंस की दासी ।

घुसिणपिजरे	वाहुपंजरे ।
छुहिवि पीलिओ	गयणि चालिओ ।
मो ढओ गलो	पत्तपच्छलो ।
रणि हओ हओ	णिगिगओ गओ ।

घत्ता

ता जमोय भणिय राइपुलिणइ पाणियहारिहिं ।  
 रांदणु कहिं जियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ॥८॥

( ६ )

उत्खल से बांधा जाना—

दुवई

मरुइयमदिरुहेहिं पदिचप्पिउ गदह तुरय चूरिओ ।  
 अवरु उदूहलन्मि पई वद्धउ जाणहुं वालु मारिओ ॥

धाइय तामु जसोय विसंठुल ।  
 करयलजुयलमिहियचलथणयल ।  
 वद्धउ उक्खल मेल्लिव घल्लिउ ।  
 महु जंविण जियहि सिमु वोल्लिउ ।  
 फणिएरसुरहं मि अइअइसइयउ  
 हरि मुहि चुंवुवि कडियलिउ ।  
 कि खरेण किं तुरए दट्ठउ

छुहिवि=छूकर । पीलिओ=पीड़ित । मोडिओ=मोड़ दिया । राइ-पुलिणइ= नदी के किनारे । पाणिय-हारिहिं=पनहारिनों ने । तुम्हारिस णारिहिं= तुम्हारी जैसी स्त्रियों से । जायउ=उत्पन्न हुआ ।

६. विसंठुल=अस्तव्यस्त । अइअइसइयउ=अति-अतिशयित=अत्यन्त बढ़ चढ़ कर । परियट्ठउ=टटोलें छुए । अरिट्ठदेउ=अरिष्ट देवता । विपवेसें=वृष के

मायइ सयल्लु अंगु परिमट्ठउ ।  
 अण्णहिं दिणि रच्छहि कीलंतहु  
 बालहु बालकील दरिसंतहु ।  
 दुट्ठ अरिट्ठदेउ विसवेसं ।  
 आइउ महुरायइ आएसं ।

वृषभ रूप में अरिष्ट देव का आगमन—

सिंगजुयल संचालिय गिरिसलु ।  
 खरखुरग उक्खयधरणीयलु ।  
 सरवरवेल्लिजालविलुलियगलु  
 कमणिवायकंपावियजलथलु ।  
 गज्जियरवपूरियभुवणंतरु ।  
 हरवरवसहणिवहकयभयजरु ।  
 ससहरकिरणणियरपंडुरयरु ।  
 गुरुकेलाससिहरसोहाहरु ।  
 किर भड णिविड देइ आवेप्पिणु  
 ता कण्हे भयदंडे लेप्पिणु ।  
 मोडिउ कंठु कड त्ति विसिंदहु  
 को पडिमल्लु तिजगि गोविदहु ।

घन्ता

ओहामियधवलु हरि गोउलि धवलहिं गिज्जइ ।  
 धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुण्णिज्जइ ॥६॥

---

रूप में । उक्खय=उखाड़ लिया है । कमणिवाय -- थलु=पैरों की चोट से जल  
 थल को कंपा देने वाला । ओहामियधवलु=बैल को पराजित करने वाले ।  
 धवलहिं=धवल गीतों से । थुण्णिज्जइ=प्रस्तुत की जाती है ।

मां यशोदा की प्रतिक्रिया—

दुवई

ता कलयलु सुणंति गोवालहं पणयजलोह्वाहिणी ।  
सुयविलसिउ मुणंति णिग्गय णियगेहहु णंदगेहिणी ॥

भणइ जणणि ण दुआलिहि धायउ

पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ ।

किह वलद्दु मोडिउ ओत्थरियउ

दइयवसें सिमु सइ उव्वरियउ ।

हरिखरवसहहिं सहुं सुउ जुज्झइ

जणु जोवइ महु हियवउं डक्कइ ।

केत्तिउं मइं कुमार संतावहि

आउ जाहुं घरु बोल्लिउं भावहि ।

तेयवंतु तुहुं पुत्त णिरुत्तउ

रक्खहि अप्पाणउं करि वुत्तउं ।

परमहि भडकोडिहि आरुढउ

वाहुवलेण वालु जणि रुढउ ।

महुरापु रि धरि धरि वाणज्जइ

णंदगोटिठ पत्थिवहु कहिज्जइ ।

तहुदेवइमायरि उक्कंठिय

पुत्तसिणेहें खणु विणसंठिय ।

गोमुहकूवउ सहउ वउत्थी

१०. णिग्गुगेहहु=ग्रामे घर से । दुआलिहि=दुष्काल में । कुच्छिहि=कोख में ।

वलद्दु=वेल । णंदगोटिठ=नन्द की गोठ में । देवइमायरि=मां देवकी ।



लोयहु मिसु मंडिवि वीसत्थी ।  
चलिय एंदगोंउलि सहं एाहें  
सहं रोहिणिमुएण चंदाहें ,

घत्ता

मायइ महुमहणु बहुगोवहं मज्झि णिरिक्खिउ ।  
वयपरिचोदियउ कलहंसु जेम ओलक्खिइ ॥१०॥

कृष्ण की गोपमंडली का देवकी और बलराम द्वारा स्वागत—

( ११ )

दुवई

हरि भुयजुवलदलियदाणवत्तु णवजोन्वणविराइओ ।  
उग्गाइपउरपुलय पडहच्छें वसुएवेण जोइओ ॥  
भायरु सिसुकीलारयरंगिउ  
इलहरेण दिट्ठिइ आलिंगिउ ।  
भुयजुयलउं पसरंतु णिरुद्धउं  
जायउं हरिसें अंगु सिणिद्धउ ।  
चित्तिव तेण कंसपेमुण्णउ  
आलिंगणु देंतेण ए दिएणउं ।  
गाढसिणेहवसेण एवांतइ

उक्कांठिय=उत्कंठा से भर गई । गोमहुक्कवउ=गोमुख कूप नाम का व्रत ।  
वउत्थी=व्रतस्था ।

११. सिसुकीलारयरंगिउ=शिशु क्रीड़ा की धूल से रगे हुए । सिणिद्धउ=स्निग्ध ।  
कंस पंसुण्णउ=कंस की दुष्टता । आणाविय=ले आई । अल्लय=खाद्य चीजों

आणाविप्र रसोइ गुणनंतइ ।  
 गंधफुल्लदीवउ संजोइउ  
 भोयणु मिट्ठउं मायइ ढोइउं ।  
 अल्लयदलदहिं ओल्लियकूरहिं  
 मंडयपूरणेहिं धियपरहिं ।  
 गाणाभक्खविसेसहिं जुत्तउं  
 सरसु भाविभूणाहें भुत्तउं ।  
 सिरि णिवद्धवेल्लीदलमालहं  
 कंचणादंड दिग्ग गोवालहं ।  
 सुण्हइं मउदेवंगइं वत्थइं  
 भूसणाइं मणिक्किरणवसत्थइं ।  
 पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ  
 तणयहु उपपरि खीरु सवन्तिइ ।

घत्ता

पोरिसरयणणिहि गुणगणविभावियवासउ ।  
 कुलहरलच्छियइ णं सइं अहिंसित्तउ केसउ ॥११॥

के नाम । सुण्हइं=सूक्ष्म । मउदेवंगइं=रेशमी दिव्य वस्त्र । तिपयाहिण=  
 तीन प्रदक्षिणाएं ।

गोवर्धन ठाना—

दुवई

ता सुखेयरेहिं दामोयरा वासारत्तरुंधणो ।

गोवद्धणु भणोवि हक्कारिउ कयगोजुहवद्धणो ॥

कण्हें बाहुदंडपरियरिडउ

गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।

जल पवहंतु जंतु रा उवक्खउ

धारावरिसे गोउलु रक्खिउ ।

परउवयारि सजीविउ दंतहं

दीणुद्धरणु विहूसणु संतहं ।

पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि ।

हरिगुणकह हुई आहंडलि ।

कालि गलंतइ कंतिइ अहियइं

कलिमलपंकपडलपविरहियइं ।

महुरापुग्गवरि अमरहिं महियइं

अरहंतालइ रयणइं णिहियइं ।

तिण्णि ताइं तेलोक्कपसिद्धइं

खटकारदेहसुहणिद्धइं ।

तं रयणत्तउं कहिं मि णिरिक्खउं

पुच्छिउ कंसें वरुणें अक्खिउं ।

---

१२. वासा=वर्षा की रात को रोकने वाले । गोवद्धणु=गोवर्धन । हुई=हुई ।  
अक्खिउं=कहा । वरुणें=कंस के ज्योतिषी ने । आऊरइ=आपूरति । दावइ=

गायामिज्जइ विसहरसयणें  
जो जलयरु आऊरइ वयणें ।  
जो सारंगकोडि गुणुपावइ  
सो तुज्झु वि जमपुरि पहुदावइ ।

घत्ता

उग्गसेणसुयणु विहुरंधरासि तारिब्बउ ।  
तेण णराहिवइ जरसिंधु समरि मारिब्बउ ॥१२॥

( १३ )

दुवई

भाणु सुभाणु णाम विसकंधर वरजरसिंधु शंदणा ।  
संपत्ता तुरंत जउणायडि थिय खंचिय "ससंदणा ॥

मथुरा के लिए कूच—

अरिकरिदंतमुसलहयकलुसिय  
जइ वि तो वि अरविंदहिं वियसिय ।  
काली कंतिइ जइ वि सुहावइ  
तो वि तंव जणघुसिणें भावइ ।  
जइ वि तुरंगहिं चवलहिं वच्चइ  
तो वि तुरंगहं साण पहुच्चइ ।  
जइ वि तीरि वेल्लीहर दावइ  
तो वि ण दूसहं संपय पावइ ।  
पविउलु दिठ्ठउं सिविरु पमुक्कउं

देता है । सारंगकोडि = धनुष्कोटि । तारिब्बउ = तारेगा । मारिब्बउ = मारेगा ।

१३. सिविस = शिविर ।

गोवर्षिन्दु साणंदु पदुक्कउ ।  
 तणकयप्रलयविहसियथिरकरु  
 वणकणियारि कुसुमरयपिंजरु ।  
 ससुसिरवेणुसद्दमोदियजणु  
 काणण धरणिधाउ मंडियतणु ।  
 फूरणियंधणुवेदियकंदलु  
 कंदलदलपोसियमहिमीउलु ।

घत्ता

गुंजाहलजडियदंडयविहत्थु संचल्लिउ ।  
 मद्धिचइतणुरुहेण आसण्णु पदुक्कउ वोल्लिउ ॥१३॥

( १४ )

दुवई

भो आया किमत्थु किं जोयह दीसह पवर दुज्जया ।  
 पभणइ रांदपुत्तु के तुम्हइं कहिं गंतुं समुज्जया ॥

नन्द गोप का आत्म परिचय—

अम्हइं रांदगोव फुडु वुत्तउं  
 आया पुच्छहुं भणहुं णिरुत्तउं ।  
 भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ  
 अद्धमहीसरु रिउसंधारउ ।

ससुसिर....जणु=सस्वर वेणु के स्वर से मोहित जन ।

काणण...तणु=वनभूमि की धातुओं से मंडित शरीर ।

गुजाहल....विहत्थु=मृगों से जड़े हुए दंडों अपने हाथ में लिए हुए ।

१४. वुत्तउं=कहा । सुभाणु=जरासन्ध का बेटा । हालिउ=अहीर । यमुना के  
 तट पर । वच्चइ=व्रजित जाता है । वणं कणियार=वन कनेर कुसुमों की  
 रज से रंजित शरीर ।

वढ जाएसहुं महुरापट्टण  
 संखाऊरण फण्डलवट्टण ।  
 तहिं विरएवि सरासणचप्पण  
 कण्णारयण लएसहुं घणथण ।  
 पुलयवसेणुगयरोमंचुय  
 तं णिसुणिवि जोयंते णियभुय ।  
 इउं मि जामि गोविंदें भासिउ  
 करमि तिविहु जं पइं णिदेसिउं ।  
 तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ  
 ह्वाल्लिउ किं नृपधीयंउ माणइ ।  
 तं णिसुणोप्पिण वालें वालउ  
 जोयउं कंसहु अयसु व कालउ ।

धत्ता

माहवपयजुयलु उदिट्ठ सुभाणुं रत्तउं ।  
 दिसकरिकुंभयलु सिंदूरं णावइ छित्तउं ॥१४॥

( १५ )

दुवई

णंदें णंदणिब्जु णियणंदणु ससणेहें णिह्वाल्लिओ ।  
 पाहुणयाइं जाहुं सुयवंधुहुं इय वज्जरिवि चालिओ ।

अलौलिक सफलताए—

तावग्गइ पारट्टु णिहेलणु  
 तहिं मि परिट्ठिउ मद्दिवइरक्खणु ।  
 मिलिय जुयाण अणेय मद्दावल  
 पायपहरकंपावियमद्दियल ।

को वि ण संचालइ जे थामें  
 ते महमहर्गो जयमिरिकामें ।  
 उच्चाइवि सुरकरिकरचंदहिं  
 पत्थरखंभणिदिय भुयदंडहिं ।  
 अरिवरणरणियरें परियाणउ  
 रानंदगोउ लहु जगणिइ रीणिउ ।  
 आउ जाहुं हो पुत्त पडुच्चइ  
 गोउल सुणउं सुइरु ण मुच्चइ ।  
 एव भणोपिणु कण्हपयावें  
 परिमुक्काइ ताइं भयभावें ।  
 मलवज्जिइ महिदेसि समाणइ  
 पुणरवि तेत्थु जि ठाणि चिराणइ ।  
 आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि  
 थियइ ताइं दइउ जि अहिणंदिवि ।

घत्ता

सुपसिद्धउ भरहि सो रानंदगोठु गुणराइहिं ।  
 पण्फयंत समहिं वणिणज्जइ वरणरणइहिं ॥१५॥

## कृष्ण का प्रशस्ति—

कण्हेण समाणउ को वि पुत्तु  
 संजणउ जणणि विहवियसत्तु ।  
 दुद्धरभररणधुरदिएणखंधु  
 उद्धरिय जेण णिवडंत वंधु ।  
 भंजिवि णियत्तइं गयवरगईइ  
 सहं माणिणीइ पोमावईइ ।  
 अहिणंदिय जिणवरपायरेण  
 महुरहि संणिहियउ उग्गसेण ।  
 कइवयदियहहिंरइ कीलिरीहिं  
 वोल्ताविउ पहु गोवालिणीहिं ।  
 पंगुत्तउं पइं माहव सुहिल्लु  
 कालिंदितीरि मेरउं कडिल्लु ।  
 एवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु  
 महुं उप्परि दीसहि अथिरचित्तु ।  
 क वि भणइ दहिउ मथंतियाइ  
 तहुं मइं धरियउ उव्वंतियाइ ।  
 लवणीयलित्तु करु तुब्भु लग्ग  
 क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्ग ।

१६. कण्हेण समाणउ=कृष्ण के समान । विहवियसत्तु=शत्रु का नष्ट करने वाले । दुद्धरभरण=कठोर भार वाले युद्ध की बुरी अपने कंधे पर उठाने वाले । महुरहि=मथुरा में । कइवइ=कितने ही दिनों तक । रइकीलिरीहिं=रत क्रीड़ा करने वाले । गोवालिणिहिं वोल्ताविउ पहु=गवानों ने प्रभु कृष्ण से



## धनपाल

कुरुजांगल के गजपुर का नगर सेठ धनवइ । उसका पुत्र भविस, अकारण परित्यक्ता मां. कमला के साथ मामा के घर रहता है । सयाना होने पर वह, सीतेले भाई वंधुदत्त के साथ द्वीपान्तर में वाणिज्य के लिए जाता है; भाई उसे अकेला छोड़ कर साथियों के साथ बढ़ लेता है । कुमार भटक कर तिलकद्वीप जा पहुँचता है । जहाँ उसे प्रचुर सम्पत्ति के साथ भविष्यांशरूपा मिलती है; लौटते में उन्हें फिर वंधुदत्त का काफिला मिलना है । वह उसका सत्कार करता है । वंधुदत्त फिर घोड़ा देकर, भविष्यांशरूपा को उड़ाकर, गजपुर जाकर, उससे विवाह करना चाहता है । दुःख का मारा भविस, मणिभद्र यक्ष की सहायता से गजपुर पहुँचने में सफल हो जाता है, वह दरबार में जाकर, अपनी फरियाद करता है । प्रस्तुत सन्धि में यही वर्णन है ।

### दरबार में कुमार भविस का प्रतिवेदन

रायंगणि गंपि पयडिवि दुट्ठहो दुच्चरिउ ।  
तं निसुणहु जेम भविसयत्ति जसु वित्थरिउ ।

भविस का राजभवन के लिए कूच—

दाइय दप्पुवंचु आयन्निवि  
माणकसायसल्लु मणि मन्निवि ।  
हरियत्तहो संकेउ समासिवि  
कमलदलच्छि लच्छि संवासिवि ।  
निययजणेरिवयण संपेसिवि  
पुत्तावरसंकेउ गवेसिवि ।  
वहु नवल्ल पाहुडइं समारिवि

१. रायंगणि=राजा के प्रांगण में । गंपि=जाकर । दाइय=दुष्ट सीत पुत्र ।

चंदप्पहु जिणवरु जयकारिवि ।  
 निग्गउ वणिवरिन्दु हहुवारहो  
 भड्ढडनिवह विसमसंचारहो ।  
 जहिं गय गुलगूलंति पिहु  
 जंगम हिलिहिलंति तुक्खार तुरंगम ।  
 जहिं मंडलियसक्कसामंतहं  
 निवडइ कणयदंडु पइसंतहं ।  
 गलइ माणु अहिमाणु न पुज्जइ  
 नियसच्छंदलील नउ जुज्जइ ।  
 जहिं अब्भोहज्जजालंधर  
 मारुअटक्ककीररवववर ।  
 मरुवेयंगकुंगवेराडवि  
 १ उजरगोडलाडकन्नाडवि ।  
 इयएमाइ अउव्व वसुंधर  
 अवसरु पडिंवालंति महा नर ।

यत्ता

सामंतसएहिं जंसेवज्जइ रत्तिदिग्गु ।  
 तं रायदुवार पिक्खिवि कासु न खुइमणु ॥१॥

दरवार में उपहार देकर स्थान ग्रहण करना—

तं भडथडवमालु आसंधिवि  
 तन्निवि सीहवार गउ लंधिवि ।  
 दिट्ठु नरिंदत्थाणु दुसंचरु  
 सात्रलेवनरनिवह निरंतरु ।  
 नरवइ सव्वावसरपरिट्ठउ  
 दिट्ठु कणयसिंहासणि संठिउ ।  
 परिमिउं निविडतिविहपरिवारिं  
 जहिं ओसासु वि नउ सिगारिं ।  
 तं अत्थाणु अलीढइं लंधिउ  
 पुणु पहुपायमूलु आसंधिउ ।  
 करिवि पणाउ पणयसिरकमलिं  
 पाहुडु पुरउ समप्पिउ अमलिं ।  
 किउ सम्माणदाणु संभासणु  
 सइं राइं देवाविउ आसणु ।  
 चामरगाहिणीउ अवलोइउ  
 पहुपरिवारु सयलु आमोइउ ।

घत्ता

तो भणइ नरिंदु करहिं वयणु संखेवगउ ।  
 सो आणमि इत्थु जेण समउ संबंधु तउ ॥२॥

२. कासु मणु न खुट्ठइ—किसका मन क्षुब्ध नहीं होता । नरिंदत्थाणु=राजा का स्थान । पाहुडु=प्राभूत=उपहार । अमलि=स्वच्छ । सइं=स्वयं । देवाविउ=दिलाया । आमोइउ=आमोदित=प्रसन्न ।

धनवद् को बुलाए जाने की राजा से प्रार्थना और विवाह के कारण  
धनवद् की आने की असमर्थता—

तो करकमलकयंजलि हृत्ये  
पहु विन्नविउ विणयसुकयत्थे ।  
पुर पउरालंकारनियत्ते  
धणवइं कुक्कावहो सिउ पुत्ते ।  
तं निसुणेविणु वयणु कुमारहो  
लहु आएसु दिन्नु पडिहारहो ।  
पहुआएसि सोवि पधाइउ  
धणवइ पुत्तसहिउ निज्झाइउ ।  
आवहु पउरु लएविणु सारउ  
राउलि अत्थि तुम्ह हक्कारउ ।  
वाइउ कोवि आउ सुनिवद्धउ  
तहु तुम्हइं समाणु संवंधउ ।  
पभणइं रायसिट्ठि अविसन्नउ  
अम्हइं निरु विवाहु आसन्नउ ।  
राउलि पउरकम्म संखेव्वउ  
वित्तइ पाणिग्गहणि करिव्वउ ।  
तिं वयणि विणियत्तु अखेइउ  
वयण गंपि नरवइहि निवेइउ ।  
सिट्ठि विवाहारंभि समाउलु  
न सरइ खणु वि सरंतहो राउलु ।

३. निज्झाइउ=देखा । राउलि=राजकुल । हक्कारउ=बुलाया । वाइउ=वादी ।  
संवंधउ=सम्बन्धी । पउरकम्म=प्रवर कर्म । समाउल=समाकुल ।

घत्ता

तो वयणु फुरंतु भविसयत्तु विन्नवइ पहु ।  
पइसंतहो इत्थु फुसमि विवाहारंभु तहु ॥३॥

धनवइ को दरवार में उपस्थित होने के कठोर आदेश

( ४ )

तं णिसुणेवि चमक्किउ राणउं  
पहु आएसु सकक्खडमाणउं ।  
पेसिउ कुरुडु समच्छरु दूवउ  
सोवि ताहं आसन्नीहूवउ  
धणवइ सयलु कज्जु आमिल्लहो ।  
सहुं पउरिं राउलि संच्चलहो ।  
तं निमुणेवि सिट्ठिं आइल्लिउ  
कक्खडवयणवियणि सल्लिउ ।  
सम्माणिवि दूवउ बइसारिउ  
अप्पुणु बंधयत्तु ओसारिउ ।  
दीसइ कारणु किंपि असारउ  
अइकक्खडु राउलि हक्कारउ ।  
जइ परएसि किंपि किउ कुच्छिउ  
तो कहि करहं कज्जु को णच्छिउ ।  
पइसिवि राउलि समउ सहायहो  
पहु परिओसहुं लग्गिवि पायहो ।

- 
४. चमक्किउ=चौक गया । कुरुडु=कठोर । समच्छरु=समत्सर । आसन्नी हूवउ=सन्नी भूत । बइसारिउ=बैठाया । ओसारिउ=हटा दिया । कुच्छिउ=कुत्सित । फुडु=स्फुट ।

घत्ता

फुडु कारण किंपि महु नियमणि उत्पन्नु भउ ।  
एहइं दूएण नउ हक्कारिउ कहिमि हउं ॥४॥

( ५ )

धनवइ की अपने पुत्र वंशुदत्त से पूछताछ—

तं निसुणिवि परिचितइ दाइउ  
पंचहं सयहं मज्झि को वाइउ ।  
जंपइ मम्मच्छेय सहुं राएं  
कयण गहणु महु तेण वराएं ।  
हुक्कमि तेण समउ इक्कंतरु  
इउ चितंत दिन्नु पडिउत्तरु ।  
चांगउ वयणु तुम्ह परिपुच्छिउ  
मइं परएसि काइं किउ कुच्छिउ ।  
घरि अप्पणइं ताम कलि किज्जइ  
पच्छइ पुणि राउलि पइसिज्जइ ।  
पंचहिं सयहिं समउ जंपतउ  
तेण समाणु गणंति विढत्तउ ।  
कोवि राउलि पइद्दु पहु रंजिवि  
वंछइ तं सम्माणु विहंजिवि ।  
जइ तं ताहं विहंजिवि दिज्जइ  
तो वि राउलि वि नाहि पइसिज्जइ ।

५. मम्मच्छेय=मर्म का रहस्य । वराए=वेचारे ।

कवणु गहणु किर एहिं वरायहिं  
 काउरिसहं अइत्ठ पडिवायहिं ।  
 भंजिवि पंचसयहिं जो पम्मुहुं  
 पइसिवि राउलि काहं परम्मुहुं ।  
 अल्लिवि पंच वि सय दंडावहु  
 जो जंपइ तहो सिरु खंडावहु ।

धत्ता

तो भणइं पुरेसु वट्टइ ताम एउ करहु ।  
 रायंगणि गंपि पिसुणहो पिसणत्तण हरहु ॥५॥

( ६ )

नवइ की पुत्र के साथ राज दरबार में उपस्थिति—

तो नंदणपवंचमोहियमइ  
 सयलु पवरु मेलावइ धणवइ ।  
 गउ राउलहो गरुयसंखोहिं  
 असुणिय कज्जाकज्ज विबोहिं ।  
 सहं पुत्ति पट्टपुरउ परिट्ठउ ।  
 साहंकारु विसारु अणिदिठउ ।  
 थिउ नरवइ आवेसु धरेविणु  
 भविसयत्तु पच्छन्नु करेविणु ।  
 वणिवरु पणयसगगिरु जंपइ  
 आसंघइ राउलइ समप्पइ ।

---

आवेसु=आवेश । पच्छन्नु करेविणु=पीछे करके, छिपाकर । विणु=विध्वन ।  
 पच्चवसु=प्रत्यक्ष ।

जइ अत्रराहु तोवि नउ जुज्जइ  
 जइ सुहि तो एहउ किं किज्जइ ।  
 कज्जारंभि मणोरहवंतए  
 किज्जइ विग्घु पिसुणि पवहंतए ।  
 विहसिवि वंधुयत्तु पडिवक्कइ

बंधुदत्त की चुनौती—

अमह रिद्धि जो सहिवि न सककइ ।  
 सो पच्चरक्खु पुरउ वइसारहि  
 सुदिढवयणसंकडि पइसारहि ।  
 किउ पेसुन्नु जेण भयभीसि  
 अंतरु तुलमि अज्जु तहो सीसि ।

वत्ता

हुंकार मुएवि भविसु परिदिठउ तहो समुहुं ।  
 इहु सो पडिवक्खु करहि वयणु जइअत्थिमुहुं ॥६॥

( ७ )

कुमार भविस की प्रति चुनौती—

तो हुंकारु करेवि सुनिब्भरु  
 जोवइ समुहु जाम बहुमच्छरु ।  
 ताम्व कुमारहो वयणु नियच्छिउ  
 भत्ति विलीणु लहिवि नंपुच्छिउ ।



लज्जइ समुंहुं निणवि न सक्किउ  
 नियदुच्चरियइ माणकलंकिउ  
 नउ पडिवयणु करइ नउ पणवइ  
 मउलियवयणकमलु थिउ धणवइ ।  
 राए पंच वि सय हक्कारिव  
 कोक्किवि नियडि पुरउ वइसारिय ।  
 तेहिं वि भविसयत्तु अवलोइवि  
 लज्जइ समुंहुं न सक्किउ जोइवि ।  
 पच्चारिय सयलवि भूवालं  
 अहो किं तुन्हि गिलिय कलिकालि ।  
 मुहि सरलहं अब्भंतरी घोरहं  
 दीसइ तुम्ह चरिउ जं चोरहं ।  
 पट्टवयणि अणिओयणिउत्तहं  
 पासेइउ सरीरु वणिउत्तहं ।

घत्ता

हुइ छायाभंगि थोरपलंबुब्भियभुइण ।  
 पियवयणु चवेवि मं भीसिवि घपवइसुइण ॥७॥

( ६ )

पांच सौ वप्रिय पुत्रों का बयान—

देव देव एयहं अविहावहं  
 न करिव्वउ अवराहु वरायहं ।

८. कोक्किव=बुलाकर । कलिछलि=कलिकाल से । अणिओयणि उत्तहं=अनियोग में नियुक्त; बुरे काम में फंसे हुए । पासेइउ=प्रस्वेदित=पसीवा पसीना हो गया । छायाभंगि=छायाभंग=कांति भंग । हु हुइ=हो गयी । वुच्चइ=उच्चते=कहा जाता है । पुत्तहि=पुण्य से, भाग्य से । हुअ=हुए ।

जामहिं पहु अवहिणं परिसक्कइ  
 तामहिं भिच्चु धरेवि न सक्कइ ।  
 तो पुच्छिय पियवायणं राणं  
 तेहिंमि कहिउ सयलु अणुराणं ।  
 पुरउ परिट्ठिउ बिन्नि महंतर  
 तेहिं निवेइय वाय निरंतर ।  
 अहो रायाहिराय परमेसर  
 सम्हइं कुलि जाणिज्जहं वणिवर ।  
 सुअउ न सुणहं न दिट्ठउ देक्खहं  
 किम एवद्धु वयणु तउ अक्खहं ।  
 जं किय एण कम्म अविचारिउ  
 तं जणवइ लज्जणउ निरारिउ ।  
 पियरितुल्लु जो बंधउ वुच्चइ ।  
 सो किम्ब वणि वंचेविणु मुच्चइ ।  
 ताहिंमि एहु पुन्नहिं न समत्तउ  
 हुउ सकलत्तु महासियवंतउ ।]

वत्ता

अम्हइंमि भवंत निद्धण निव्ववसाय हुअ ।  
 गय तं जि पएसु दुस्मण दुस्मारुण धुअ ॥८॥

( ६ )

पांच सौ वणिक् पुत्रों का वयान—

तं पियवयणु चवंतहो आयहो  
 खमिउं एण बहुविणयसहायहो ।

शिखरसज्जणसमिद्धि दरिसाविय  
 पंचवि सय भोयणु भुंजाविय ।  
 सम्माणिवि परिहाविय वत्थइं  
 निययधणहो भरियइं वोहित्थइं ।  
 पुणारवि सअणु तहिं जि घल्लेविणु  
 आयउ अतुलु महाधणु लेविणु ।  
 अह पहु परउ एउ किम्ब सीसइ  
 छेयंतरि पेसुन्नउं होसइ ।  
 विन्नवि तुहं मणनयणाणंदण  
 कमलाएविसरूवहि नंदण ।  
 होसइं तं जि तेम घरि तुम्हइं  
 धज्जदंडु निवडेसइ अम्हहं ।  
 तं निसुणिवि विहसिउ नरनारिं  
 पियसुंदरि वरविलयहिं अवलोइउ  
 सळों पहुपरिवारिं जोइउ ।

घत्ता

आलिं गिउ लेवि राएं नेह्निरंतरिण ।  
 अद्दासणु दिन्नु पुव्वसणुह गुणंतरिण ॥६॥

( १० )

राजा की भविस से बचपन की पहचान—

पुणु पुणु पहु दरिसइ नियलोयहो  
 अहो नवल्लु पडिवाइउ जोअहु ।

एहु सु धणवइ पुत्त महंतउ ।  
 कमलहितणउं सुद्धु गुणवंतउ ।  
 मइं कलंतरेण नउ नायउ  
 अहो लोयणहो दिन्नु अणुरायउ ।  
 बालउ इत्थु एहु कीलंतउ  
 चरियइं सुद्धु सुहावउ होंतउ ।  
 पोढविलासिणीहं रुज्झतउं ।  
 एक्किक्कइं समाणु जुज्झतउं  
 बहुसिहारतार तोडंतउ  
 सुनियत्थइं बत्थइं मोडंतउ ।  
 सिंहासणसिद्धरोवरि थंतउ  
 चुब्बिजंतु कवोलइं खंतउ ।  
 वडिढउ मामहं सालि असंगमु  
 बहुकालहो संजाउ समागमु ।  
 एम्बहिं करमि तेम सविसेसणु  
 जेम कयावि न होइ अदंसणु ।  
 तो पियसुंदरीहिं अवलोइवि  
 थियनियदुहियहिं वयणु पलोइवि ।

धत्ता

तहिं काले सुमित्त राए तासु परिट्ठविय ।  
 सम्माणिवि लोय नियनियनिलयहं रट्ठविय ॥१०॥

---

१०. पोढ विलासिणीइं=प्रीढ़ विलासिनियों को । बहुसि  
हार तार ।

धणवइ वंधुअत्त रक्खाविय  
 जणि गरुयावराद्ध लक्खाविय ।  
 मंदिरि कडयमुद्ध संचारिय  
 विह्वप्फड सरुव ओसारिय ।  
 भविसहो सयणविदि दिहि दरिसिवि  
 परमुच्छवि घणु हियइं पवरिसिवि ।  
 राएं पउरुप मुहुं वोल्ताविउ  
 तुम्हहं एउ कज्जु संभाविउ ।  
 एहु सिट्ठ पुरपउरि महंतरि  
 आयउ चोरु छुहिवि कक्खंतरि ।  
 दिट्ठ तुम्हि धिट्ठत्तणु आयहो  
 तंपि करेवि चडिउ परिछेयहो ।  
 मंडिवि अंगु अतुलु भयभीसहो  
 दरिसिय विहिमि संधि नियसीसहो ।  
 एवहिं थिय अयहेरि करेविणु  
 जं किंजइ तं भणइ मिलेविणु ।

घत्ता

तो भणिउं समूहु सिरु विहुणइं घुम्मइं चवइ ।  
 अहो देखहो तुम्हि कम्महंतणिय विचित्तगइ ॥११॥

## भविष्य का सम्मान—

तो कारण परिचितिवि भारिउ  
 मइवतेहि समुंहु ओसारिउ ।  
 करइ वयणु समवाशसमुच्चइ  
 एहइ कालि काइं पहु वुच्चइ ।  
 जंपइ कोवि पुराइयकम्महु  
 अइयारिं पहु जाउ परम्मुहु ।  
 भविसयत्तु अहिणं सगमणिउं  
 सट्ठिवि द्वायार्भगहो आणिउं ।  
 कोवि भणइ अविद्याणियत्तत्ते  
 अहु अजुत्त कीयउ वधुयत्ते ।  
 परिण विदत्त हरेवि असारउ  
 किम वुच्चइ वणु एहु मदारउ ।  
 अन्ने वत्तु पउर मादण्णे  
 अइकम्महो किर काइं वियण्णे ।  
 एवहिं वयणु क्खिपि तं वुच्चइ  
 जेण सिद्धिउ सइं पुत्ति मुच्चइ ।

अन्ता

परिचितिवि कञ्जु एक्कायारु करंवि नहु ।  
 पडिगाहिवि सिद्धिउ पुणु पउरिं विनत्त पट्ट ॥१२॥

१२. ओसारिउ=इटाया । अइयारि=अनिवार, अनिवार्य, आवश्यक । परिण  
 विदत्त=दूसरे का कमाया ।

थाइवि पउरपमुंहु पडिजंपइ  
 देव देव पउरिं विन्नपइ ।  
 धणवइ कुरुजंगलि विपहाणउ  
 तउ धरि सुट्ठु, समुन्नयमाणउं ।  
 सो अन्नायकारि जं वुच्चइ  
 तं पउरहो न मणाउ विरुच्चइ ।  
 जइ अन्नाउ तासु मणि भावइ  
 ता किं पुर पउरहो वि पहावइ ।  
 एक्कु सरीरु विभायहि हुत्तउ  
 तिहिंमिं ताहं सामन्नु विढत्तउ ।  
 बंधुयत्तु चोरत्तणु पावइ  
 जइ अन्नहो धणु लेविणु आवइ ।  
 भाइहुं पुणु अविहत्थु हरंतहं  
 दाइयमच्छरु हियइ धरंतहं ।  
 निग्गहु तुम्हि ताहं न करिव्वउ  
 परजीवावहारि जीवेव्वउ ।

घत्ता-

परियाणिवि लेउ भविसयत्त अप्पणउं धण ।  
 आमिल्लहि सिट्ठि करउ पुत्तु पाणिग्गहु ॥१३॥

## पौर प्रवरों का निर्णय—

जं विन्तत्तु पउरसंघाए'  
 तं जि तेम पडिवज्जिउ राए' ।  
 वइसहु भविसयत्त वोल्लावहु  
 अवरुप्परु संतोसु करावहु ।  
 तो संगित्तिउ पउरु अप्पाहिंवि  
 धणवइ पत्तसहिउ पडिगाहिंवि ।  
 अहो अहो भविसयत्त बहुमाणउ'  
 तुह' अम्हहं भवात्तसमाणउ' ।  
 वंधुयत्त जं लेविण आयउ  
 तं धणु धरि संवरिंश्च विहायउ ।  
 जं वणगहणि खित्तु अण्णियोयहो  
 तं अवरहु खमहिं पुरलोयहो ।  
 भणइं कुमारु कयंजलि हयउ  
 नहु नियजम्मु अज्जु सकयत्थउ ।  
 जं पुरलोए' वयणु कराविउ  
 करहु किपि जं मयरहो भाविउ ।  
 जे गय तहु सहाय ते पुच्छिंवि  
 पाणिग्गहणु करहु पडियच्छिंवि ।

घत्ता

पुर पुच्छइ तेवि करहु कज्जु जं जेन थिउ ।  
 तो तेहिं मिलेवि तज्जिंवि दिहु म्मेउ कित ॥१५॥



( १५ )

गुञ्जाचरण सीलमुनिउत्तिहिं  
 दिदु समवाउ करिवि वणिउत्तिहिं ।  
 सुअणत्तण गुणेण जं रक्खिउ  
 तंपि अभउ मग्गेविण अक्खिउ ।  
 अहो परपउरि केम साहारिउ  
 अज्जवि एहु कज्जु निरु भारिउ ।  
 कहि विवाहु कहिं सुहुं बंधुत्तहो ।  
 कहिं निव्वुइ समवाएं गोत्तहो  
 एह वर जुवइ थाइ जा सारी  
 सा गेहिणि भविसयत्तहो केरी ।  
 अहो परमेसरि माय महासइ  
 नामग्गहणि ताहि दुहु नासइ ।  
 काइं न वुत्त एण दुवियप्पे  
 तोवि न चलिय सीलमाहप्पे ।  
 वुच्चइ तेही तारि पइव्वय  
 हुअ पच्चक्ख महाजयदेवय ।  
 धयवडु भग्गु भरिवि दुव्वायहो  
 हल्लोहसिउ चित्तु संघायहो ।  
 भल्लोब्भल्लिउ सलिलु रयणायरि  
 सयलु वि जणु बुड्डंतउ सायरि ।  
 ताहि सनासि एण साहारिउ  
 जामहिं बंधुयत्तु ओसारिउ ।

घत्ता

पणवंतइ लोइ जइ उवसमु न करंतिसइ ।  
 तो बुड्डइं आसि हुअ सव्वहं खयकालगइ ॥१५॥

पांच सौ वणिक पुत्रों द्वारा—शोला अपहरण का गंभीर आरोप—  
बाप बेटे को हथकड़ियां जेल—

एहावत्थजाय जणविंदहो  
वेलाउलि उत्तरिवि समुदहो ।  
आएँ अम्हि धरिवि निरुतज्जिय  
थिय कुलकित्ति कलंकहो लज्जिम  
कहिमि को वि काइ मि न पयासइ ।  
थिय भोयणु परिहरिवि महासइ  
अम्हइं दुक्खु दुक्खु तन्हाविय ।  
ओसहमित्तु गासु गिन्हाविय  
आणेविणु सुहिसहयणहिं दक्खिय  
कन्नुकुमारि भणिवि जणि अक्खिय ।  
पइसारिय धरि गरुय विहोएँ  
थिय संघट्टु करिवि पइसोएँ ।  
गंभीरत्तणेणं नउ अक्खइ  
अइहरि कुलहो कलंकउ रक्खइ ।  
एवडडतरेण जा अक्खइ  
सा जि एहु परिणवइ वंळइ ।  
सयणिहिं तह विवाहु पारंभिउ  
एत्थंतरि एरिसउ वियंभिउ ।  
तिलमित्तुवि जइ अलियउआयहो  
तो अम्हइं मिच्छित्त परायहो ।  
निसुणेविणु वणिउत्तहो वयणइं  
थियइं कन्त भंषिवि सहिसयणइं ।

वडिदुउ गरुआवेसु नरिंदहो  
 जोइउ समुहुं कुरुडभडविंदहो ।  
 ओसारेवि वेवि दिहु वंधहो  
 अणुइवंतु फलु दुन्नयरंधहो ।

घत्ता

गयउरु सविलक्खु अंसुजलोल्लियलोयणइ ।  
 सुहिसयणसएहि घरि घरि कियइ अभोयणइ ॥१६॥

( १७ )

प्रजा में प्रतिक्रिया—

घरि घरि हट्टि हट्टि जणु जूरिउ  
 भग्ग मडपकरु हियइ विसूरिउ ।  
 हा विहि जाउ सुट्ठु विच्छायउ  
 जं जम्महोवि न केणवि नायउ ।  
 हो राउलि पुरपउरे सहायउ  
 तासु मलित्तु केम घरि आयउ ।  
 जंपइ कोवि न एयहों अग्गे  
 एउ सव्वु दुप्पुत्तहो सग्गे ।  
 कोवि चवइ परिवडिड्य खेरउ  
 एउ पवंचु सरूवहि केरउ ।  
 भविसयत्तु वुल्लाविउराए  
 सहु माणि वडिड्य अणुराए ।  
 करहि किंपि जं जुब्जइ आयहं  
 दुन्नयदोस विडंविक्कयायहं ।  
 तं निसुणेविणु वुत्तु कुमारि

इउ लज्जावणिज्जु अइयारिं ।  
 अह अम्हंमि एउ किं जुज्जइ  
 जं इउ एवड्ढंतरु किज्जइ ।

घत्ता

असमंजसु कज्जु एहउ किंपि समावडइ ।  
 जं थोइलयंपि दुत्तरि दुप्पवंसिपडइ ॥१७॥

( १८ )

निर्णय में परिवर्तन—

मणमलित्तु किं कासुवि भावइ  
 अह पुब्बकिउ कम्मु करावइ ।  
 जामहिं कज्जु दुसंकडिं आवइ  
 तामहिं सुअणत्तणु न पहावइ ।  
 दुक्करु कज्जाकज्जु वियारहं  
 राउलि दप्पसाडु दुव्वारहं ।  
 जं पहुपुरउ वियारि न भंजइ  
 तं इहरत्ति परत्तिवि छिज्जइ ।  
 एवहिं महु सम्माणि जुज्जइ  
 निक्कउ पुरपरिवाडिए किज्जइ ।  
 जइवि तुम्ह पहुसत्तिए छज्जइ  
 तोवि सुंदरु जं पुरु पडिवज्जइ ।  
 तउ सम्माणु जइवि मइं पाविउ  
 पुरुअवराहि जइवि संभाविउ ।  
 तोवि मज्झु मणु एउ न माणइ  
 नउ सोहइ विणु पउरपो आणइं ।  
 न लहमि सुद्धि देहजणिगारिय

विमुहिं पउरि जणणि वंधारिय ।

इसइ नरिदु पलंबियसाडहं

सुहियउ होइ पनंचु किराडहं

न चवहिं किंपि अणज्जु अवित्तिहिं

न चलहिं एउविं इक्कु विणु नित्तिहिं ।

घत्ता

सुणिवद्धनिओइ इहपरलोय विसुद्धमइ ।

धणवालवि होवि न करदि खणुविपमायमइ ॥१८॥

बिज्जिज्जमाणु चलचामरेहिं ।  
 लीलाविलास सुहसा मिणीहिं  
 गाइज्जमाणु वरकामिणीहिं ।  
 कलयंठिरावकयहीलणेहिं  
 संथुब्बमाणु वंदीजणेहिं ।  
 गुणपउररायतगयमणेहिं  
 सेविज्जमाणु गायरजणेहिं ।  
 परलोयकज्जे उज्जुवगईहिं  
 सलह्मिज्जमाणु सज्जणमईहिं  
 अवरेहिं वि लोयहिं कलियमाणु  
 गउ सुंदरु पुरवरे जणसमाणु ।

घत्ता

सो पुरवरणारिहिं गुणणिलउ पइसंतउ दिट्ठउ णयरेकइ ।  
 एं दसरहणंदगु तेयणिहिं उव्वहिं सुरणारीहिं जइ ॥

( २ )

पुर वनिताओं की प्रतिक्रिया—

तहिं पुरवरि खुहियउ रमणियाउ  
 भाणट्ठियमुणिमणदमणियाउ ।  
 क वि रहसइ तरलिय चलिय चलिय णारि  
 विह्वप्पफड संठिय का वि वारि ।

किया जाता हुआ, चंचल चामरों से जिस पर हवा की जा रही है ।  
 संथुब्बमाणु=मंत्युत, चारण, जिसकी स्तुति कर रहे हैं । उज्जुवगईहिं=सीधी  
 गति वाले ।

२. भाणट्ठियमुणि -- याउ=ध्यान ये स्थित मुनियों के मन का दमन करने वाले ।

क वि धावइ णवणिवणहलुद्ध  
 परिहाणु ण गलियउ गणइ मुद्ध ।  
 क वि कञ्जलु वहलंउ अहरे देइ  
 णयणुल्लए लक्खारसु करेइ ।  
 णिग्गंथवित्ति क वि कडिहिं लेइ ।  
 क वि णेउरु करयलि करइ वाल  
 यिवरीउ डिंभु क वि कडिहिं लेइ  
 सिरु छंडिवि कडियले धरइ माल ।  
 णियणंदणु मण्णिवि क वि वराय  
 मज्जारु ण मेल्लइ साणुराय ।  
 क वि धावइ णवणिउ मणे धरंति  
 विहलंघल मोहइ धर सरंति ।

घत्ता

क वि माणमहल्ली मयणभर करकंडहो समुहिय चलिय ।  
 थिरथोरपओहरि मयणयण उत्तकणयद्ववि उज्जलिय ॥

( ३ )

राजप्रसाद का वर्णन और स्वाकत—

णवरज्जलेभरंजियदिएण  
 करकंडइ पूरे पइसंतएण ।  
 गयरवंघे चडिन्णय जंतएण  
 णिउ राउलु लीलए पत्तएण ।  
 तें दिट्ठउ रायणिकेउ तुंगु

रहसइ = हर्ष से । परिहाणु = परिधान ।

३. तुंण = ऊंचा । हिमवंतुसिगु = हिमालय का शिखर । घयवडवमालु = वज्रपत्रों

अइमणहरु णं हिमवंतसिंघु ।  
 मुत्ताहलमालातोरणेहिं  
 णं विहसइ सियदंतहिं घणेहिं ।  
 किंकिणिरणंतु धयवडवमालु  
 णं णच्चइ पणयिणि विहियतालु ।  
 चामीयरमणिरयणेहिं घडिउ  
 णं सग्गहो अमर विमाणु पडिउ ।  
 तहिं पइसइ णवणिउ विमलबुद्धि ।  
 पारंभिय गुरुयण नणविमुद्धि ।।  
 करहेमकुंभु मंगलु करंति  
 क वि माणिणि णिग्गय ता तुरंति ।  
 परिमंगलु किउ वरदीवएहिं  
 जय कारिउ पुणु णारीसएहिं ।  
 सोवण्णकलसकय उच्छवस्मि  
 पइसाहिउ सो णिवमंदिरस्मि ।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि विणयभावसंजुत्तउ ।  
 सामंतमंतिजणपरियरिउ परिअच्छइरज्जु करंतउ ॥

( ११ )

ताह तेण वि रज्जु करंतएण  
 आणाविय वंस तुरंतएण ।



## सुशासन और लीलावती के पट चित्र का दर्शन पूर्वरंग—

आएसवसेण व जे धरिय  
 धयअंकुसछत्तहं दंड किय ।  
 आसावसेण जो तहिं जि ठिउ  
 पुणु आणिवि दियवरु मंति क्रिउ ।  
 ता एककहिं दिणि करकंडएण  
 वरलीलएं गयरे भमंतएण ।  
 देसंतरु जो हिंडंतु पत्तु  
 तहिं दिट्ठउ सो णरु ललियगत्तु ।  
 पुणु दिट्ठउ तहो करे पडु विचित्तु  
 जो मोहइ लोयहं तणउ चित्तु ।  
 सो भणियउ करकंडइं णिवेण  
 पडु अप्पहिं देखहं सहं हिएण ।  
 ता तेण समप्पिउ पत्थिवासु  
 जणु रत्तउ अणुराएण जासु ।  
 सो पंचवणु गुणगणसहंतु  
 करकंडइं जोयिउ पडु सहंतु ।  
 तहिं रुउ सलक्खणु तेण दिट्ठ  
 णं मयणवाणु हियवएं पइट्ठ ।  
 मुहकमलु सउण्हउ दीहसासु  
 जरु दाहु अरोचक हुयउ तासु ।

घत्ता

करकंडइं जोइउ पडु पवरु थिउ हियवएं विभिउ एककु खणु ।  
 जणे पुलयइं कहियउ तहो विरहु तें मडल्लिउ णवणिउ विमणमणु ॥

मदनावली से विवाह का प्रस्ताव—

गिणव हियउ मुण्डिउ पडधरणरेण  
 वरु होइइ कण्णहे एहु भरेण ।  
 इय मुण्डिवि तो वि पडिलविउ भाय  
 पडु अप्पहि अम्हहं जाहुं राय ।  
 णउ छंडइ सो पड उल्लसंतु  
 पुणु भणइ णरेसरु णीससंतु ।  
 महो सहयर अक्खु पयत्तएण  
 पडु लेवि भमहि कज्जेण केण ।  
 आयणिवि तें वयणाणुसारु  
 तहो रायहो कहियउ पडिवियारु ।  
 एत्थत्थि देव सोरट्ठु देसु  
 सुरलोउ विडंविउ जें असेसु ।  
 तहिं णयरु अत्थि गिरिणयरु णामु  
 सुरखेयरणरणयणाहिरामु ।  
 तहि राउ अत्थि अरिसिरकयंतु ।  
 अजवम्मु णाउ अजियंगिकंतु ।

घत्ता

तहे रूपकरंडी कलसरिय जा णयणपियारी णरवरहं ।  
 मयणावलि णामइ तेयणिवि सा हूई धीय मणोहरहं ॥

---

पडिलविउ=प्रतिलपित=प्रत्युत्तर दिया । आयणिवि=आकर्ष्य सुनकर ।  
 पयत्तएण=प्रयत्न से । पडिवियारु=प्रति विचार । सोरट्ठु=सौराष्ट्र देश ।  
 रूप करंडी=रूप की खान ।

गीतों में करकंडु की प्रशंसा सुनकर मदनावली का उस पर अनुरक्त हो उठना--

मयणावलि सा एककहिं दिगम्भि  
 गय सहियहिं सहुं रांदणवणम्भि ।  
 तहिं खेयर जणमणणयणइट्ठ  
 दोल्लहरि चडीणा ताइं दिट्ठ ।  
 गायंता गेयइं मणहराइं  
 कागलियइं करकंडहो किराइं ।  
 गेयाइं मणोज्जइं सा सुणेवि  
 धरणीयले णिवडिय तणु धुणेवि ।  
 विहलंचल गयकल भीणदेह  
 कसणम्मि पक्खि एं चंदलेह ।  
 वायाहयकेलि व कंप्पमाण  
 णिय सहियहिं घरु सोएं समाण ।  
 समसीलहिं जणमणदुहहरीहिं  
 परिपुच्छिय विणएं सहयरीहिं ।  
 विहलंचल किं हूई सहीए  
 अम्हहं कहि वहिणिए वच्छलीए ।  
 मोहेण वि सहियहिं सरलियाए  
 विरहाणलु अक्खिउ वालियाए ।

- 
६. दोल्लहरि=दोलगृह । चडीणा=चढ़ी हुई । दिट्ठ=दिखाई दो । गेयाइं=गीत ।  
 मणोज्जइं = मनोज्ञ सुंदर । धुणेवि=धुन कर । भीणदेइ=क्षीण देह ।  
 कसणम्मि पक्खि=कृष्ण पक्ष में । चंदलेह=चन्द्रलेखा । वायाहय केलि व=

जो गीयउ गायउ खेयरहिं मइं सूवउ करकंडहो तणउ ।  
तो तेण वियंभिउ महो द्वियउ पुणु चउदिसु लायउ रणरणउ ॥

( ७ )

### विवाह की स्त्रीकृति—

मइं तुज्झ सहिए पायडिय वित्ति  
जइ सक्कहि ता महो करि परित्ति ।  
विरहग्गिजालपज्जलियमाण  
महो णासहिं जाव ण सहिए पाण ।  
ता दुक्खु वहंतिए णरवरासु  
संखेवें अक्खिय वत्त तासु ।  
करकंडगेयआयणणोण  
मयणावलि पीडिय कामएण ।  
आयणणेवि बालहे तणिय वत्त  
राएण लिहाविय हरिणणेत्त ।  
जयभूसण कुलगयणम्मि चंद  
पडु अप्पिउ राएं महो णरिंद ।  
अरिदूसहमोडणमडसहाउ  
हउं तुज्झ णयरे पडु लेवि आउ ।  
पडु पेक्खवि गच्छइ मोहु जो वि  
वरु होइ णरेसर ताहे सो वि ।

मइं एहउ पिसुणिउ तुज्ज गिं एउ इत्तिउ तम्हामहो सरउ ।  
सा कमलदलच्छी ससिवयण तउ करयलु करपल्लवे धरउ ॥

( ८ )

विवाह--

तहो सुणिवि वयणु पडधरणरासु  
पडिवरिणउ राएं सयलु तासु ।  
तें सरिसा कुलणहससहरेण  
संपेसिय गियणर गिववरेण ।  
दिग्गहम्मि पसणए कयसहाय  
मयणावलि लेविणु ते वि आय ।  
किय हट्टसोइ धरि तोरणाइं  
संवद्धइं तहो करकंकराणइं ।  
णाणाविह वज्जइं वाइयाइं  
गीयाइं रसालइं गाइयाइं ।  
भावड्डइं णच्चइं णच्चियाइं  
गयतुरयहं थट्टइं खंचियाइं ।  
उग्घाडिउ मुहवड्डु विहिं जणाहं  
णं मोहपडलु तगगयमणाहं ।  
वयजलिअजलण भामरिउ सत्त  
देवाविय भट्टहिं पडिं मंत ।  
करु वालहे अपिउ णववरेण

८. संपेसिय=भेजा । हट्टसोह=हट्टसोभा । वाइयाइं=वाय । भावड्डइं=भावार्थ ।  
थट्टइं=समूह । उग्घाडिउ=उघाड़ दिया । वय जलिय\*\*\*सत्त=घो से जलती आग की

किय सवहणाइं दाहिणकरेण ।  
 भउ तारामेलउ णिविडु तेम  
 जम्मे वि ण विहडइ णेहु जेम ।  
 पहिलारउ मिलियउमणु पसत्थु  
 किउ लोयचारु जणरंजणत्थु ।  
 सुविसुद्धदिणहिं रंजियमणाहं  
 सामंतहिं कियउ विवाहु ताहं ।

घत्ता

णरणाहो हुयउ विवाहु तहिं सुर खेयर देक्खिविउल्लसिय ।  
 णियभोयहो उवरि विरत्तमणु तहोतणिय रिद्धिमणिअहिलसिय ॥

( ६ )

साध्वी रूप में मां का आगमन और आशीर्वाद—

तहिं अवसरि पोमावइ वि माय  
 णियणंदणु देक्खहुं तुरिय आय ।  
 सा दिट्ठी करकंडें णिवेण  
 पुणु पणमिय भावे णवणवेण ।  
 णियपुत्तविवाहें हरिसियाएं  
 आसीस पदिणणीतुरिउ ताएं ।  
 चिरु जीवहि णंदण पुहइणाह  
 कालिदी सुरसरि जाव बाह ।  
 वइसारिय विणएं सा णवेवि  
 दिणु अज्जु सहलु एहउ भणेवि ।

---

सात भावरें (फेरे) । देवाविय=दिलाकर । अप्पिउ=अर्पित करदी ।  
 सवहणाइं=शपथें ।

सम्माणिय वयणहिं कोमलेहिं  
 परिहाविय वत्थहिं उज्जलेहिं ।  
 आसीस देवि सा गय तुरंति  
 करकंडकित्ति णं विप्फुरंति ।  
 ता एत्तहिं जणमणजणियराउ  
 करकंड पुरउ पडिहारु आउ ।

घत्ता

करकमल णिवेसिवि सिरकमले पडिहारु पयंपइ पुट्टसरु ।  
 चंपाहिबरायहो दूउ णिव सो अच्छइ सिंहवारम्मिवरु ॥

( १० )

चंपा नरेश के दूत का संदेश—

तं सुणिवि वयणु करकंडएण  
 पडिहारु पउत्तउ तुरियएण ।  
 लइ जाहि तुरिउ सो सुहहु जेत्थु  
 चंपाहिबदूवउ आणि एत्थु ।  
 तं रायहो वयणु सुणेवि तेण  
 लहु आणिउ सो पडिहारएण ।  
 सो देक्खिवि दूवउ राणएण  
 संमाणिउ दाणइ आसणेण ।  
 संसिद्धी मेइणि सयल जासु  
 भणु कुसलु दूव चंपाहिवासु ।

६. तुरिय शीघ्र । आय=आई । परिहाविव=पहनाए ।

१०. सिंहवारम्म=सिंह द्वार पर । अणवरउ=अनवरत । विहियसेव=विहित

दूवेण भणुत तहो कुसलु राय  
 पइं जेहा अचछहिं जसु सहाय ।  
 अणवरउ णरिंदहिं विहियसेव  
 सो सुमरइ तुम्हहं देवदेव ।  
 जह जलहं ण भिण्णउ सीयलत्तु  
 तह चंपणरिंदहो तुहुं णिरुत्तु ।

घत्ता

लइ पालहि णिव करकंड तुहुं चंपाहिवरायहो केर वर ।  
 होएविणु एककइं वे वि जण अणुहुं जहु तुम्हहं भोय धर ॥

( ११ )

करकंडु का प्रत्युत्तर—

विणु केरइं लभइ णाहि मित्त  
 एह मेइणि भुजहुं हत्थमेत्त ।  
 ण वि पालहि जइ पुणु सेव तासु  
 तो ठाउ करहिं अह कहिं मिण्णसु ।  
 तं सुणिवि वयणु करकंडएण  
 तें हियवएं कोहु धरंतएण ।  
 आयंवणयण भालयले णीय  
 णं चंददिवायर सग्गि ठीय ।  
 जाजाहि दूव तउ सामि जेत्यु  
 तहुं खणु वि एककु मा वसहि एत्थु ।

सेव । सीयलत्तु= सीतलता । केर=आज्ञा ।

आयंवणयंव=आताम्र नेत्र । संखेवें=संक्षेप । भडावलेउ=आह का अहंकार ।



वें कहि चंपाहिवासु  
 हउं आयउ तुरियउ तुज्झ पासु ।  
 जइ संगरि अत्थि भडावलेउ  
 संगामु मज्झु ता तुरिउ देउ ।  
 इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु  
 सिरिधाडीवाहणु वसइ जेत्यु ।

घत्ता

तें कहियउ दंतीपुरिणिवइं सो वइं देव ण वि णवइ ।  
 संगामरंगि तुम्हेंहिं सहुं अइजुज्झइ धीरउ इउ लवइ ॥

( १२ )

चंपा नरेश की तैयारी और करकंडु का कूच—

तं सुणिवि वयणु चंपाहिराउ  
 सण्णज्झइ ता किर वद्धराउ ।  
 तावेत्तहिं दंतीपुरिणिवेण  
 कंपाविय मेइणि मंदरेण ।  
 णिण्णासिय अरियणजीवण  
 उड्डाविय दहदिसि रय रणेण ।  
 णहु छाियउ खलियउ रवि रणेण  
 लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धण ।  
 गंगापएसु संपत्तण  
 गंगाणइ दिट्ठी जंतण ।

---

१२. सण्णज्झइ=सनंद होता है । वद्धराउ=वद्धराग । उड्डाविय=उड़ाया ।  
 खलियउ=खलित हो गया । पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया । आइच्चहो=

दूवेण भणिउ तहो कुसलु राय  
 पइं जेहा अच्छहि जसु सहाय ।  
 अणवरउ एरिंदहिं विहियसेव  
 सो सुमरइ तुम्हं देवदेव ।  
 जह जलहं ए भिण्णउ सीयलत्तु  
 तह चंपणरिंदहो तुहुं णिरुत्तु ।

घत्ता

लइ पालहि णिव करकंड तुहुं चंपाहिवरायहो केर वर ।  
 होएविणु एकइं वे वि जण अणुहुंजहु तुम्हं भोय धर ॥

( ११ )

करकंडु का प्रत्युत्तर—

विणु केरइं लभइ णाहि मित्त  
 एह मेइणि भुजहुं हत्थमेत्त ।  
 ए वि पालहि जइ पुणु सेव तासु  
 तो ठाउ करहिं अह कहिं मिणासु ।  
 तं सुणिवि वयणु करकंडएण  
 तें हियवएं कोहु धरंतएण ।  
 आयंवरणयण भालयले णीय  
 एं चंददिवायर सगि ठीय ।  
 जाजाहि दूव तउ सामि जेत्यु  
 तहुं खणु वि एककु मा वसहि एत्थु ।

सेव । सीयलत्तु = शीतलता । केर = आज्ञा ।

११. आयंवरणयं = आताम्र नेत्र । संखेवें = संक्षेप । भडावलेउ = ग्राह का अहंकार ।

वें कहि चंपाद्विवासु  
 हउं आयउ तुरियउ तुज्ज पासु ।  
 जइ संगरि अत्थि भवावलेउ  
 संगसु मञ्जु ता तुरिउ देउ ।  
 इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु  
 सिरिवाडीवाइणु वसइ जेत्यु ।

यत्ता

तें कहियउ इंदीपुरिणिवइं सो वइं देव ए वि एवइ ।  
 संगानरंगि तुम्हेंहि सहुं अइजुज्जइ धीरउ इउ लवइ ॥

( १२ )

चंपा नरेश की नैयारी और करकंडु का कूच—

तं सुणिवि वयणु चंपाद्विराउ  
 सण्णज्जइ ता किर वट्ठराउ ।  
 तावेत्ताहि इंदीपुरिणिवेण  
 कंपाविच नेइणि मंदरेण ।  
 णिण्णासिय अरिदणजीवण  
 उट्ठाविय दहदिसि रय रणेण ।  
 एहु छायउ खलियउ रवि रण  
 लहु दिण्णु पयाणउ कुट्ठण ।  
 गंगापणसु संयत्तण  
 गंगाणइ दिट्ठी जंनण ।

१२. सण्णज्जइ=संतुष्ट होता है । वट्ठराउ=वट्ठराग । उट्ठाविय=उड़ाया ।  
 खलियउ=खलित हो गया । पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया । आइच्चहो=

सा सोहइ सियजल कुडिलवंति  
 णं सेयभुवंगहो महिल जंति ।  
 दूराउ वहंती अइविहाइ  
 हिमवंत गिरिंदहो कित्ति णाइं ।  
 विहिं कूलहिं लोयहिं ण्हंतएहिं  
 आइच्चहो जलु परिदितएहिं ।  
 दंभंकियउठहिं करयलेहिं  
 णइ भणइ णाइं एयहिं छलेहिं ।  
 हउं सुद्धिय गियमग्गेण जामि  
 मां रुसहि अम्महो उवरि सामि ।  
 णइ पेक्खिबि णिउ करकंडणामु  
 गउ जणणायरु गुणगणियधामु ।

घत्ता

जें संगरि सुरवरखेयरहं भउ जणियउ धणुहरमुअसरहिं ।  
 तें वेढिउ पट्टणु चउदिसिहिं गयतुरयणरिंदहिं दुद्धरहिं ॥

( १३ )

चंपा नगरी का धिराव—

तं वेढिउ जा राएण तेणु  
 ता आउलि पुरयणु हुउ खणेण ।  
 णरणहो कहिउ परेण केण  
 उवरुद्धउ परवलु सयलु जेण ।  
 हे णरवइ परवलवणहुआस

आदित्य का-सूर्य का । दंभंकिय= दूब से अंकित और उठे हुए । सुद्धिय=शुद्ध ।

१३. वेढिउ=पेर लिया । उवरुद्धउ=रोक लिया ।

चंदीयणसज्जण पूरियास ।  
 उदंडसुंड गय गुलुगुलंत  
 कुडिलाणण वरदय हिलिहिलंत ।  
 संचल्लिय रदवर घरहरंत  
 फारक्कहिं फुरियहिं फरहरंत ।  
 करवालकिरण रविकरहरंत  
 वंकुडिय कउत्तल थरहरंत ।  
 छुरिएहिं कौंत अइ विप्फुरंत  
 पवणा इव नेए' संचरंत ।  
 सीदोय मदुद्धरु अइपयडु  
 तुह उवरि पराइउ वइरिदंडु ।

घत्ता

तं सुणिचि एरिंदो मुहकमलु संजायउ रत्तप्पलसरिसु ।  
 डसियाहरु भूमंगुरणयणु कोदाणलु वडिडउ गउ हरिसु ॥

( १४ )

सैनिक प्रतिक्रियाएँ—

ताव सो उट्टिओ धाइया किंकरा  
 संगरे जे वि देवाण भीयंकरा ।  
 वाउयेया हया सज्जिया कुंजरा  
 चक्कचिक्कार संचल्लिया रदवरा ।  
 हक्क डक्कार हुंकार मेल्लंतया  
 धाविया के वि कुंताइ' गेहंतया ।  
 के वि सम्माणु सामिस्स मण्णंतया  
 पायपोमाण रायस्स जे भत्तया ।

चावहत्था पसत्था रणे दुद्धरा  
 धाविया ते णरा चारुचित्तावरा ।  
 के वि कोवेण धावंत कप्पंतया  
 के वि उग्गिण्णखग्गहिं दिप्पंतया ।  
 के वि रोमंचकंचेण संजुत्तया  
 के वि सण्णाहसंबद्धसंगत्तया ।  
 के वि संगामभूमीरसे रत्तया  
 सग्गिणी छंदमग्गेण संपत्तया ।

घत्ता

क्षपाहिउ णिग्गउ पुरवरहो हरिकरिरहवर परियरिउ ।  
 उद्दंढचांडपीवरकरहिं भग्गु केहिं ण अग्गुसरिउ ॥

( १५ )

द्वंद्व युद्ध—

ता ह्यइं तूराइं  
 भुवण्यलपूराइं ।  
 वज्जंति वज्जाइं  
 सज्जंति सेण्णाइं ।  
 आणाए घडियाए  
 परबलइं भिडियाइं ।  
 कुंताइं भज्जंति  
 कुंजरइं गज्जंति ।  
 रहसेण वग्गंति  
 करिदसणे लग्गंति ।  
 गत्ताइं तुट्ठंति  
 मुंडाइं फुट्ठंति ।

रुंढाइं धावन्ति  
 अरिथाणु पावन्ति ।  
 अन्ताइं गुप्पन्ति  
 रुद्धिरेण थिप्पन्ति ।  
 हड्डाइं मोडन्ति  
 गीवाइं तोडन्ति ॥

घत्ता

के वि भग्गा कायर जे वि णर के वि भिडिया के वि पुणु ।  
 खग्गुग्गामिय के वि भड मंडेविणु थक्का के वि रणु ॥

( १६ )

प वेटे का युद्ध—

ता रोसें चंपाहिउ णरिंदु  
 रह चडिवि पधायउ णं सुरिंदु ।  
 सो तुरिय गयउ परवलणिवासु  
 अडिभडियउ करकंडहो णिवासु ।  
 ता कलयलु वडिदुउ विहिं बलाहं  
 बाणावलिछाइयणहयलाहं ।  
 करकंडें कोहालगुण्ण  
 अइरावइ करदीहरभुण्ण ।  
 ता तुरियइं चंपणराहिवासु

सहसत्ति पमेल्लिय सत्ति तामु ।  
 रहु छिण्णित्त चिण्हद्वउ खणेण  
 पुणु सारहि पाडित्त तुरित तेण ।  
 ता खेवें चंपणराहिवेण  
 संपेसिय बाण तुरंतएण ।  
 सर पेसिय जा चंपाहिणेण  
 करकंडहो बलु भग्गउ खणेण ।

घत्ता

करकडएं पेच्छिवि बलु चलित्त मणि रोसु महंतउ विप्परित्त ।  
 जा विज्ज पइएणी खेयरइं तहे पेसणु दिण्णित्त तें तुरित ।

( १७ )

विद्याओं का प्रयोग—

ताव तेणदुद्धरेण  
 मुक्क विज्ज मच्छरेण ।  
 ता खणेण विज्ज धिट्ठ  
 धाविया तुरंत दिट्ठ ।  
 फे क्करंति हुं क्करंति  
 वाउजेय संचरंति ।  
 रक्खसी व वावरंति  
 भासुरा विखे मिलंति ।  
 कुंभिकुंभ णिहलंति  
 रहवरेण रह दलंति ।  
 संगारम्मि जे वि दिट्ठ  
 दंसणेण ताहे णट्ठ ।



के वि मुच्छमोहियाइं  
 के वि जोह जोहियाइं ।  
 के वि घायखंडियाइं  
 के वि जीव छंडियाइं ।

धत्ता

ता कुवियइं चंपणरेसरइं तुरिएण वि असिलियकरे घरिय ।  
 जा विज्ज गिलंती णरसयइं वलसत्ति खणद्धे तहे हरिय ॥

( १८ )

युद्ध की विश्वव्यापी प्रतिक्रिया—

गय विज्ज तट्ठीय  
 करकंडें दिट्ठीय ।  
 रोसं वहंतेण  
 करे धणुहु किउतेण ।  
 तहो चप्पे गुणु दिण्णु  
 तं पेक्खि जणु खिण्णु ।  
 ता गयणे गुणसेव  
 खोहं गया देव ।  
 टंकारसदे ण  
 धोरें रउदे ण ।  
 धरणियलु तडयडिउ  
 तस कुम्मु कडयडिउ  
 भुवणयलु खलमलिउ ।

गिरिपवरु टलटलिउ  
 मयरहरु भलभलिउ ।  
 धरणिंदु सलवल्लिउ  
 खगणाहु परिसरिउ  
 सुरराउ थरहरिउ ।

घत्ता

सो सद् सुणेविणुधणुगुणहो रह भग्गा णट्ठा गयपवर ।  
 मउगलियउ चंपणाराहिवहो भयभीय ण चल्लहिंकिहिंखयर ॥

( १६ )

मां का हस्तक्षेप—

सुरलोयहं छुडु हियवउ विभिणु  
 छुडु परवत्तु भयभीयउ णिसणु ।  
 संबद्धउ छुडु वइसाहथाणु  
 छुडु भग्गाए चंपणरिंदमाणु ।  
 छुडु चाउ खणद्धे सज्जियाउ  
 छुडु सेयजलें गुणु मज्जियाउ ।  
 करकडें गुणें किउ बाणु पवर  
 चंपाहिवेण ता मुक्कु अवर ।  
 हुउ बाणु णिरत्थउ सोहु जाव  
 पोमावइ संगरे पत्त ताव ।  
 सा दिट्ठीय तेण णरेसरेण  
 पुणु पणमिय दूरहोणयसिरेण ।  
 हे माए माए संगरे असज्जे

किं आइय तुहुं भडनियरमज्जे ।

सा भणइ पुत्त संवरहि चाउ

एहु धाडीवाहणु तुज्झ ताउ

घत्ता

कहि माए महासइ गूणणिलउ किमु ताउ महारउ णिउ हवइ ।

ता ताइं तुरंतइं तहो कहिउ सुणि पुत्त महाबल धरणिवइ ॥

( २० )

मिलन—

चांपाउरिरायहो घरे रमणी

हउं होंती जणवयमणदमणी ।

संजायउ जइयहुं गम्भे तुहुं

उप्पणउ तइयहुं दुक्खु महुं ।

हउं हरिविणीय ता करिवराइं

दंतीपुरि बाहिरि दुद्धराइं ।

तहिं जायउ भीममसाणि तुहुं

पइं पेक्खिवि जायउ मज्झु सुहुं ।

करकंडु णरेसरु एक्कु खणु

तं सुणिवि वयणु थिउ विमणमणु ।

णियपुत्तहो अक्खिवि चत्तभया

पुणु तुरियउ कंतहो पासेगया ।

सा दिट्ठीय चंपणरेसरेण

गंगाणइ णं रयणायरेण ।

जाणांते एह पोमावइया  
 तो वि तेण सहावे सा णमिया ।  
 अह गरुवउ जो वयभरु धरेइ  
 ते राणउ कंतहे थुइ करेइ ।

घत्ता

परिपुच्छिय चंपणराहिबइं कह छुट्टिय तुहुं तहो गयवरहो ।  
 ता कहियउ ताइ तुरंतियएं णिवगयए पमुक्की तडे सरहो ॥

( २१ )

पद्मावती धाड़ीवाहन को पूर्व कथा सुनाती है—

तहो पासे मसाणएं महो सुयउ  
 कुलमंडणु एंदणु सो हुयउ ।  
 परिपालिउ केण वि खेयराइं  
 वउ लइयउ तहिं मइं णिव भराइं ।  
 दंतीपुरिराणउ ता सुयउ  
 तहिं णयरे णराहिउ सो कियउ ।  
 सो जाणहि एवहिं तुह भिडिउ  
 तुहुं कोह पिसाएं परिणडिउ ।  
 मा मुञ्जहि छंडहि एहु गहु  
 णिव एंदणु तेरउ एहु पहु ।  
 तं वयणु सुणिवि चंपाहिबइ  
 संतुठ्ठउ तक्खणे सो हियइं ।  
 हूउं धण्णउ जसु एहउ सुयउ

२१. पज्जुण = प्रद्युम्न । दामोदरिण = कृष्ण से । गिण्हहि = मानो ग्रहण करो ।

जो संगरे धीरउ दिढभुयउ ।  
परिछंडिवि धणुहरु गालियसरु  
करकंडपासु गउ णिवपवरु ।

घत्ता

पुणु जाइवि धाडीवाइणइं आलिं गिउ खंदणु सो खणिण ।  
जह संगरे जाइवि तेयणिहि पञ्जुणु कुमुरु दामोयरिण ॥

( २२ )

क्षमा याचना उपसंहार—

करकंडइ वुत्तउ णियजणु  
पइं सरिसउ जं मइं क्रियउ रणु ।  
मा गिण्हहि मेरउ देव छलु  
तं खमहि भडारा महो सयलु ।  
तं सुणिवि वयणु चंपाहिवइं  
उल्लसियउ तक्खणे सो हियइं ।  
गउ लेविणु णयरहो सहुं णिवेहिं  
पइसारिउ णाणाउच्छवेहिं ।  
सा णयरी करकंडें सहेइ  
अमराउरि लज्जा तहो वहेइ ।  
णार रयणइं लेविणु साणुराय  
णिवमंदिरे वद्धावणहुं आय ।  
ता दुद्धरायहं जो घरट्टु  
करकंडहो वद्धउ रायपट्टु ।

२२. खमहि=क्षमा करो । अमराउरि=अमरपुरी । वद्धावणहुं=वधाई  
हियगंठि=हृदय की गांठ ।

पुणु अप्पणु राएं तक्खणेण ।  
 तणु मंडिउ तवसिरिभूसणेण  
 कम्मट्ठठिणिगंठवणसारु ।  
 तउ चरिवि सुदुद्धरु काममारु  
 तणु छंडिवि खंडिवि हिययगंठि  
 सो लग्गउ सिववहुतणएं कंठि ।

घत्ता

गउ धाडीवाहरु सिवणिलउ कणायामरवणउ गुणहं घरु ।  
 करकंडु करंतउ रज्जु पुरि सो अच्छइ माणिणिहिययहरु ॥



## कवि धाहिल

‘पूर्व जन्म की घनश्री ही वर्तमान जन्म में हस्तिनापुर के सार्थवाह अशोकदत्त की पुत्री पद्मश्री है। साकेतपुर के कुमार समुद्रदत्त से उसका विवाह होता है। विवाह के बाद, वह कुछ दिन, ससुराल में ही रहता है। फिर मां की बीमारी को खबर पाकर अपने घर जाता है। यहां पद्मश्री को भूल जाता है। वह वियोग में व्याकुल हो उठती है। एक सांझ, कुमार को वियोग में दुखी ‘चकवी’ को देखकर अपनी पत्नी की याद आती है; वह ससुराल पहुंच जाता है। शाम को पद्मश्री सज्जज कर प्रिय से मिलने के लिये जाती है। ठीक इसी समय, पूर्व जन्म के अंतराय से एक व्यंतर देव चिल्ला उठता है, ‘पद्मश्री तूने मुझे संकेत दिया था यह दूसरा कौन है।’ यह सुनना था कि कुमार संदेह, क्रोध और धृणा से जल उठता है। पद्मश्री को मिलता है—भर्त्सना, अपमान के घूंट और परित्यक्त जीवन। वह शेष जीवन धार्मिक आचरण में बिताने के लिये बाध्य है।

‘उज्जोइड भुयणु असेसु इ  
गरुय-राय-रंजिय-हियउ ।  
अत्थवण-सिहरि रवि संठियउ  
संभा-वहु-उक्कंठियउ ॥

( १ )

संध्या का चित्रण पद्मश्री का वासगृह में प्रवेश—

अत्थमिउ दिवायरु संभ जाय  
लिय कणय-घडिय नं भुयण-भाय ।  
कमलिणि कमलुन्निय-महुयरेहि  
अंसुएंहि रुएइ सकज्जलेहि ।

सोआउरु मणि चक्काउ होइ  
 कउ मित्त-विओउ न दुक्खु देइ ।  
 अंधारिय सयल-वि दिसि विहाइ  
 किलिकिलिय-भूय-रक्खस पिसाय ॥  
 तमु पसरिउ किंपि न जणु विहाइ  
 जगु गव्वं वासि निक्खित्तु नाइ ॥  
 वोहंत कुमुय-वणु उडउ चंदु  
 कंदप्प-महोसहि-रुंद-कंदु ॥  
 वणि जेम मइंदहु हत्थि-जूहु  
 नासेइ मियंकह तिम्व तमोहु ।  
 हिरणंक-किरण-विप्फुरिउ भाइ  
 गयणंगणु धवलिउ नं छुहाइ ॥  
 निसि-पढम-पहरि उद्दाम-कामि  
 वासहरि कुमारु मणभिरामि ॥  
 महमहिय-वहल-वरधूय-गंधि  
 पंचन्न-कुसुममाला-सुगंधि ॥  
 रुणुरुणिय महुर-रवि भमर-लीवि  
 पञ्जालिय-मणि-मंगल-पईवि ॥  
 पउमसिरि सहिउ पल्लंकि ठाइ  
 सहियणु आणंदिउ घरहु जाइ ॥

घत्ता

नाणाविह-करण-विसेसेंहि  
 सुर सोक्खइ माणेउं कुमरु ।

१. अत्यवरणसिहरि=अस्ताचल के शिखर पर । संभ=संख्या । जाय=हो गई । संख्या का चित्रण ।



आलिङ्गित कंत पसुत्तउ  
नाइ स-विग्गहु पंचसरु ॥

( २ )

प्रभात का चित्रण—

परिगलिय रयणि उग्गमिउ भाणु  
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण-भाणु ॥  
विच्छाय-कंति ससि अत्थमेइ  
सकलंकह किं थिरु उदउ होइ ॥  
सूरह भएण नासेवि निहीणु  
गिरि-कंदरि विविर तमोहु लीणु ॥  
रेहहिं कमलायर पयड-कोस  
विलसंति मित्त किर विगय-दोस ॥  
मउलंति कुसुय महुर मुयंति  
थिर नेह मलिण किं कह वि हुंति ।  
मुणिवर करंति सज्झाउ भाणु  
कुरलंति हंस निम्मलु विहाण ॥  
नवकारु पढंति थुणंति सिद्ध  
पउमसिार कुमारि सहुं विउद्ध ॥  
गोसग्ग कज्जु सयलु इ करेवि  
गुरु-चलण-कमलु पणमंति वे वि ॥  
गउ सत्थवाहु निय-पुरि स-बंधु  
ठिउ कुमरु-तहि वरवसुहगंधु ॥

२. प्रभात का चित्रण । गो सग्ग-कज्जु=सवेरे के सब काम । वेवि=दोनों ।  
सोहग्गउ=सौभाग्य । लावन्नउ=लावण्य । विम्हिय मणेहि=विस्मित मन से ।

गाढाणराय पउमसिरि तासु  
छाया व न मेल्लइ खणु वि पासु ॥  
हरि-हियइ जेम्ब निवसेइ लच्छि  
तिह सा वि कुमारह दीहरच्छि ॥  
पुव्वज्जिय जण-मण-हरण-दक्खु  
माणंति जहिच्छइ विसय-सोक्खु ॥

घत्ता

सोहग्गउ लावन्नउं तं  
पेक्खेविण विम्भिय-मणोहि ।  
सलहिज्जइ अणुदिणु लोएहि  
हरिसुण्णुल्लिय-लोयणोहि ।

( ३ )

ससुराल में पद्मश्री और समुद्रदत्त की दिनचर्या—

गुरु-विविह-विणोइं दियह जंति  
अवरोप्परु राउसवइं करंति ॥  
कइय वि निय-अंग-पसाहणेण  
कइय वि गुरु-चलणाराहणेण ॥  
कइय वि जिण्णिंद-गुण-कित्तणेण  
कइय वि साहूण नमंसणेण ॥  
कइय वि जिणधम्म-कहाणएहि  
कइय वि रमंति उज्जाणएहि ॥

३. पसाहणेण=प्रसाधन से । पेच्छणय=पलोदरणेण=प्रेक्षण=नाटक देखकर ।  
साहम्मिय-भोयणेण=साधर्मि भोजन से । पन्होत्तराइं=प्रश्नोत्तर । बहुभेयइं=

कइय वि करंति जल-केलि रम्मु  
 कइय वि लिहंति वर-चित्त-कम्मु ॥  
 कइय वि पेच्छग्य-पल्लोयणेण  
 कइय वि साहम्मिय-भोयणेण ॥  
 कइय वि पढन्ति पन्होत्तराइं  
 बहु भेयइं गूढ-घणक्खराइं ॥  
 भुजंतइ मणहर विसय लट्ठ  
 संवच्छर वोलिय ताम अट्ठ ॥  
 अह अन्न-दियहि नामिं वराहु  
 साएयहि अविउ लेहवाहु ॥  
 तिं धित्तु लेहु वायइ कुमारु  
 तहिं लेहि लिह्विउ किर एउ सारु ॥  
 “लहु एहिं कुमार समुदत्त  
 तुहु विरहि विसंदुल जणणि पुत्त ॥  
 गुरु-सोय-सेल्ल-निट्ठिभज्जमाण  
 कंठ-ट्ठिय दुक्खि धरइपाण ॥

वत्ता

रच्छामुहि गोहि घरंगणि  
 खणि रुयंति न वि थक्कइ ।  
 सरि नलिणि जेम जल-वज्जिय  
 रत्ति-दियहु परिसुक्कइ ॥”

सां की बीमारी का लेखपत्र और समुद्रदत्त का ग्रस्थान, पद्मश्री की वियोग वेदना—

पउमसिरिहि साह्विय लेह-वत्त  
 "महु दुक्खि अच्छइ जणणि तत्त ॥  
 ता जामि कंते पेक्खेमि ताउ  
 अवणेमि जणेरिहि हियय-सोउ ॥"  
 सा पभणइ अंसु-जलोल्ल-नेत्त  
 "हउं जामि तइं सहुं अज्जउत्त ॥"  
 "लगंगति दियह पिय दुग्गु देसु  
 पिउ मंदिरि अच्छहि तुरियउ एसु ॥"  
 गउ दिट्ठ जणणि पणमिउ असोउ  
 आलिंगिण विहिं तिं पणट्ठु सोउ ॥  
 आणंदिय-बंधव-सयण-मित्तु  
 अच्छइ कुमारु कुइ कालु तेत्थु ।  
 पउमसिरि विरह-सिद्धि-सोसियणि  
 निरु भूरइ रयणिहि जिह रहंगि ॥  
 नेमित्तिय पुच्छइ भणइ साहु  
 कइयहुं आवेसइ मज्झु नाहु ॥  
 वलि-महु-भक्खण महुर-वाय  
 लहु उरिउरेहि काय ॥  
 आवेइ कंतु जइ मज्झु अज्जु  
 दहि-सालि भत्तु तो देमि तुज्झु ॥  
 आवेउ कंतु लोयण-सल्लणु  
 तुहु देमि जक्ख लड्डुयइं हूणु ॥

आगेर तुरिउ नहु जीवएसु  
ओयाइउ नुन्हं वि देसु ॥

यत्ता

सयगंसु-मनिल गंडयन-थन  
दिणि दिणि न्तिन्तु बाल किह ।  
लावन्त-दीन-परियजिनय  
किन्ह-यक्कि ससिरेइ जिह ॥

( ५ )

कुमार का चक्री को देखकर पद्मश्री का याद आना और मसुगल के लिए कूच करना—

अह एककिहिं दियहिं समुहदल  
निसि समइ सरोवर नेण पत्तु ॥  
पिय-रदिय दिट्ठ ति चक्कवाइ  
कंदंत कलुणु दुक्खिय वराइ ॥  
उन्नेइ मांम जल-मज्झि देवि  
तीरहिं ठिय पंतउ पुणु धुणेवि ॥  
पंकय-वणु लोलइ गयणि टाइ  
तड-तसुरि लगगइ दिसिहिं वाइ ॥  
“चक्काय-वरणि सरि एह जेम्भ  
विरहाउर मल्ल वि दइय तेम्भ ॥  
जिह राय-कीरि पंजरि निरुद्ध  
अच्छइ महु मणु नियन्त सुद्ध ॥”  
उक्कंठ-विसंहुल भट्ट-झाउ  
विरहानल-सोसिय नयवि जाउ ॥

गुरुयणैण वुत्तु स "सहाव-सच्छ  
निय कंत लएविणु आउवच्छ ॥"

आरुहु तुरंगि समुददत्त  
हत्थिणउरि सहुं सत्थेण पत्तु ॥  
पमुइय-मण सो अवरन्ह-कालि  
पइसरइ संख-मंदिरि विसालि ॥  
आवद्ध वेणि  
सिय-दसण-सेणि ॥  
कर-गलिय-वल्लय  
लवंत-अलय ॥  
मल-मइल-वेस  
लीहावसेस ॥  
इय-गुण-विसिद्ध  
पउमसिरि दिट्ठ ॥

घत्ता

पेक्खेवि कुमरु तहि वालहि  
नट्ठु खणद्धि सोगु किह ॥  
दुव्विसह लोय-संतावणु  
कय पुन्तह दालिहु जिह ॥

( ६ )

मिलन की पूर्व तैयारी और अन्तराय—

न्हाविय सुयंध-न्हाणिय-जलेण  
भुंजिउ विलित्तु हरियंदणेण ॥  
तंओलु दिन्नु किय उचिय-वित्ति

परिपुच्छिय कुसलाइय-पउत्ति ॥  
 एत्थंतरि मउलिउ गुरु-पयाउ  
 वारुणि-पसंग-जणियाणुराउ ॥  
 कहवि य अत्थवणु न होइ लोइ  
 नं अब्भमुक्कुर वि अत्थवेइ ॥  
 पउमसिरिइ सज्जिय वास-भवणु  
 विणिवेसिउ कोमल-तूलि सयणु ॥  
 निम्मल पईउ निहयंधारु  
 सेज्जहि ठिउ अच्छइ तहिं कुमार ॥  
 जं वद्धउं अग्नहि जम्मि आसि  
 धणसिरिएं कम्मु बहु-दुक्ख-रासि ॥  
 तं उदयगउ भोगंतराउ  
 केलिप्पिउ आइउ तहिं पिसाउ ॥  
 पउमसिरि निययि आयंत गेहु  
 चितवि "विहवयउं विहि मि नेहु"  
 सो अन्न-मि न-यंनरिउ भणइ  
 फुहु वयणेंदिं तिइ मं कुमार सुणइ ॥  
 "अत्थमिह सूरि पमरिइ तमोहि  
 आवेज्जसु अणुदिगु पन्थु गेहि ॥  
 पउमसिरि मज्झु संकउ देइ  
 आगिउ पन्थु पदं अन्नु कोइ ॥"  
 "को योत्तइ पट्ट अणुज्जु वट्ट"  
 ज्ञेयइ कुमार ता क्कंति नट्ट ॥

## घत्ता

मायाविउ दुट्ठु पिसाउ  
 सुट्ठु कुमरि अवलोइयउ ।  
 पवणाहउ जेग्व पईवउ  
 भक्ति न नज्जइ कहि ठियउ ॥

( ७ )

कुमार द्वारा नारी जाति की निन्दा—

चित्तइ कुमार "दुस्सील एह  
 .....कलत्तु महु भिन्न-नेह ॥  
 अइविम्हउ निम्मल-कुल-पसूय  
 दुच्चारिणी कह हुय संख-धूय ॥  
 उम्मग-लग हुय दुट्ठ-सील  
 उहाम-वियम्भिय-कामलील ॥  
 सच्छंद अणज्ज निराणुकंप  
 अन्नाणिय मोहिय विगय-संक ॥  
 न गणइ माइ-वप्पु स-सहोयर  
 न गणइ इह-परलोय-भयावणु ॥  
 न गणइ मरणु लज्ज भउ मेल्लइ  
 करइ अकज्जइ ढढसु खेल्लइ ॥  
 कवडु करेवि कंतु मारावइ

दूसरी दीवाल के अन्तर से । आवेज्जसु=आयेगा । अणज्ज=अनायास । तट्ठु=...  
 नष्ट हो गया । पिसाउ=पिचाश ।

७. अइ-विम्हउ=अत्यन्त विस्मित । संख-धूय=संख की बेटी । उम्मग-लग=खोटे  
 मार्ग में लग गई । सच्छंद=स्वच्छंद । अन्नाविय=अज्ञानी । भयावण=



खइ अन्तु पुणु सो जि ण भावइ ॥  
 पलविकय ण्ह नारि वह-भंगेहिं  
 चंदण-लय जिह भूत्त भुयंगेहिं ॥  
 छिन्तिवि नक्कु वन्न-सहुं वालहि  
 दंसमि अज्जु कयंतु दुसोलीहि ॥  
 तोडमि कमलु जेम्ब सिरु दुट्ठहिं  
 फलउ अणंग-संगु पाविट्ठहिं ॥

घत्ता

चित्तइ एउ कुमारु  
 कोवाणल-जालिय-मणउ ।  
 "परिहारु डंडु खल-नारिहिं"  
 सुमरिय नीड विक्खण्ह ॥

( = )

पद्मश्री का शयनकक्ष में प्रवेश, प्रताड़ना और अपमान—

आइय पउमसिरि अलंकरेवि  
 करि कमलु पउर तंवोलु लेवि ॥  
 पसरंत-वहल-मुहवास-गंध  
 उब्भिन्न-निविड-रोमंच-बंध ॥  
 उब्भड-भिउडि-भंग-भीसावणु  
 कुविउ कयंतु नाइ दुहंसणु ॥  
 कोय-फरंत-नासु डसियाहरु

भयानक । दहदसु खोल्लइ=आग से खेलता है । पलविकय=प्रलयार्क ।  
 ८. अलंकरेवि=अलंकार करके । पउर=प्रवर । दुहंसणु=दुर्दृशनीय । डसियाउरु=

कुरुल-दिट्ठि नं पयडु सणिच्छर ॥  
 संकिय वण-लय जिह करि-रायहु  
 संकिय मंजरि जेम्ब दुवायहु ॥  
 संकिय कमलिणि जेम्ब मियंकहु  
 संकिय कुलवहु जेम्ब कलंकहु ॥  
 संकिय गरुडह जेम्ब भुयंगी  
 संकिय वग्घह जेम्ब कुरंगी ॥  
 संकिय सेल-मुत्ति जह वज्जह  
 संकिय मुणिवइ जेम्ब अकज्जह ॥  
 संकिय जिह सइ असइ-पसंगह  
 संकिय जिह चक्काइ वियालह ॥  
 संकिय रायहंसि जिह जलयह  
 संकिय जेम्ब वसुंधरि पणयह ॥

धत्ता

जिम्ब करिणि विम्भि आसंकिय  
 खर-णहरह पंचाणणहु ।  
 तह भीसणु रूड निण विणु  
 वाल चमक्किय-चित्त तहु ॥

---

दशिताघर । कुरुल-दिट्ठि=कूर दृष्टि । वणलव=वनलता । सालूरि=मेंढकी  
 चक्काइ=चक्रवाह । जलय=जलदह से । विडालह=विठाल से । विम्भि=  
 विन्ध्याचल ।

आसा इव दीहउ दिसउ होंति ॥  
 उगमइ अरगु संताउ नाइ  
 रविवुद्धि जेम्ब निसि खयहु जाइ ॥

घत्ता

हरिसो इव निग्गउ  
 कुमरु संदेसहु पट्ठियउ ।  
 दोहग्गु जेम्ब वर-वात्तहि  
 उयत्ति महीयति संठियउ ॥

( १० )

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

“दुव्वयण-सल्लु मणि पक्खिवेवि  
 कलुणं रुयंति मइं परिहरेवि ।  
 पिउ गोहि गयउ गलियाणुराउ  
 मइं काइं ह्यासइ कियउ पाउ ॥  
 आणेसि नाह तिं धरियपाण  
 कइया वि न खंडिय तुम्ह आण ॥  
 तुहुं सामिय केण इ अलिउ अज्जु  
 संभालिउ जिह मइं किउ अकज्जु ॥  
 हउं सुक्क विरह-संताव-तत्त  
 कणवीर-माल जिह न वि विरत्त ॥  
 दुव्वाइय मंजरि जिह मिलाय  
 कपि-वरत्तणु व्व उक्खय विसाण ॥  
 उप्पाडिय-फणि-मणि जिह भुयंगि

विच्छाया दीण भय-वेविरंगि ॥"  
 वासहरह निग्गइ सीलवंति  
 वत्तं चलेण नयणइ' लुहति ॥  
 चित्तंतु एहु गरुणइ सिट्ठु  
 जोयाविउ कुमरु न कहिं विं दिट्ठु ॥  
 अइभीम-सोय-सायरि निहित्त  
 दोहग्ग-सल्ल-सल्लिय-विचित्त ॥  
 वज्जिय विस-मंजरि जइ भमरेंहि  
 वज्जिय सर-दिट्ठि जइ तिमरेंहि ॥  
 वज्जिय सुयण-गोटिठ जइ पिसुणेंहि  
 वज्जिय सीह दिट्ठि जइ हरिणेंहि ॥

धत्ता

तिह सयल-सोक्ख-परिवज्जिय  
 निप्फल इव तारुन्न-सिरि ॥  
 जिणु दिव्व दिट्ठि मणि भायइं  
 कंति पउत्थइ पउयसिरि ॥

## शुद्धि पत्र

पृष्ठ	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
२२ शीर्षक	सपज-अवस्था	सहज-अवस्था
२५-२६	सङ्	साङ्
३६/१२	वडमज्झइ	वडमज्झहं
३१/१०	नित्थ	तित्थे
३१/११	तह	तहि
३१/६ टिप्पणी	पढ़के से	पढ़ने से
३८/२६	वसत यालु	वसंत भालु
३६/६	तेवंडुड	ते वड्डुड
४२/५	सुमहि	सुमरि
४६/२५	उटव्भइ	उट्ठव्भइ
४७/६	जेल-आइम्ब	जले प्राइम्ब
४८/१८	देसुच्चाउगु	देसुच्चाइगु
४६/३३	एहे	एह
४६/३५	आवही	आवहि
४६/३५	पमाणियड	पमावियइ
५०/४५	गोड़ी	गोरड़ी
५०/३७ टि०	जीवार्ग	जीवार्गल
५१/४७	अप	अह
५१/४८	मथु	मगु
५१/५०	लज्जिज्जइ	लज्जिजइ
५१/५५	पवसंनि	पवसंति
	पे वसंतेन	पवसंतेन
५२/६४	अणुणोइ	अणुणोइ
५२/६६	एड	एउ
५३/५	सिरा	सिरू
५३/६	निभि	निभिच्च
	मंतडऊ	मंतडउ

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
५४/६	विवन	विघन
५५/४	रोमंयणवस	रोमंथणवस
५६/१	सिलाय	सिलायल
५६/२ टि०	पामय-घन	पापय घन
५७/२	कि	किउ
५८/१४, १५ प०	सावडड	सावडइ
	वघड	घडइ
६३/टि०	आथाली	आसाली
६४/७	विसं हण्पिणु	विह्सेण्पिणु
६७/टि०	आवा	आया
६६/१४	चडु	चहु
७१/१ प०	रिट्ठगेभि	रिट्ठगेभि
७५/५	मरेणु	मरणु
	जिल्लोल्लिय	जलोल्लिय
७६/६	घुडु	छुडु
७७/६	मुि	मुहि
८०/१०	डयरि	उयरि
८१/११	ओहु	एहु
८२/१२	सयलिघि	सयलिघि
८३/१३	वज्जारिवि	वज्जारिवि
८६/भूमिका	पुत्रियाँ थीं	पत्नियाँ थीं
९१/प० १	सरनर	सुरणर
९२/२	पणारवि	पुणारवि
९३/६	पविरत्ते	पविरल
९७/१२	यवलु	भुयवलु
१००/१४	भयवलिहि	भुयवलिहि
१०१/१५	मरुद्धयति	मरुद्धय
१०१/१५	गिच्छिधूलि	तिगिच्छधूलि
१०२/१५	कुल्लं	फुल्लं
१०२/टि०	भुलम्म	भल्लक
१०३/टि०	सुखंघुत्ति	सुरतिघुत्ति
१०७/१६	डव्वरिउ	उव्वरिउ

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१११/टि०	शीघ	शीघ्र
११३/४	विगप्पइ	वियप्पइ
११८/टि०	स्पैर्य	स्थैर्य
११९/६	णंदवु	णंदण
११९/७	वंसख	वैस रव
११०/श्री०	सकटा	शकट
१२२/प० ५	देतिया	दंतिया
१२५/१०	णद	णंद
१२५/१२	उवक्खउ	अवक्खउ
१३३/१६	कृष्ण का	कृष्ण की
१३८/२	आसंधिवि	आसंधिवि
१४४/	हक्कारिव	हक्कारिवि
१४४/	न	६
१४४/श्री	वप्रिय पुत्रों	वरिणक् पुत्रों
१४६/टि०	पिथुनता	पिसुनता
१४८/११	अयहेरि	अवहेरि
१५१/१४	भवाल	भुवाल
	हप्पउ	हत्थउ
१५३/	लज्जिम	लज्जिय

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१११/टि०	शीघ	शीघ्र
११३/४	विगप्पइ	वियप्पइ
११८/टि०	स्पैर्यं	स्थैर्यं
११९/६	एंदवु	एंदरण
११९/७	वंसख	वैस रव
११०/श्री०	सकटा	शकट
१२२/प० ५	देतिया	दंतिया
१२५/१०	एद	एंद
१२५/१२	उवखउ	अवखउ
१३३/१६	कृण का	कृण को
१३८/२	आसंधिवि	आसंधिवि
१४४/	हक्कारिव	हक्कारिवि
१४४/	न	६
१४४/श्री	वप्रिय पुत्रों	वणिक् पुत्रों
१४६/टि०	पिथुनता	पिसुनता
१४८/११	अयहेरि	अवहेरि
१५१/१४	भवाल	भुवाल
	हप्पउ	हत्थउ
१५३/	लज्जिम	लज्जिय